बहुमाध्यमी परियोजना

आत्म-बोध एवं व्यावसायिक चेतना की ओर

विद्यालय में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर
विकासात्मक एवं व्यावसायिक निर्देशन के लिए

निर्मला गुप्ता

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

दिसम्बर 1995
पौष 1917
P. D. 5T – OP

प्रकाशन सहयोग

यू. प्रभाकर राव *अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग*

आर. एस. सक्सेना *प्रभारी मुख्य सम्पादक*   प्रमोद रावत *सहायक उत्पादन अधिकारी*

ओम प्रकाश *संपादन सहायक*   अतुल कुमार सक्सेना *उत्पादन सहायक*

चित्र : तापसी घोषाल

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	चितलापक्कम, क्रोमपेट	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	**मद्रास 600064**	**अहमदाबाद 380014**	**24 परगना 743179**

रू. : 33.50

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन कम्पोज़र्स, 92-बी, गली नं. 4, कृष्णा नगर, सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली-110029 द्वारा लेज़र कम्पोज होकर न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, नई दिल्ली-110055 द्वारा मुद्रित।

आमुख

शिक्षा मानव के अधिकतम विकास का मुख्य साधन है। शिक्षा के माध्यम से हमारा ध्येय बच्चों में न केवल पढ़ाई-लिखाई संबंधी वरन उन सभी क्षमताओं व कौशलों का विकास करना है जो उन्हें एक उत्पादी कार्यकर्ता, एक उत्तरदायी नागरिक व एक प्रभावकारी व्यक्ति बना सकें। आज के इस जटिल समस्याओं भरे वातावरण में यह और भी आवश्यक हो गया है कि व्यक्ति अपनी विभिन्न आंतरिक, व्यक्तिगत समस्याओं और बाह्य वातावरण की जरूरतों में तालमेल बैठाकर एक संतुलित जीवन बिताने योग्य बन सके। इन लक्ष्यों को पूरा करना तभी संभव है जबकि विद्यालय के पाठ्यक्रम में पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ आंतरिक, सामाजिक व व्यावसायिक विकास संबंधी तत्वों को भी सम्मिलित किया जाए। साथ ही प्रारंभिक विकास के स्तर से ही बच्चों की योग्यताओं व गुणों को पहचानने, विकसित करने तथा उनमें उपयुक्त कार्यप्रवृत्तियों एवं कार्यकौशलों की नींव डाली जाए। ऐसा पाठ्यक्रम ही विद्यार्थियों को स्वयं तथा दूसरों को समझ पाने की क्षमता प्रदान कर सकता है। यह पुस्तक प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर विद्यालयीं पाठ्यचर्या में वैयक्तिक, सामाजिक व व्यावसायिक विकास संबंधी सामग्री की आवश्यकता को पूरा करने की दिशा में एक प्रयत्न है। साथ ही प्राथमिक शिक्षा को रुचिकर, अर्थपूर्ण व वास्तविक रूप देने के लिए दिए गए सुझाव शिक्षा के सार्वजनीकरण में भी सहायक हो सकेंगे।

बच्चों की व्यक्तित्व संबंधी विशेषताओं को समझने व उनके विकास में शिक्षक की विशेष भूमिका होती है। इस पुस्तक में दी गई पाठ्यसामग्री के आधार पर शिक्षक यह जान सकेंगे कि किस प्रकार वे विद्यार्थियों की योग्यताओं व रुचियों के विकास में सहायक हो सकते हैं। साथ ही उन्हें कार्यजगत से अवगत कराकर उनमें व्यावसायिक चेतना ला सकते हैं। वास्तव में शिक्षा का ध्येय भी तभी पूरा होगा जबकि शिक्षक विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनके वैयक्तिक, सामाजिक व व्यावसायिक विकास की भी जिम्मेदारी उठाएँ।

विद्यालयों में विकास और जीवन-वृत्ति से संबंधित मार्गदर्शन पर एक बहुमाध्यमी पैकेज बनाने वाली परियोजना राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा चलाई जा रही है। परिषद् में यह काम शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग द्वारा किया जा रहा है। इसके अंतर्गत सभी उपलब्ध माध्यमों जैसे टी.वी., फिल्म, रेडियो व छपी सामग्री की सहायता से शिक्षकों की प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयत्न किया गया है ताकि उन लाखों औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षकों, अभिभावकों तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों तक पहुँचा जा सके जिन पर प्रारंभिक वर्षों में मानव-विकास की जिम्मेदारी होती

है। छपी सामग्री के माध्यम के अंतर्गत बनाई गई यह पुस्तक शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग की प्रवाचक डा. श्रीमती निर्मला गुप्ता के अथक प्रयास का फल है जो कि प्रशंसनीय है। साथ ही मैं इस विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर चौधुरी हेमकांत मिश्र तथा परियोजना के अन्य सदस्यों प्रो. कुलदीप कुमार, श्रीमती आशा भटनागर, श्रीमती सुषमा गुलाटी एवं श्रीमती स्वदेश मोहन की भी सराहना करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक पर अपने सुझाव दिए।

मैं आशा करता हूँ कि शिक्षक तथा अभिभावक आदि इस पुस्तक में दी गई जानकारी को अपनी शिक्षण-विधि, पठनसामग्री तथा व्यवहार में अपनाकर विद्यार्थियां में आत्मचेतना तथा व्यावसायिक तत्परता लाने के लिए आवश्यक निर्देशन दे पाएँगे।

अशोक कुमार शर्मा
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

भूमिका

हममें से हर एक के मन में प्रायः ऐसे विचार अवश्य उठते हैं कि आखिर लोग कोई न कोई काम-धंधा या व्यवसाय क्यों करते हैं। क्या कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यवसाय को अपना सकता है? जीवन में व्यवसाय का क्या महत्व है? कुछ व्यक्ति अपने व्यवसाय से संतुष्ट और कुछ असंतुष्ट क्यों दिखाई देते हैं? सही व्यावसायिक निर्णय लेने के लिए बच्चों को विद्यालय शिक्षा के स्तर से ही कैसे तैयार किया जाय? क्या प्रारंभिक स्तर पर भी इस प्रकार की जागरूकता लानी आवश्यक है? आदि। इस पुस्तक में इन्हीं विषयों से संबंधित कुछ प्रारंभिक जानकारी दी गई है।

व्यक्ति के विकास एवं जीवन-शैली के निर्धारण में व्यवसाय-चयन संबंधी निर्णय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जीवन के हर मोड़ पर विद्यार्थी सही निर्णय तभी ले सकता है जब वह अपने आप को अच्छी तरह समझे अर्थात उसकी क्षमताएँ क्या हैं और उसकी कमियाँ क्या हैं। उसे कैसा काम रुचिकर लगता है? आदि। इस तरह सही आत्म-विश्लेषण एवं स्वयं मूल्यांकन के आधार पर तथा अपने आसपास के वातावरण व परिस्थितियों को समझकर ही वह अपने लिए सही दिशा चुन सकता है। विशेषकर प्रारंभिक वर्षों में योग्यताओं व रुचियों को पहचानने व विकसित करने के अवसर, इस स्तर पर बनी कार्यप्रवृत्तियाँ, कार्यमूल्य व कार्यकौशल आदि विद्यार्थी को न केवल व्यवसाय संबंधी अपितु जीवन के हर क्षेत्र में निर्णय लेने, समस्याओं का समाधान करने व सामंजस्य बना पाने की क्षमता प्रदान करते हैं।

संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए तथा जीवन में सही निर्णय ले पाने के लिए हमने शिक्षकों का ध्यान विद्यार्थियों में आत्मजागरूकता लाने की ओर आकर्षित किया है। विद्यार्थियों में आत्मविकास एवं व्यावसायिक तत्परता लाने में विद्यालय एवं शिक्षक की क्या भूमिका हो सकती है, इसी संदर्भ में इस पुस्तक में आत्म-अध्ययन तथा व्यावसायिक विकास संबंधी विषयों पर चर्चा की गई है।

इस पुस्तक की विषय-सामग्री को बहुत ही सरल भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ताकि शिक्षकों के साथ-साथ यह माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों के स्वाध्याय में भी उपयोगी सिद्ध हो सके। प्रत्येक लेख में अध्यापकों तथा विद्यार्थियों के "स्व-चिन्तन" के लिए, कहीं-कहीं कुछ पंक्तियाँ "जरा सोचिए" शीर्षक के अंतर्गत दी गई हैं जिससे पाठक लेख में दी गई सामग्री के दैनिक जीवन में उपयोग के बारे में विचार करें तथा लेख के विभिन्न अंशों का "स्वयं" तथा "वातावरण" से संबंध स्थापित कर पायें।

प्रत्येक अध्याय के अंत में अभ्यास के लिए कुछ प्रश्न भी दिए गए हैं जिन्हें शिक्षक बच्चों को कक्षा-कार्य अथवा गृह-कार्य के साथ करने के लिए दे सकते हैं। इस तरह से प्राप्त

हुए प्रश्नों के उत्तरों से कई प्रकार से लाभ उठाया जा सकता है। छोटे समूह में अपने साथियों के साथ इस सूचना का आदान-प्रदान करके बच्चे अपने तथा औरों के बारे में अपनी जानकारी को बढ़ा सकते हैं। सही एवं रोचक उत्तर कक्षा में पढ़कर भी सुनाये जा सकते हैं और इनका प्रयोग कक्षा में विचार-विमर्श तथा अन्य किसी कार्यक्रम या गोष्ठी के आयोजन के लिए भी किया जा सकता है। इससे अध्यापक न केवल बच्चों में अपने आप को तथा आसपास के वातावरण को जानने के लिए उत्सुकता और जागृति उत्पन्न करने में सहायक होंगे वरन् उन्हें इससे अपनी कक्षा के छात्रों को अच्छी तरह जानने तथा उनकी व्यक्तित्व-विशेषताओं को समझने में भी सहायता मिलेगी।

व्यावसायिक जगत से संबंधित जानकारी बच्चों को संबद्ध पाठ्यविषयों को पढ़ाते समय, दैनिक क्रियाकलापों में तथा बातचीत के माध्यम से दी जा सकती है जिससे बच्चों में व्यावसायिक चेतना जगाने का उद्देश्य पूरा हो सकेगा।

कहीं-कहीं भावों एवं विचारों को आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने के लिए तथा उनके स्पष्टीकरण के लिए चित्र भी दिए गए हैं। लेख से संबंधित चर्चा करते समय शिक्षक इन चित्रों को बच्चों को दिखा भी सकते हैं। अच्छा हो कि शिक्षक इस पुस्तक की सामग्री व चित्रों के आधार पर विद्यालय में व्यवसाय संबंधी चार्ट व पोस्टर बनवायें।

आशा है, शिक्षकगण इस जानकारी को अपने शिक्षण में अपनाकर इसका लाभ विद्यार्थियों तक पहुँचा सकेंगे।

निर्मला गुप्ता
रीडर

अनुक्रम

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

1

कुछ प्रश्न

- व्यक्ति कोई न कोई काम क्यों करते हैं?
- काम द्वारा किन-किन आवश्यकताओं की पूर्ति होती है?
- कौन-कौन से व्यवसाय मूलभूत तथा उच्चस्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं?
- व्यवसायों का विस्तृतीकरण कैसे हुआ?

उद्देश्य

इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि

- समय के साथ-साथ व्यवसायों का स्वरूप बदलता गया।
- व्यवसाय हमारी कुछ मूलभूत तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।
- आवश्यकताओं के आधार पर व्यवसायों को विभिन्न क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है।
- वैज्ञानिक तथा तकनीकी उन्नति के फलस्वरूप नए-नए व्यवसाय आते जा रहे हैं।
- सही व्यवसाय–चुनाव के लिए व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं को समझना चाहिए।

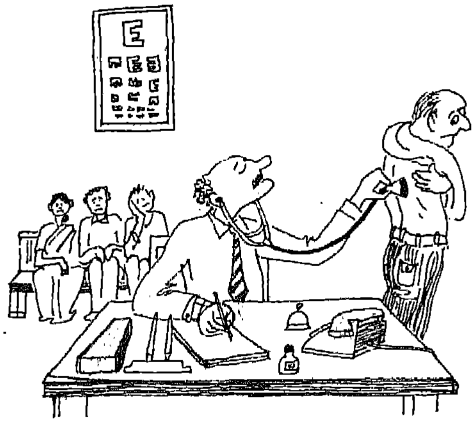
व्यवसाय : एक आवश्यकता

यदि आप से पूछा जाए कि काम करना क्यों आवश्यक है तो आप में से अधिकांश का उत्तर होगा धन कमाने के लिए। हो सकता है कि कुछ लोगों के लिए यही सबसे महत्वपूर्ण कारण हो, परंतु व्यवसाय अपनाने का एक मात्र कारण धन कमाना ही नहीं है।

हम जानते हैं कि कई व्यक्ति अत्यधिक धनी होते हुए भी अपनी योग्यताओं और रुचियों के विकास के लिए अथवा समय के उपयोग के लिए कोई न कोई काम करते हैं। समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों ने कुछ अन्य कारण भी दिए हैं जैसे कि प्रत्येक व्यक्ति में मानव संबंध स्थापित करने, अपनी व्यक्तिगत पहचान बनाने, सामाजिक प्रतिष्ठा पाने और सुरक्षित अनुभव करने जैसी इच्छाएं भी होती हैं जिनकी संतुष्टि और प्राप्ति के लिए कई व्यक्ति व्यवसाय करने के लिए प्रेरित होते हैं। इससे पहले कि व्यवसाय के मनोवैज्ञानिक पहलू पर हम और चर्चा करें, आइए, व्यवसायों के आज के स्वरूप को अच्छी तरह समझने के लिए एक दृष्टि इसके ऐतिहासिक पक्ष पर भी डालें।

प्राचीन काल में लोग भोजन, वस्त्र, घर आदि के लिए धन इकट्ठा नहीं करते थे। यदि एक व्यक्ति अनाज पैदा करता था, तो दूसरा कपड़ा बुनता था। जिसके पास जो वस्तु अधिक होती थी वह दूसरे को देकर उसके बदले में कुछ और ले लेता था। इसे बार्टर प्रणाली कहा जाता था। परंतु जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती गई इस प्रणाली के द्वारा प्रत्येक वस्तु के आदान-प्रदान का कार्य कठिन होता गया और कार्यों को समूहों में बाँट दिया गया। एक समूह के व्यक्तियों को एक काम दे दिया गया, इस प्रकार कार्यों के अनुसार जाति और वर्ग बन गए। ब्राह्मणों का कार्य अध्यापन करना अथवा ज्ञान प्रदान करना था, क्षत्रिय देश की सुरक्षा करते थे, वैश्य व्यापार करते थे तथा जो वर्ग मेहनत, मजदूरी तथा सेवा संबंधी कार्य करते थे उन्हें शूद्र कहते थे। इस प्रकार चार प्रमुख प्रकार के व्यवसाय बन गए। परंतु जैसे-जैसे औद्योगिक तथा वैज्ञानिक उन्नति होती गई कई नए-नए व्यवसाय आते गए। उदाहरण के लिए जब रेल का आविष्कार हुआ तो इंजन ड्राइवर, टिकट चेकर, गार्ड, इंजीनियर तथा अनेक अन्य व्यवसायों का जन्म हुआ। इस प्रकार सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक एवं वैज्ञानिक उन्नति के कारण अनेक नए-नए व्यवसायों का आविष्कार होता गया।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार विभिन्न व्यवसाय प्रमुखतः व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। समाज में प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए काम करता है। व्यवसाय द्वारा वास्तव में व्यक्ति एक दूसरे की सहायता करते हैं, उदाहरण के लिए जो कपड़े हम पहनते हैं, उन्हें बनाने के लिए कितने ही व्यक्तियों ने कार्य किया है। किसान ने रूई पैदा की, ट्रक ड्राइवर रूई को मिल में ले गया, वहाँ पर मैनेजर, मेकैनिकल इंजीनियर, फोरमैन, स्पिनिंग मास्टर तथा स्पिनर ने मिलकर कपड़ा तैयार किया। इसके पश्चात् दर्जी ने उन्हें सिला



कार्य में अकुशलता–दूसरों के लिए परेशानी

आवश्यकताएँ मूलभूत हैं जिनकी पूर्ति जीवित रहने के लिए आवश्यक है जैसे भोजन, जल इत्यादि की आवश्यकता, परंतु कुछ आवश्यकताएँ जैसे घर, वस्त्र, सुख, प्रतिष्ठा, मनोरंजन, कला, धर्म आदि ऐसी हैं जिनके बिना मनुष्य जीवित तो रह सकता है परंतु आराम व सुख के लिए उसे वे आवश्यक प्रतीत होती हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने आवश्यकताओं के अनुक्रमीकरण की चर्चा की है जिसके अनुसार मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होने पर अन्य आवश्यकताएँ प्रबल हो जाती हैं इसलिए वे उच्चस्तरीय आवश्यकताएँ कहलाती हैं। मनोरंजन,

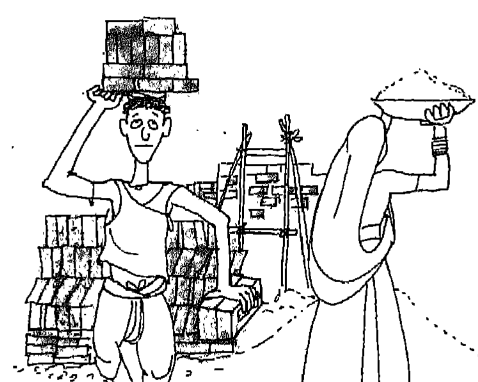
जरा सोचिए

आपके व्यवसाय द्वारा आपकी तथा दूसरों की किन-किन आवश्यकताओं की पूर्ति होती है?

फिर दुकानदार से इसे ग्राहकों ने खरीदा। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक आवश्यकता की पूर्ति के अंतर्गत कितने ही व्यवसाय आ जाते हैं। इनमें से एक भी व्यक्ति यदि ठीक से कार्य न करे तो उससे किसी अन्य को हानि हो सकती है। जैसे यदि एक मोटर मेकैनिक कार ठीक करते समय कार को भली भाँति ठीक न करे तो उससे दुर्घटना होने की संभावना हो सकती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यवसाय में कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए स्वयं के बारे में और व्यवसाय के बारे में जानना आवश्यक है जिससे उसे ज्ञात हो जाय कि वह इस व्यवसाय के योग्य है या नहीं तथा वह अपने उत्तरदायित्व को भली प्रकार पूरा कर सकेगा या नहीं।

आपने देखा कि मनुष्य की आवश्यकताओं के आधार पर ही विभिन्न व्यवसायों का विकास हुआ। विभिन्न व्यवसायों के द्वारा ही हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है जिनमें कुछ

कला, भ्रमण, शिक्षा, धर्म आदि से संबंधित व्यवसायों में लगे व्यक्ति विशेषकर मानव संबंधों, सूचना,



काम–
मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन

सुरक्षा, प्रतिष्ठा, आदि उच्चस्तरीय आवश्यकताओं को पूरा करने में सफल होते हैं।

अब हम कुछ मूलभूत तथा अन्य आवश्यकताओं के आधार पर व्यवसायों की चर्चा करेंगे जो इस प्रकार हैं :–

- भोजन तथा जल की आवश्यकता
- वस्त्र की आवश्यकता
- घर की आवश्यकता
- शिक्षा एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता
- स्वास्थ्य की आवश्यंकता
- सुरक्षा की आवश्यकता
- संचार की आवश्यकता
- परिवहन की आवश्यकता
- मनोरंजन की आवश्यकता
- स्वच्छता की आवश्यकता
- धर्म की आवश्यकता
- कला की आवश्यकता

भोजन तथा जल की आवश्यकता

जीवित रहने के लिए इनकी पूर्ति अत्यंत आवश्यक है। लोगों की इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बहुत से व्यक्ति अनेक व्यवसायों में लगे हुए हैं। खेती करना, फल-सब्जी, अनाज उगाना, भोजन पकाना, अनाज बेचना इत्यादि भोजन प्राप्ति में सहायक होते हैं। इन कार्यों में लगे हुए लाखों किसान, मज़दूर, फल-सब्जी-विक्रेता, रसोइये, रेस्तराँ और होटलों में काम करने वाले आते हैं। इसी प्रकार पीने का पानी प्राप्त करने के लिए कुआँ खोदना, नल लगाना, झील तथा नदियों के पानी को साफ करके पीने योग्य बनाना, पानी निकालने के लिए पंप बनाना, स्वच्छ पानी को घरों तक पहुँचाने के लिए पाइप बनाना और लगाना आदि कार्यों में अनेक कर्मचारी, नलकार, निरीक्षक तथा इंजीनियरों की आवश्यकता होती है।

घर की आवश्यकता

घरों, इमारतों, भवनों के निर्माण-कार्य में लगे हुए सिविल इंजीनियर, नक्शानवीस, वास्तुविद, ठेकेदार, राजमजदूर, बढ़ई, लोहार इत्यादि हमारी घर की आवश्यकता को पूरा करते हैं। घर बनाने के लिए आवश्यक सामान हैं ईंट, सीमेंट, लकड़ी, लोहा आदि। इन्हें बनाने के लिए छोटे-बड़े कारखाने होते हैं। इनमें अनेक प्रकार के कुशल तथा अकुशल, आफिसर, मजदूर, कर्मचारी, इंजीनियर आदि काम करते हैं।

वस्त्र की आवश्यकता

वस्त्र, रूई, ऊन, रेशम, नाइलान आदि से बनते हैं। रूई खेती से, ऊन भेड़ों से, रेशम कीड़ों से और नाइलान कृत्रिम रेशों से प्राप्त होता है। किसान, भेड़ और रेशमी कीड़े पालने वाले व्यापारी, रूई, ऊन, रेशम आदि खरीद कर बाजार में बेच देते हैं। कुछ लोग हाथ करघा की सहायता से इनसे वस्त्र तैयार करते हैं परंतु आजकल ये काम छोटे-बड़े कारखानों में किये जाते हैं। इनमें कपड़ा बुनने, रँगने, डिज़ाइन बनाने, छापने आदि का कार्य करने वाले असंख्य व्यक्ति, इंजीनियर, डिज़ाइनर, ड्राइंग मास्टर आदि होते हैं। तैयार कपड़ा बेचने वाले, छोटे बड़े व्यापारी, कपड़ा सिलने वाले दर्जी, सिलाई की मशीनें बनाने वाले कारीगर तथा इंजीनियर आदि अपने व्यवसायों द्वारा हमारी वस्त्र की आवश्यकता को पूरा करते हैं।

शिक्षा एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता

आज के युग में शिक्षा और प्रशिक्षण भी भोजन तथा जल की भाँति हमारे लिए आवश्यक हो गए हैं। देश के सामाजिक तथा आर्थिक विकास के लिए प्रत्येक नागरिक को शिक्षा देना आज उतना ही आवश्यक है जितना उसे भोजन तथा

वस्त्र प्रदान करना। किसी भी व्यवसाय को भली भाँति करने अथवा उसमें आवश्यक कौशल प्राप्त करने के लिए उचित प्रशिक्षण आवश्यक है। अध्यापक, प्रशिक्षक, परामर्शदाता, प्रशासक आदि के सहयोग से ही शिक्षा और प्रशिक्षण का कार्य किया जाता है। इस क्षेत्र से संबंधित व्यवसाय में देश के लाखों लोग लगे हुए हैं।

स्वास्थ्य की आवश्यकता

प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहता है। जव कभी हम वीमार पड़ते हैं तो वैद्य, हकीम या डाक्टर का सहारा लेते हैं। अधिक बीमार होने पर अस्पताल या नर्सिंग होम में भी भर्ती होना पड़ सकता है जहाँ नर्स रोगी की देखभाल करती है। खून व मूत्र की जाँच करने वाले टेक्नीशियन तथा मरहम पट्टी करने वाले कंपाउंडर आदि की भी आवयकता पड़ती है। दवा बनाने के काम में लगे हुए कर्मचारी, केमिकल इंजीनियर, दवा वेचने वाले कैमिस्ट आदि अनेक व्यक्ति हमारे स्वास्थ्य की रक्षा में सहायक होते हैं।

टैंक, जहाज आदि बनाने तथा चलाने के लिए पुलिस, होमगार्ड तथा सुरक्षा दल के कर्मचारियों की सहायता ली जाती है।

संपर्क एवं संचार

वर्तमान युग में दूर बैठे व्यक्तियों से संपर्क



संबद्ध क्रियाकलाप

यदि आप कभी किसी दवाखाने या हस्पताल में उपचार के लिए गए हैं तो वहाँ उपचार से संबंधित किस-किस व्यक्ति ने आपकी सहायता की? इस क्षेत्र को अपनाने के इच्छुक विद्यार्थी चिकित्सा संबंधी व्यवसायों में लगे किसी परिचित या संबंधी से उनके कार्य के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करें।

सुरक्षा की आवश्यकता

जिस तरह शरीर की सुरक्षा के लिए चिकित्सक, नर्स आदि की आवश्यकता पड़ती है उसी तरह देश की सुरक्षा के लिए जल, थल, तथा वायु सेना का होना आवश्यक है। इनमें सैनिक से लेकर उच्च श्रेणी के अधिकारी तथा वंदूक से लेकर

स्थापित करने के लिए पत्र, तार, टेलीफोन, रेडियो तथा टेलीविज़न आदि संचार के साधनों का प्रयोग आवश्यक हो गया है। इस क्षेत्र में पोस्टमैन, पोस्ट मास्टर की तथा टेलीफोन, रेडियो, टी.वी. आदि को वनाने तथा मरम्मत करने वाले कुशल व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ती है।

यातायात की आवश्यकता

हम पत्र, तार, टेलिफोन, रेडियो आदि के द्वारा संदेश तो भेज सकते हैं परंतु एक जगह से दूसरी जगह शीघ्र पहुँचने के लिए साइकिल, बस, रेलगाड़ी, हवाई जहाज आदि का सहारा लेना पड़ता है। इन सवारियों से संबंधित कारखानों में असंख्य व्यक्ति काम करते हैं। अधिकतर वाहनों को चलाने के लिए ड्राइवर, कंडक्टर, पायलट तथा अन्य प्रकार के कर्मचारी जैसे स्टेशन मास्टर, टिकट विक्रेता, टिकटचेकर आदि की आवश्यकता पड़ती है। इन्हें ठीक प्रकार से चलाने योग्य रखने के लिए मैकेनिक तथा इंजीनियर भी होते हैं।

मनोरंजन की आवश्यकता

प्रत्येक व्यक्ति को भोजन और स्वास्थ्य की भाँति मनोरंजन की भी आवश्यकता होती है। दिन भर काम करने के वाद व्यक्ति खेलना, गाना सुनना, टी.वी. या सिनेमा देखना चाहता है। ऐसे व्यक्ति जिनमें गाने, बजाने, नाचने, अभिनय करने संबंधी योग्यता होती है वे इन क्षेत्रों से संबंधित असंख्य व्यवसायों में काम करके हमारी इस आवश्यकता को पूरा करते हैं। इस क्षेत्र के कुछ और जाने पहचाने व्यवसाय है संगीतकार, नाटककार, अभिनेता, वादक, संगीतज्ञ, नर्तक आदि। टी.वी. तथा सिनेमा में निर्देशक, प्रोड्यूसर, फोटोग्राफर, एडीटर, कहानीकार, एनाउंसर तथा और भी अनेक नए व्यवसायों में अवसर उपलब्ध हैं। खेल सामग्री के निर्माण तथा विक्रय में कितने ही कर्मचारी तथा दुकानदार आदि लगे हुए हैं।

स्वच्छता की आवश्यकता

स्वच्छ रहना भी हमारी एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसे धोबी, ड्राइक्लीनर्स की दुकानों पर काम करने वाले, अनेक संस्थाओं तथा घरों में काम करने वाले सफाई कर्मचारी, साबुन तेल आदि बनाने वाली कंपनियों में काम करने वाले पूरा करते हैं।

कला की आवश्यकता

अपने आसपास सुंदर वस्तुएँ, चित्र, सजावट के सामान देखकर भला किसे खुशी नहीं होती। चित्रकार, मूर्तिकार, सज्जाकार, कसीदाकार, शिल्पकार, डिजाइनर हमारी कला संबंधी आवश्यकता को पूरा करते हैं।

ऊपर बताई गई कुछ आवश्यकताएँ तथा उनसे संबंधित व्यवसाय केवल उदाहरण मात्र हैं। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य आवश्यकताएँ भी हैं जैसे देशाटन की आवश्यकता, धार्मिक तथा आध्यात्मिक आवश्यकताएँ आदि। इनका भी हमारे जीवन में बड़ा महत्व है। इन आवश्यकताओं से संबंधित अनेक प्रकार के व्यवसायों में बहुत से लोगों को काम मिलता है।

मनुष्य में प्रकृति, पृथ्वी एवं अंतरिक्ष के अन अन्वेषित रहस्यों को जानने की इच्छा एवं उत्सुकता सदैव से ही रही है ताकि इनमें छिपे संसाधनों का उपयोग मानव की भलाई के लिए किया जा सके। इस दिशा में हो रहे प्रयत्नों के फलस्वरूप, अंतरिक्ष, समुद्रविज्ञान एवं भूगर्भ-अन्वेषण तथा वातावरण संरक्षण संबंधी अनेक नए व्यवसायों का उदय हुआ है। समय के साथ हमारी आवश्यकताओं में अंतर तथा परिवर्तन भी आता रहता है। इन्हीं के अनुसार व्यवसायों में बदलाव आता है साथ ही नए प्रकार के व्यवसाय जन्म लेते हैं। विज्ञान की प्रगति एवं सभ्यता के विकास के साथ ही नई-नई आवश्यकताओं का अनुभव किया जाने लगा है जिन्हें पूरा करने के लिए नए व्यवसायों की माँग बढ़ती है। देश को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास भी बढ़ रहे हैं तथा व्यवसाय की आवश्यकता को एक मौलिक अधिकार का रूप देने की माँग की जा रही है। स्वरोजगार की योजनाओं के फलस्वरूप भी देश में व्यवसायों के अनेक अवसरों के बढ़ने की संभावना है।

सारांश–अध्याय 1

व्यक्ति के लिए काम करना क्यों आवश्यक है?	धन कमाना ही व्यवसाय का एकमात्र कारण नहीं है। बहुत से व्यक्ति अपनी योग्यताओं व रुचियों के विकास के लिए व समय के सदुपयोग के लिए काम करते हैं।
व्यवसाय करने के मनोवैज्ञानिक कारण क्या हैं?	व्यवसाय द्वारा व्यक्ति अपनी मूलभूत एवं उच्चस्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।
व्यवसाय किस प्रकार व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं?	भोजन, जल, वस्त्र, घर की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अनेक व्यवसायों में लगे व्यक्ति हमारी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होते हैं।
व्यवसाय द्वारा किस प्रकार उच्चस्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति होती है?	शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, संपर्क एवं संचार, यातायात, मनोरंजन, कला के क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्ति उच्चस्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।
कुछ नए व्यावसायिक क्षेत्रों का आविष्कार कैसे हुआ?	वैज्ञानिक एवं तकनीकी उन्नति के फलस्वरूप मनुष्य की आवश्यकताओं में परिवर्तन हुआ जिसके फलस्वरूप अंतरिक्ष, समुद्रविज्ञान, भूगर्भ अन्वेषण तथा वातावरण संरक्षण संबंधी कुछ नए व्यावसायिक क्षेत्रों का उदय हुआ है।

अभ्यास

शिक्षकों के लिए

1. व्यवसाय करने के कुछ प्रमुख कारणों का उल्लेख कीजिए।
2. प्राचीन काल में व्यवसायों का स्वरूप क्या था? इसमें किस प्रकार परिवर्तन हुआ?
3. हमारी एक आवश्यकता की पूर्ति के लिए विभिन्न व्यवसायों में लगे अनेक व्यक्ति कार्य करते हैं। किसी एक व्यवसाय का उदाहरण देकर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

विद्यार्थियों के लिए

1. प्रमुख आवश्यकताओं को लिखकर उनसे संबंधित कुछ व्यवसायों की एक तालिका बनाइए।
2. अपने आसपास रहने वाले लोगों के काम-धंधों की एक सूची बनाइए। बताइए कि उनके काम के द्वारा उनकी किस-किस प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

2

कुछ प्रश्न

- विभिन्न व्यक्तियों के व्यावसायिक चुनाव में अंतर के क्या कारण हैं?
- विकास के विभिन्न स्तरों पर व्यक्ति के व्यावसायिक चयन में बदलाव क्यों आता है?
- व्यावसायिक विकास प्रक्रिया क्या है?
- जीवन के विभिन्न चरणों में घटित होने वाली घटनाएँ व्यावसायिक विकास प्रक्रिया को किस तरह प्रभावित करती हैं?

उद्देश्य

इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि

- व्यावसायिक विकास संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण अंग है।
- व्यावसायिक विकास बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक सतत् चलने वाली एक प्रक्रिया है।
- व्यावसायिक जागरूकता, व्यावसायिक विकास प्रक्रिया का प्रथम एवं महत्वपूर्ण चरण है।
- प्रारंभिक विद्यालयी स्तर के अनुभव, बाद में आनेवाले शिक्षा एवं व्यवसाय संबंधी निर्णयों, व्यवसाय में प्रवेश, उन्नति एवं समायोजन पर अपना महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं।

- प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के व्यावसायिक विकास पर ध्यान देना उतना ही आवश्यक है जितना कि शैक्षिक विकास पर।
- बाल्यकाल से किशोरावस्था आने तक व्यक्ति के व्यावसायिक चुनाव में अंतर आ जाने की संभावना होती है।
- स्कूली शिक्षा स्तर पर छात्रों को स्वयं तथा व्यावसायिक जगत के अन्वेषण के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास

पिछले अध्याय में हमने देखा कि व्यवसाय क्यों आवश्यक है और किस प्रकार व्यवसाय द्वारा व्यक्ति की मूलभूत तथा कुछ अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। परंतु हम सब भिन्न-भिन्न व्यवसाय क्यों करना चाहते हैं तथा क्यों बहुत से व्यक्ति अपने व्यवसाय में पूरा समायोजन न कर पाने के फलस्वरूप प्रत्येक परिस्थिति में असंतुष्ट दिखाई देते हैं? आइए, देखें कि व्यावसायिक विकास क्या है और जीवन समायोजन में इसका क्या महत्व है।

वास्तव में व्यक्ति का व्यवसाय ही बहुत सीमा तक उसकी जीवन शैली को निर्धारित करता है। व्यवसाय द्वारा ही व्यक्ति का समाज में स्थान, उसका रहन-सहन का तरीका वनता है। यहाँ तक कि उसका देश या विदेश में रहना, देश के किस भाग में रहना, उसके पास छोटे या बड़े घर का होना, पड़ोसी, मित्र, कार्य के घंटे, अवकाश का समय, परिवार के साथ विताया गया समय, आर्थिक स्थिति आदि सभी व्यवसाय द्वारा ही निर्धारित होते हैं। व्यक्ति का परिवार में तथा अपने आप के साथ समायोजन भी वहुत सीमा तक उसके व्यवसाय पर निर्भर है। इस तरह यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि व्यवसाय जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है और सामान्य शिक्षा में बच्चों के व्यावसायिक विकास पर ध्यान देना उतना ही आवश्यक है जितना कि शैक्षिक विकास पर।

जरा सोचिए

आपके व्यवसाय ने आपके जीवन के विभिन्न पहलुओं को किस तरह प्रभावित किया है?

व्यावसायिक विकास क्या है?

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन के लिए यह जानना आवश्यक है कि व्यक्ति व्यवसाय का चुनाव किस प्रकार करते हैं। व्यावसायिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययनों से ज्ञात होता है कि जीवन के विभिन्न स्तरों पर जीवन-लक्ष्यों तथा चुने गए व्यवसाय में भिन्नता होती है। शारीरिक, बौद्धिक, सांवेगिक तथा सामाजिक विकास की भाँति व्यावसायिक विकास भी संपूर्ण व्यक्तित्व-विकास का एक महत्वपूर्ण अंग है। व्यावसायिक विकास बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक सतत् चलने वाली एक प्रक्रिया है जो व्यक्ति को प्रगामी विकास की ओर ले जाती है।

मनोवैज्ञानिकों ने अनेक व्यक्तियों की व्यावसायिक जीवनियों के आधार पर व्यावसायिक जीवन को विकास की महत्वपूर्ण अवस्थाओं में बाँटा है। उन्होंने पाया कि जीवन के प्रारंभ में हुए माता-पिता तथा स्कूल के प्रभाव, व्यक्ति की कार्य के प्रति इच्छा, कार्य के प्रति रुचि, मनोवृत्ति तथा कार्य मूल्यों को

प्रभावित करते हैं। यद्यपि अधिकतर विद्यार्थी दसवीं कक्षा के बाद ही शिक्षा व्यवसाय संबंधी महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं परंतु इससे पूर्व के जीवन के अनुभव, माता-पिता का व्यवसाय तथा उनके कार्यमूल्य, विद्यार्थी की विभिन्न विषयों में उपलब्धियाँ,

> **जरा सोचिए**
>
> बाल्यावस्था से अब तक के जीवनकाल में उन महत्वपूर्ण घटनाओं के विषय में विचार कीजिए जिन्होंने आपके जीवन के शैक्षिक व व्यावसायिक निर्णयों को प्रभावित किया हो।

व्यावसायिक आकांक्षाएँ, क्षमताएँ, कार्यकौशल आदि उसके द्वारा बाद में लिए जाने वाले व्यावसायिक चुनाव संबंधी तथा अन्य निर्णयों पर अपना महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं।

व्यावसायिक विकास के विभिन्न स्तर

अमरीकी मनोवैज्ञानिक डोनाल्ड सुपर तथा गिन्जबर्ग द्वारा किए गए अध्ययनों के आधार पर व्यावसायिक जीवन को विकास की विभिन्न अवस्थाओं में बाँटा गया है। प्रत्येक स्तर पर कुछ आयु सीमाएँ दी गई हैं जो केवल अनुमान के तौर पर हैं। इन आयु सीमाओं में विभिन्न संस्कृतियों में थोड़ा बहुत परिवर्तन किया जा सकता है। व्यावसायिक विकास की ये अवस्थाएँ इस प्रकार हैं।

व्यावसायिक विकास के इस सिद्धांत के अनुसार 14 वर्ष से छोटी उम्र के बच्चे अपनी कल्पनाओं के आधार पर खूबसूरत वस्तुओं, बाहरी साज-सजावट, पोशाक आदि के कारण किसी व्यवसाय की ओर आकर्षित होते हैं। उदाहरण के लिए इस उम्र के बच्चे प्रायः पुलिसमैन, नर्स, सेना के ऑफिसर जैसे व्यवसायों की ओर पोशाक, प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण आकर्षित हो जाते हैं।

व्यावसायिक विकास की अवस्थाएँ

1. वर्धन (Growth)	जन्म से 14 वर्ष तक
(क) काल्पनिक (fantasy)	जन्म से 10 वर्ष तक
(ख) योग्यता संबंधी	11 से 14 वर्ष तक
2. अन्वेषणात्मक (Exploration)	15 से 24 वर्ष तक
(क) अंतरिम (Tentative)	
(ख) परिवर्ती (Transition)	
(ग) प्रयास (Trial-uncommitted)	
3. संस्थापन (Establishment)	25 से 45 वर्ष तक
(क) परीक्षण (Trial-committed)	
(ख) उन्नति (Advancement)	
4. अनुरक्षण (Maintenance)	45 से 60 वर्ष तक
5. अवनति (Decline)	60 वर्ष के बाद

एक छोटे बच्चे के लिए रेलगाड़ी तथा बस को चला पाने तथा आकाश में उड़ते हवाई जहाज को देखकर उसे उड़ाने की कल्पना बहुत सुखद होती है। इसी प्रकार बहुत से बच्चे सर्कस में शेर और हाथी को देखकर उन्हें वश में करके नचाने होने लगता है। अब वे प्रायः वही काम करने की इच्छा व्यक्त करने लगते हैं जो वे अच्छी तरह कर सकते हैं और उनके जिन कार्यों की प्रशंसा की जाती है। घर में माता-पिता तथा आसपास अन्य व्यक्तियों द्वारा किए जाने वाले कार्यों द्वारा उन्हें



व्यवसाय की कल्पना–कितनी सुखद

संबद्ध क्रियाकलाप

विद्यार्थियों से विचार-विमर्श अथवा व्यक्तिगत रूप से बातचीत द्वारा यह जानने का प्रयास कीजिए कि उनके व्यवसाय संबंधी विचार किस सीमा तक काल्पनिक अथवा वास्तविक हैं।

वाला रिंग मास्टर बनने की कल्पना करने लगते हैं। इस स्तर पर व्यावसायिक चुनावों की कल्पना तथा आनंद पर आधारित होने के कारण इस अवस्था को "काल्पनिक" कहा जाता है।

धीरे-धीरे बच्चों में अपनी क्षमताओं का आभास कार्य जगत की भी थोड़ी बहुत जानकारी होने लगती है। घर तथा बाहर यदि उन्हें विभिन्न कार्यों को करने का अवसर मिलता रहता है तो उन्हें इन कार्यों को करने के लिए आवश्यक कौशल और योग्यता का भी ज्ञान होता है।



काम के अवसर--
क्षमताओं के विकास
में सहायक

इन सब अनुभवों के आधार पर ही सामान्यतः बालक बालिकाओं में आत्मधारणा, कार्यमूल्यों, कार्यप्रवृतियों तथा अन्य कार्यसंबंधी संप्रत्ययों का विकास होता है। इस आयु में माता-पिता, शिक्षकों, मित्रों आदि की कार्य संबंधी धारणाएँ और मूल्य बच्चे के व्यक्तित्व पर अपना महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए जिस परिवार में हर व्यक्ति के अपना काम स्वयं करने पर महत्व दिया जाता है उस परिवार का बच्चा संभवतः बड़ा होकर काम से जी नहीं चुराएगा।

विद्यालय में विभिन्न विषयों के प्राप्तांक भी विद्यार्थियों को बताते हैं कि वे किन विषयों में अच्छे हैं और किनमें कमज़ोर। उदाहरण के लिए जिस विद्यार्थी की आवाज सुरीली नहीं है वह गायक बनने का स्वप्न नहीं देखेगा। इसी प्रकार एक दुबला-पतला बच्चा पहलवान बनकर कुश्ती प्रतियोगिता में भाग लेने की योजना नहीं बनाएगा तथा जो बच्चा गणित में उच्च अंक प्राप्त करता है वह हो सकता है इंजीनियर, वैज्ञानिक अथवा गणितविद बनने की योजना बनाए। इस प्रकार स्कूली स्तर पर बच्चे की स्वयं तथा व्यावसायिक जगत की खोज चलती रहती है। इन वर्षों में हुए अनुभवों के आधार पर ही स्वयं एवं व्यावसायिक जगत के ज्ञान में वृद्धि होती है। इसीलिए विकास की इस अवस्था को "अन्वेषण" (Exploration) कहा जाता है।

हमारी शिक्षा पद्धति में दसवीं कक्षा के बाद ही विद्यार्थियों द्वारा विषयों का चुनाव किया जाता है जिनका उनकी भविष्य की व्यावसायिक योजना तथा अन्य जीवन लक्ष्यों से महत्वपूर्ण संबंध होता है। जो विद्यार्थी अपनी योग्यता, रुचि तथा भविष्य की योजनाओं को ध्यान में रखते हुए सही विषयों का चुनाव कर लेते हैं वे इन विषयों से संबंधित उच्च शिक्षा व प्रशिक्षण प्राप्त कर उचित व्यवसाय में प्रवेश पा लेते हैं। परंतु बहुत से विद्यार्थी कई कारणों से जैसे पर्याप्त अंक न मिलने पर, क्षमताओं और रुचियों संबंधी ज्ञान के अभाव में अथवा पर्याप्त अवसर उपलब्ध न होने के कारण सही विषय का चुनाव नहीं कर पाते जिससे उनमें असंतोष तथा नैराश्य की भावना बनी रहती है।

विद्यार्थियों को यदि स्कूली स्तर पर विशेषकर दस से पंद्रह वर्ष की आयु के बीच स्वयं की तथा व्यावसायिक जगत की जानकारी के लिए अधिक अवसर दिए जाएँ तो वे जीवन के इन महत्वपूर्ण स्तरों पर सही निर्णय ले पाएँगे। इस स्तर पर बालक तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा किए गए प्रयास उसकी स्वयं की तथा सही व्यवसाय की खोज में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

पंद्रह से पच्चीस वर्ष की "अन्वेषण" की अवस्था के प्रारंभिक कुछ वर्षों में लिए गए व्यवसाय संबंधी निर्णय प्रायः "अंतरिम" ही होते हैं क्योंकि व्यक्ति एक से दूसरे व्यवसाय में अच्छे से अच्छे अवसरों की खोज में प्रवेश करता रहता है जब तक कि उसे अपनी आशाओं, इच्छाओं और मूल्यों की पूर्ति करने वाला व्यवसाय न मिल जाय। देखा गया है कि व्यवसाय द्वारा व्यक्ति भिन्न-भिन्न इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। व्यवसाय द्वारा कोई

सत्ता की, तो कोई कार्य में संतोष प्राप्ति की इच्छा करता है। परंतु ऐसा भी होता है कि कोई सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक परिस्थितियों से बाध्य होकर जल्दी ही किसी व्यवसाय को अपना ले।

हमारे देश में अधिकतर विद्यार्थी दसवीं कक्षा और कभी-कभी उसके बाद तक भी भविष्य की या व्यवसाय संबंधी योजना नहीं बनाते। ये योजनाएँ प्रायः उनके लिए माता-पिता द्वारा ही बनाई जाती हैं जो अधिकतर बच्चे की क्षमता और रुचि पर आधारित नहीं होतीं क्योंकि ऐसे निर्णयों में वे प्रायः अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और पारिवारिक परिस्थितियों को ही अधिक महत्व देते हैं।

बहुत से विद्यार्थी स्कूली शिक्षा समाप्त कर मित्रों की सलाह से अथवा बिना किसी ध्येय के केवल डिग्री पाने के लिए कालेज या विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लेते हैं जिसके फलस्वरूप उन्हें शिक्षा समाप्त करने पर व्यावसायिक प्रशिक्षण के अभाव में रोजगार नहीं मिलता। ऐसी परिस्थितियों में या तो युवक-युवतियाँ किसी भी व्यवसाय के मिलने पर उसे अपना लेते हैं या फिर एक से दूसरे व्यवसाय में भटकते रहते हैं। परंतु फिर भी अधिकतर व्यक्तियों को 25-30 वर्ष की आयु के समीप पारिवारिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के कारण किसी न किसी व्यवसाय में स्थापित होना ही पड़ता है।

व्यवसाय में प्रवेश के बाद भी व्यावसायिक विकास की प्रक्रिया चलती रहती है जो कि प्रायः कार्य संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने, संस्थान के नियमों का पालन करने, अन्य कार्यकर्ताओं के साथ अच्छे संबंध बनाने, अधिक उत्पादन तथा ऊँचे पद की प्राप्ति के लिए अधिक शिक्षा और प्रशिक्षण पाने के लिए किए गए प्रयासों में प्रदर्शित होती है। इसीलिए इस सिद्धान्त के अन्तर्गत इस अवस्था को "उन्नति" की अवस्था कहा जाता है।

इसके बाद "अनुरक्षण" की अवस्था आती है। प्रौढ़ावस्था आते-आते अधिकतर व्यक्ति जीवन में कोई नया तथा बड़ा परिवर्तन नहीं लाना चाहते। जिस व्यवसाय में भी वे हैं उसी में अपनी कार्यकुशलता तथा पद को बनाए रखने का प्रयास करते हैं ताकि वे अपने व्यवसाय से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर पाएं और उन्हें जीवन में कुछ कर पाने का संतोष तथा उपलब्धि का अनुभव हो।

बढ़ती उम्र के साथ-साथ व्यक्ति को शारीरिक तथा मानसिक शक्ति तथा क्षमता कम होने का आभास होने लगता है कारणवश उसे जीवन की सक्रियता को कुछ कम करने के लिए अपने को तैयार करना पड़ता है जो प्रायः कठिन होता है क्योंकि अब तक व्यवसाय व्यक्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाता है। 55 से 60 वर्ष की आयु के बीच सरकारी तथा गैरसंकारी संस्थानों में काम करने वालों को सक्रिय व्यावसायिक जीवन से अवकाश लेना पड़ता है। बहुत से व्यक्ति इस तथ्य को मानसिक रूप से स्वीकार नहीं कर पाते क्योंकि उनमें एकाएक जीवन के व्यर्थ और अर्थहीन

जरा सोचिए

क्या आपने स्कूली स्तर पर विषयों का चुनाव भविष्य के व्यवसाय को ध्यान में रखते हुए किया था? इस स्तर पर विषयों के चुनाव के क्या आधार होने चाहिए?

हो जाने की भावना आने लगती है। अतः "व्यवसाय में प्रवेश" की भांति "व्यवसाय से अवकाश" भी व्यावसायिक प्रक्रिया की एक महत्वपूर्ण अवस्था है। यह समय व्यवसाय से अवकाश लेकर कुछ अंश-कालीन काम की तैयारी का होता है ताकि व्यक्ति अपना कुछ समय उन रुचिकर कार्यों में लगा सके जिसके लिए अब तक उसके पास समय का अभाव था और जिससे उसकी शारीरिक सक्रियता तथा मानसिक सजगता बनी रहे।

जरा सोचिए

बाल्यावस्था से अब तक आपके व्यावसायिक चुनाव से संबंधित विचारों में क्या-क्या परिवर्तन हुए? इन परिवर्ततनों के क्या-क्या संभव कारण हो सकते हैं?

व्यावसायिक परिपक्वता

व्यावसायिक विकास की इस प्रक्रिया में किसी भी व्यक्ति का एक से दूसरी अवस्था में विना किसी वाधा के तथा सामान्य गति से गुजरना इस बात पर निर्भर करता है कि हर स्तर पर उसका व्यावसायिक व्यवहार उसके परिवार, समुदाय अथवा समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप है या नहीं। अर्थात प्रत्येक वच्चे का वर्धन की अवस्था से अन्वेषण, व्यवसाय में प्रवेश, उन्नति, अनुरक्षण तथा अवनति की अवस्था तक निर्बाध गुजरना इस पर निर्भर करता है कि हर स्तर पर, अपनी आयु तथा समूह के अन्य वालक वालिकाओं की तुलना में उसमें कितनी व्यावसायिक तत्परता तथा सजगता थी और किस सीमा तक उसके द्वारा लिए गए निर्णयों से उसे न केवल व्यावसायिक क्षेत्र में परंतु सामाजिक तथा पारिवारिक जीवन में भी सुख और संतोष की प्राप्ति हो सकी।

शिक्षको, हर स्तर पर बालकों की व्यावसायिक तत्परता का अनुमान आप पिछले पृष्ठों में विकास की प्रत्येक अवस्था पर वर्णित व्यवहारों के आधार पर कर सकते हैं। उदाहरण के लिए 14-15 वर्ष की आयु के बालक का व्यावसायिक चयन यदि काल्पनिक स्तर का ही है अर्थात उसकी क्षमताओं और रुचियों से बिल्कुल मेल नहीं खाता तो ऐसे बालक को आप व्यावसायिक रूप से पिछड़ा हुआ मान सकते हैं। ऐसे बालक की व्यावसायिक परिपक्वता को सामान्य स्तर पर लाने के लिए विशेष प्रयत्न करने होंगे। हमारे देश में कई विद्यालयों में शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन हेतु परामर्शदाता हैं जो विद्यार्थियों में व्यावसायिक तत्परता लाने के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। जहाँ इस प्रकार का कार्यक्रम उपलब्ध नहीं है वहाँ शिक्षकों को ही विद्यालय की विभिन्न क्रियाओं में व्यवसाय संबंधी तत्वों को सम्मिलित करना होगा जिससे विद्यार्थियों में स्वयं तथा व्यावसायिक जगत की जानकारी बढ़ सके। व्यावसायिक मनोविज्ञान में शोध द्वारा पता चलता है कि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले तथा निम्नबुद्धि विद्यार्थियों की व्यावसायिक तत्परता निम्न स्तर की होती है। शिक्षक ऐसे विद्यार्थियों को परामर्शदाता के पास भेजें जो उनकी व्यावसायिक परिपक्वता को सामान्य स्तर तक लाने के लिए उपयुक्त उपाय कर सकते हैं। प्राथमिक स्तर पर बच्चों की व्यावसायिक परिपक्वता का ज्ञान उनकी व्यावसायिक जागरूकता के आधार पर किया जाना चाहिए अर्थात बच्चों की स्वयं के बारे में धारणाएँ तथा विचार कितने स्पष्ट एवं सकारात्मक हैं। उन्हें अपनी क्षमताओं और रुचियों का कितना ज्ञान है तथा उनमें कार्य

संबंधी किस प्रकार की प्रवृतियों एवं मूल्यों का विकास हुआ है। अर्थात क्या बच्चे में काम को मेहनत तथा लगन से करने में रुचि है? काम किस लिए आवश्यक है इसके विषय में उसकी क्या धारणा है? उसे अपने माता-पिता, सगे संबंधियों तथा आसपास के व्यवसायों की कितनी जानकारी है आदि।

व्यावसायिक विकास में शिक्षक का योगदान

व्यावसायिक विकास प्रक्रिया की दृष्टि से स्कूली शिक्षा स्तर को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। प्रारंभिक स्तर को हम व्यावसायिक जागरूकता अथवा व्यावसायिक चेतना की अवस्था, माध्यमिक स्तर को अन्वेषण की अवस्था, तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर को व्यावसायिक निर्णय की अवस्था कह सकते हैं। इसी प्रतिमान को हमने नीचे दिए गए रेखाचित्र में प्रस्तुत किया है।

शिक्षा स्तर	1................6	7..................9	11.........................12
आयु	5................11	12...............15	16.........................17
व्यावसायिक विकास स्तर	व्यावसायिक जागरूकता	व्यावसायिक अन्वेषण	शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्णय
उद्देश्य	व्यावसायिक निर्णयों के लिए तत्परता		विषय चुनाव/व्यावसायिक प्रशिक्षण/व्यवसाय में प्रवेश

जरा सोचिए

दो ऐसी क्रियाओं के विषय में विचार कीजिए जिनकी सहायता से आप छात्रों में व्यावसायिक जागरूकता ला सकते हैं?

शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा का प्रतिरूप

विद्यार्थियों के व्यावसायिक विकास की दृष्टि से सामान्य शिक्षा में ही व्यावसायिक शिक्षा (Career Education) के तत्वों को सम्मिलित करना होगा। आत्म अध्ययन अथवा स्वयं की तथा सामाजिक तथा व्यावसायिक जानकारी जिसके महत्वपूर्ण अंश होने चाहिए।

प्रारम्भिक स्तर पर यद्यपि बालकों को व्यावसायिक निर्णय नहीं लेने पड़ते परंतु यह स्तर विद्यार्थियों को बाद में लिए जाने वाले निर्णयों के लिए तैयार करने का है।

व्यक्ति के समायोजन तथा समाज की उन्नति को ध्यान में रखते हुए अपेक्षित कार्य प्रवृतियों तथा कार्यमूल्यों के विकास के लिए शिक्षा में प्रारंभ से ही प्रयत्न किए जाने चाहिए। शिक्षक विषय शिक्षा का प्रयोग आत्मज्ञान तथा बाहरी जगत की जानकारी देने के लिए भी करें जैसे भाषा में कुशलता किस प्रकार व्यक्ति को अपने आप को तथा दूसरों को समझ पाने की क्षमता प्रदान करती है। इस तरह भाषा स्वयं को जानने तथा दूसरों के साथ समायोजन करने का माध्यम है। इसी प्रकार विज्ञान, समाजशास्त्र तथा वातावरण अध्ययन की सहायता से विद्यार्थी की स्वयं संबंधी तथा वातावरण संबंधी जागरूकता को बढ़ाया जा सकता है।

इसी प्रकार विद्यालय में कुछ ऐसी क्रियाओं का प्रावधान हो जिससे बच्चों को सभी प्रकार के कामों को देखने, समझने तथा करने के अवसर मिलें ताकि वे काम के महत्व को समझ पाएँ और जान सकें कि समाज में सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी को अपने काम को अच्छी तरह करना कितना आवश्यक है और ये तभी हो सकता है जब कि हर व्यक्ति तथा उसके द्वारा किए जाने वाले काम को उपयोगी और महत्वपूर्ण समझा जाये और समाज में उसे सम्मान मिले।

आजकल हमारे विद्यालयों में "कार्यानुभव" तथा "समाजोपयोगी उत्पादक कार्य" (एस.यू.पी. डब्ल्यू) के अंतर्गत भी इस प्रकार की क्रियाओं का प्रावधान है जिनका उद्देश्य बालकों को विभिन्न प्रकार के कामों का अनुभव प्रदान करना और उनकी क्षमताओं और रुचियों का विकास करना है। इस प्रकार के अनुभवों द्वारा संभवतः हम उनमें काम करने की इच्छा, लगन, परिश्रम, आपसी सहयोग, नेतृत्व करने, काम को योजनावद्ध, क्रमवद्ध, नियमित तथा सुरुचिपूर्ण ढंग से करने जैसी महत्वपूर्ण कार्यप्रवृतियों तथा कार्यमूल्यों का विकास भी कर पाएँगे।

विद्यालय में "हॉबी-क्लब" तथा अन्य क्रियाओं जैसे फोटोग्राफी, बागवानी, फलसब्जी उगाना, विद्यालय को साफ रखना, विद्यालय के फर्नीचर तथा अन्य समान की देखभाल व मरम्मत करना, विजली के यंत्रों की मरम्मत करना आदि के द्वारा भी बच्चों को काम करने के अवसर दिए जाएं जिससे उनमें हाथों से काम करने, मेहनत करने तथा उपयुक्त कार्यप्रवृतियों और कौशलों का विकास होगा। रुचि, लगन तथा परिश्रम से काम करने वाले, स्वच्छता से काम करने वाले, दूसरों की मदद करने वाले विद्यार्थियों को भी किसी न किसी रूप में पुरस्कृत किया जाए ताकि वे इन विशेषताओं के महत्व को समझ जाएँ। सही कार्यप्रवृतियाँ तथा कार्यकौशल, व्यक्ति को अपनी क्षमता, रुचि तथा सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के अनुकूल व्यवसाय में प्रवेश करने, उन्नति करने तथा समायोजन कर पाने में सहायक होंगे। इस प्रकार प्रारंभ में अर्जित व्यक्तित्व विशेषताएं एवं कार्यकौशल व्यक्ति की बाद की व्यावसायिक विकास प्रक्रिया को सहज वनाने में सहायक होते हैं।

सारांश–अध्याय 2

व्यावसायिक विकास क्या है?	सामान्य विकास प्रक्रिया की भाँति व्यावसायिक विकास सतत् चलने वाली प्रक्रिया है जो शिक्षा, प्रशिक्षण, व्यावसायिक निर्णय, व्यवसाय में प्रवेश, उन्नति, अनुरक्षण तथा व्यवसाय से अवकाश के संबंध में होने वाले विकास से संबंधित है।
व्यवसाय को जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग क्यों माना जाता है?	व्यवसाय ही व्यक्ति की जीवन शैली को निर्धारित करता है। व्यक्ति का समाज में स्थान, उसकी दिनचर्या, दूसरों के साथ संबंध आदि व्यवसाय द्वारा ही निर्धारित होते हैं।
सामान्य शिक्षा में व्यावसायिक तत्वों को लाना क्यों आवश्यक है?	व्यावसायिक तत्वों पर आधारित विद्यालय की क्रियाएँ व अन्य अनुभव बच्चों में उपयुक्त कार्यप्रवृतियों, कार्यकौशल, कार्य की इच्छा व लगन जागृत करने में सहायक होते हैं।

अभ्यास

शिक्षकों के लिए

1. किन्हीं दो व्यवसायों का उदाहरण देते हुए उनमें काम करने वाले व्यक्तियों की जीवन शैली में भिन्नता को स्पष्ट करिए।
2. विद्यालयी शिक्षा स्तर तक व्यावसायिक विकास की अवस्थाओं का वर्णन करिए। इस स्तर पर हुए अनुभव विकास की आने वाली अवस्थाओं में व्यक्ति के सामंजस्य को किस तरह प्रभावित करते हैं?
3. प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर बालकों की व्यावसायिक परिपक्वता के क्या-क्या मापदण्ड होंगे?

विद्यार्थियों के लिए

1. अपने माता-पिता, परिवार तथा आसपास रहने वाले व्यक्तियों के व्यवसाय की सूची बनाओ साथ ही उनसे उनके व्यवसाय में किए जाने वाले काम के बारे में जानकारी प्राप्त करो।
2. तुम्हारे पिताजी तथा तुम्हारे परिवार की दिनचर्या किस प्रकार तुम्हारे पिता के व्यवसाय द्वारा निर्धारित है? तुम्हारे आसपास किसी अन्य व्यवसाय में काम करने वाले व्यक्ति से उनकी दिनचर्या किस प्रकार भिन्न है?

आत्म-विकास के लिए

आत्म-बोध व्यावसायिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। व्यावसायिक तथा जीवन संबंधी अन्य विषयों में सही निर्णय ले पाना बहुत-कुछ इस बात पर निर्भर है कि व्यक्ति को स्वयं का अर्थात अपने विचारों, धारणाओं, मूल्यों तथा क्षमताओं का कितना ज्ञान है। आगे कुछ अध्यायों में हम आत्म-ज्ञान संबंधी चर्चा करेंगे।

3

कुछ प्रश्न

- "आत्म" अथवा "स्व" क्या है तथा इसका विकास किस प्रकार होता है?
- बच्चे, माता-पिता, शिक्षक तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों के बीच का आपसी व्यवहार तथा अन्य घटनाएँ व्यक्ति की आत्मधारणा को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?
- सकारात्मक तथा वास्तविक आत्मधारणा के विकास एवं वृद्धि के लिए विद्यालय में किस प्रकार के अनुभवों तथा क्रियाओं का आयोजन किया जाना चाहिए?

उद्देश्य

इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि–

- स्कूल तथा घर में हुए अनुभव आत्मधारणा के विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।
- आत्मधारणा तथा स्कूली उपलब्धि में क्या संबंध है।
- सकारात्मक आत्मधारणा बालक की सीखने की क्षमता को बढ़ा देती है।
- शिक्षा में "आत्म ज्ञान" भी एक विषय के रूप में होना चाहिए।
- बालकों की व्यक्तित्व-विशेषताओं के अधिकतम विकास के लिए आवश्यक है कि उनमें सकारात्मक आत्मधारणा के विकास के लिए प्रयत्न किए जाएँ।

स्वयं को कैसे जानें

स्वयं निर्णय लेने तथा समस्याओं के समाधान की क्षमता "स्वयं के ज्ञान" पर आधारित होती है। व्यक्ति का स्वयं अथवा "आत्म" उसके विचारों, धारणाओं, मूल्यों और क्षमताओं का मिश्रण है। व्यक्ति के व्यवहार तथा क्रियाओं में भी उसके इसी "स्वयं" की झलक होती है। यहाँ तक कि वातावरण में हम जो भी देखते हैं, जैसा सुनते हैं उन सबका अर्थ भी व्यक्ति के लिए "स्वयं" के अनुसार ही होता है। हम अपने विषय में जैसा सोचते हैं, जैसे विचार रखते हैं, वही हमारी "आत्मधारणा" कहलाती है। संतुलित व्यक्तित्व के विकास में "आत्मधारणा" का बहुत महत्व है। व्यक्ति की आत्मधारणा जितनी स्पष्ट, वास्तविक एवं सकारात्मक होगी उसका व्यक्तित्व भी उतना ही संतुलित होगा।

"स्व" का अर्थ

"स्व" अथवा "आत्म" के विकास में माता-पिता, परिवार के अन्य सदस्य तथा अध्यापक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संक्षेप में हम यहाँ चर्चा करेंगे कि "स्व" अथवा "आत्म" क्या है और "आत्मधारणा" का विकास कैसे होता है।

"स्व" का निर्माण व्यक्ति के जीवन में घटी घटनाओं के फलस्वरूप होता है विशेषकर जीवन के प्रारंभिक वर्षों में माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के संपर्क में घटी हुई घटनाएँ आत्मविकास पर अत्यधिक प्रभाव डालती हैं। इसीलिए "स्व" का जो रूप प्रारंभ में संगठित हो जाता है बाद के जीवन में व्यक्ति उसी के अनुरूप व्यवहार और क्रियाओं को करता है। "स्व" के इसी व्यवस्थित रूप को "आत्मसंबोध", "आत्म-धारणा" आदि की संज्ञा दी जाती है।

बच्चे के व्यवहार और उसकी स्कूली उपलब्धियों को समझने के लिए अध्यापक के लिए यह जानना आवश्यक है कि बच्चे ने किस प्रकार की "आत्मधारणा" के साथ स्कूल में प्रवेश किया है। यदि उसकी अपने विषय में धारणा निम्न या तुच्छ स्तर की है तो वह शायद अपनी योग्यता के अनुरूप उपलब्धि न कर पाए तथा स्कूल के दूसरे कार्यक्रमों तथा दूसरे बच्चों के साथ पारस्परिक व्यवहार में स्वेच्छा से आगे न आये। ऐसे बच्चे की आत्मधारणा में परिवर्तन लाने के लिए अध्यापक तथा माता-पिता को विशेष प्रयत्न करने होंगे जिसकी चर्चा हम बाद में करेंगे।

आत्मधारणा का विकास

नवजात शिशु के पास शारीरिक "स्व" के अतिरिक्त कुछ नहीं होता। उसे चाहिए क्षुधा की पूर्ति और निद्रा की प्राप्ति। उसका "स्व" शारीरिक आवश्यकताओं का संगठन है। धीरे-धीरे उसे अपने व माता-पिता के बीच शारीरिक भिन्नता का ज्ञान होता है फिर वह अपने और दूसरों के विषय में धारणाएँ और विचार बनाता है। यदि माता-पिता उसकी आवश्यकताओं को समझते हैं, समय पर उनकी संतुष्टि करते हैं तो उसे पर्याप्तता का अनुभव होता है। कोई गलत काम करने पर यदि

उसे धैर्य और स्नेह के साथ रोका जाता है और अच्छा काम करने पर उसकी प्रशंसा की जाती है तो उसकी आत्मधारणा स्पष्ट एवं सकारात्मक बनती है। इसके अतिरिक्त घर में विभिन्न कार्यों को करने की उसे जितनी अधिक सुविधाएँ मिलती है उतना ही उसे किसी काम को कर पाने और न कर पाने (योग्यता), उसमें आनंद मिलने और न मिलने (रुचि) का ज्ञान होता है। किसी काम का समर्थन और किसी का असमर्थन होने पर उसे अच्छे-बुरे, सही और गलत (मूल्यों) का बोध होता है। इस तरह स्वयं की धारणाएँ, मूल्य आदि बनते जाते हैं और "मानसिक स्व" का प्रादुर्भाव होता है।

परिवार के बाहर अगल-बगल बच्चा अपनी उम्र के अन्य बच्चों, मित्रों के साथ सम्मिलित होता है। मित्रों के प्रति और मित्रों की उसके प्रति धारणाएँ बनती हैं जो उनके आपसी व्यवहार और प्रक्रियाओं द्वारा दृढ़ होती जाती हैं। इसके बाद कुछ और बड़ा समाज उसे तब मिलता है जब वह स्कूल में पढ़ने जाता है। स्कूल के साथियों, शिक्षकों के संपर्क में आकर उनके प्रति भी उसके विचार बनते हैं। शिक्षकों का व्यवहार तथा मूल्यांकन भी यदि उसकी अब तक की बनाई गई आत्मधारणा के अनुकूल होता है तो उसकी इस आत्मधारणा की पुष्टि और वृद्धि हो जाती है परंतु प्रतिकूल होने पर उसकी आत्मधारणा अस्तव्यस्त और अव्यवस्थित हो जाती है। जीवन की अन्य परिस्थितियों में भी यदि बच्चे को अपनी इच्छा शक्ति, विचारों, भावनाओं को अभिव्यक्त करने के अवसर नहीं मिलते तो उसमें "स्व" का कोई स्पष्ट रूप सामने नहीं आ पाता। किंतु साधारणतया घर, स्कूल तथा अन्य सामाजिक नियमों के पालन तथा आवश्यकताओं के संतुलन के फलस्वरूप, "स्व" का कोई न कोई स्वरूप संगठित हो ही जाता है। कुछ और बड़े होने पर समाज, देश और विश्व के प्रति भी उसकी धारणाएँ और विचार बनते हैं। इस प्रकार व्यक्ति अपने "स्व" का विकास एवं विस्तार करता जाता है।

जिन व्यक्तियों की अपने विषय में धारणाएँ सुनिश्चित, स्पष्ट तथा सकारात्मक होती हैं उनका व्यक्तित्व संतुलित होता है तथा उनके व्यवहार में परिवर्तन की संभावना भी अधिक होती है। इसलिए वे किसी भी प्रकार की परिस्थितियों में समायोजन कर पाने में सफल होते हैं।

सकारात्मक तथा वास्तविक "स्व" का ज्ञान इस बात पर निर्भर है कि माता-पिता, अध्यापक तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति बच्चे की विशेषताओं का किस सीमा तक सही मूल्यांकन करते हैं।

आत्मधारणा तथा स्कूली सफलता

छात्र की स्कूल में सफलता बहुत कुछ उसकी आत्मधारणा पर निर्भर होती है। शैक्षिक शोध द्वारा ज्ञात होता है कि शैक्षिक उपलब्धि आत्मधारणा से संबंधित है। देखा गया है कि नकारात्मक तथा निम्न आत्मधारणा रखने वाले छात्रों की शैक्षिक तथा अन्य क्रियाओं में उपलब्धि भी निम्न स्तर

जरा सोचिए

बाल्यकाल में माता-पिता अथवा परिवार के किसी भी सदस्य के साथ हुई ऐसी घटनाओं के विषय में सोचिए जिनके कारण आपकी अपने बारे में धारणाओं पर प्रभाव पड़ा हो।

की होती है। ऐसे छात्रों में आत्मविश्वास तथा

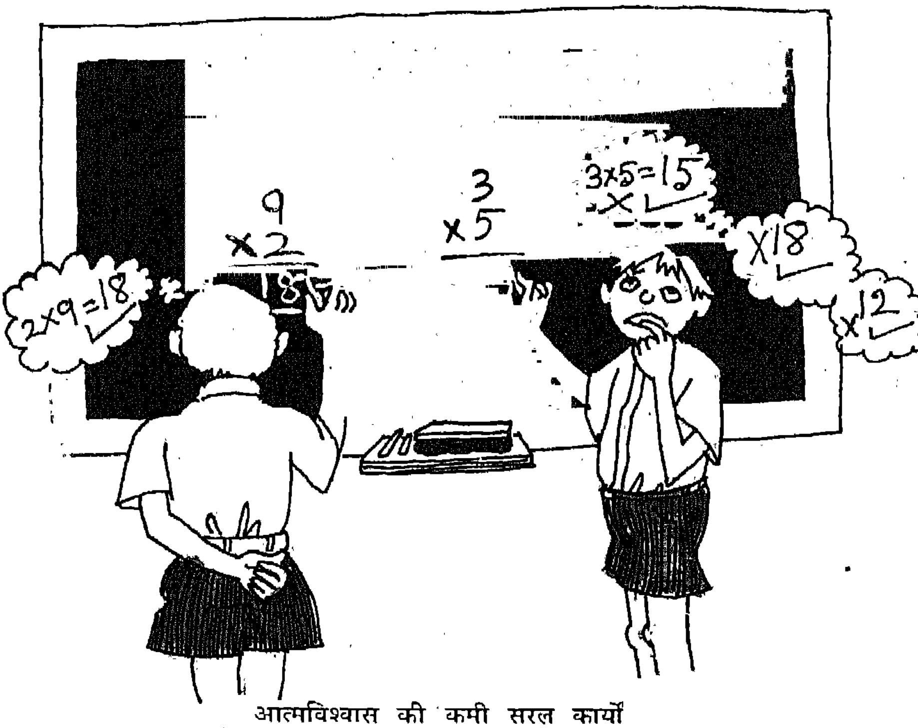


निम्न आत्मधारणा
नैराश्य और हीन भावना
को जन्म देती है

आत्मसम्मान की कमी होती है। ऐसे बच्चे कक्षा में तथा बाहर किसी कार्य में भाग लेने के लिए स्वेच्छा से आगे नहीं आते। निम्न तथा नकारात्मक धारणााओं के कारण उनमें स्वाभाविक जिज्ञासा तथा सृजनात्मक योग्यता का भी अवरोध हो जाता है। उन्हें अपनी सफलता पर संदेह रहता है। हीनता की भावना होने के कारण वे किसी भी ऐसी स्थिति का सामना करने से घबराते हैं जहाँ लज्जा अथवा असफलता मिलने की आशंका हो।

सीखने का वातावरण तथा आत्मबिंब में वृद्धि

आत्मधारणा ही व्यक्ति के आत्मबिंब को बनाती है। सकारात्मक आत्मबिंब सीखने की योग्यता को बढ़ाता है। वातावरण के प्रभाव के फलस्वरूप बनी आत्मधारणा स्कूली अनुभवों से या तो सबल



आत्मविश्वास की कमी सरल कार्यों
को भी कठिन बना देती है

हो जाती है अथवा निर्बल हो सकती है। अधिकतर निम्न सामाजिक-आर्थिक पारिवारिक स्तर से आए हुए छात्रों का आत्मबिंब नकारात्मक होता है। विद्यालय में यदि उनकी क्षमताओं के अनुकूल पठन-विधियों तथा क्रियाओं का प्रावधान हो तो उनके नकारात्मक आत्मबिंब को सुधारा जा सकता है।

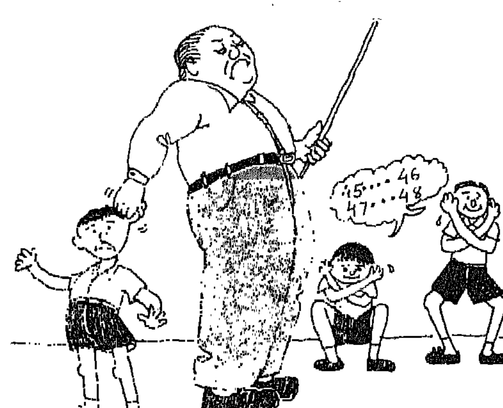
इसमें संदेह नहीं कि बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए माता-पिता तथा अध्यापकों को बच्चों में सकारात्मक आत्मबिंब के विकास के लिए प्रयत्न करने चाहिए। ऐसा तभी हो सकता है जब कि बच्चों को उनकी क्षमताओं, योग्यताओं के अनुरूप क्रियाओं में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाएँ साथ ही वे उनकी क्षमताओं के अनुरूप ही उनसे अपेक्षाएँ रखें और उचित लक्ष्य-निर्धारण में सहायता करें तभी वे उनकी व्यक्तिगत पहचान बनाने, सम्मान, मान्यता तथा समर्थन-प्राप्ति जैसी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होंगे। सामर्थ्य, मान तथा क्षमता का अनुभव होने पर ही बच्चों में सकारात्मक आत्मबिंब का विकास हो सकता है।

आत्मबिंब की वृद्धि के लिए अध्यापक नीचे लिखे सिद्धान्तों को अपना सकते हैं।

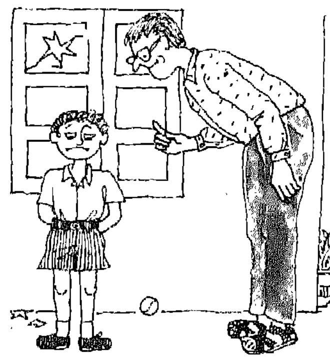
- व्यक्तिपरक (Individualized) शिक्षण-विधि का प्रयोग।
- बच्चे की भावनाओं, आकांक्षाओं, मनोवृत्तियों तथा विचारों पर अधिक महत्व।
- प्रत्येक बच्चे की सामर्थ्य में विश्वास।
- डराने, धमकाने, मारपीट अथवा सज़ा देने का कम-से-कम प्रयोग तथा अपराध के कारणों को समझने का प्रयास।
- बच्चों को असफलता की अनुभूति देने के स्थान पर उनके द्वारा सीखे गए कौशल का मूल्यांकन।

इन सिद्धांतों को अपनाने के फलस्वरूप आशा की जाती है कि अध्यापक स्कूल में एक ऐसा वातावरण बना सकेंगे जो भयरहित और चिन्तारहित होगा, परंतु उचित मनोविकास के लिए यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक विद्यार्थी को सम्मान की दृष्टि से देखा जाय, प्रत्येक विद्यार्थी की सामर्थ्य और क्षमता में विश्वास किया जाय चाहे कोई

> **जरा सोचिए**
> अपने विद्यालयी जीवन को याद करके सोचिए कि विद्यालय के वातावरण का तथा अध्यापकों के व्यवहार का आपके व्यक्तित्व पर सकारात्मक अथवा नकारात्मक किस प्रकार का प्रभाव हुआ।



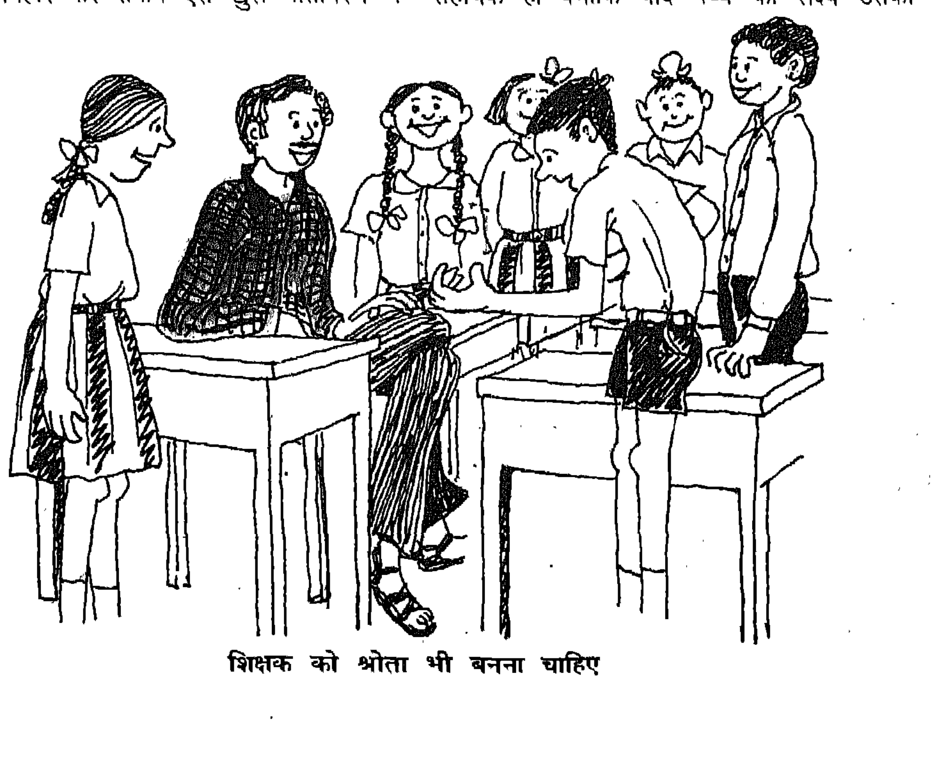
दंड के स्थान पर अपराध के कारणों को समझें



मानसिक रूप से पिछड़ा अथवा शारीरिक रूप से अपंग ही क्यों न हो। उसकी वैयक्तिकता को बोझ न समझकर समाज की परिसंपत्ति माना जाय।

भयरहित तथा चिन्तारहित वातावरण ही बच्चों को एक स्वस्थ मानसिक वातावरण प्रदान कर सकता है जहाँ वे खुलकर विचारों को व्यक्त कर पाएँ और दूसरों के साथ सहज और स्वाभाविक रूप से व्यवहार कर सकें। ऐसे खुले वातावरण में ही बच्चे निःसंकोच होकर स्कूल की विभिन्न क्रियाओं में भाग लेने के लिए आगे बढ़ेंगे जिससे उन्हें अपनी विशेष योग्यताओं को पहचानने व विकसित कर पाने में भी सहायता मिलेगी। ऐसा ही वातावरण बच्चों में सकारात्मक आत्मधारणा की नींव डाल सकता है। यदि विद्यालय में अध्यापक, प्रशासक तथा अन्य व्यक्ति बच्चों की भावनाओं और प्रवृत्तियों को विशेष मान्यता दें तो वे अवश्य ही उसकी सकारात्मक आत्मधारणा के विकास एवं वृद्धि में सहायक होंगे। यह भी आवश्यक है कि शिक्षक केवल विषय संबंधी शिक्षा न देकर एक सहायक तथा मार्गदर्शक बने।

स्कूल के कार्यों की प्रतिपुष्टि (Feedback) इस प्रकार हो कि सही कार्य के लिए प्रशंसा और गलतियों तथा कमियों को दूर करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाए। शिक्षक बच्चों को उनकी क्षमताओं के अनुरूप ही ध्येय-निर्धारण करने में सहायक हों क्योंकि यदि बच्चे का लक्ष्य उसकी



शिक्षक को श्रोता भी बनना चाहिए

सामर्थ्य से बहुत परे है तो उसे प्रायः असफलता का ही अनुभव होगा जो उसके आत्मविश्वास को कम करेगा। दूसरी ओर लक्ष्य यदि बहुत निम्नस्तर के हैं तो काम नीरस और अरुचिकर लगेगा। बच्चों को सफलता तथा उपलब्धि का अनुभव तभी हो सकता है जबकि विद्यालय के विभिन्न कार्य चुनौतीपूर्ण हो। इस तरह शिक्षक शिक्षण के साथ-साथ ''मानव सुकरक'' (Human Fccilitator) भी बन सकेंगे।

हमें शिक्षण पद्धति में कुछ इस प्रकार के सिद्धांतों को लाना होगा जिससे बच्चों में छिपे हुए गुणों को उभरने के अवसर मिलें। इसके लिए हमने व्यक्तिपरक शिक्षण-विधि का उल्लेख किया है जिसके अनुसार शिक्षक को प्रत्येक विद्यार्थी-समूह की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना होगा। यह भी आवश्यक है कि शिक्षक शिक्षण-विधि को एक सृजनात्मक रूप दें जिसकी कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

- शिक्षक को अपनी प्रभुता का आभास कम तथा बच्चों द्वारा अपने प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर ढूँढ पाने की क्षमता का आभास अधिक हो।
- शिक्षक वक्ता न होकर श्रोता बने तथा शिक्षक, विद्यार्थी-समूह अथवा विद्यार्थी की भावनाओं एवं विचारों को प्रतिबिंबित करने के मात्र साधन हों।
- बच्चों से मुक्तोत्तर (Open ended) प्रश्न पूछे जायें जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रकार के उत्तर सोचने और दिए जाने की संभावना हो।

इस प्रकार का शिक्षण ही, शिक्षक के लिए चुनौतीपूर्ण बन सकेगा। शिक्षक यदि इन सिद्धांतों को अपने शिक्षण का आधार बनाएँ तो संभव है वे बच्चों में सृजनात्मकता तथा सकारात्मक आत्मधारणा का विकास कर पाने में सफल हों।

आत्म–एक विषय

विद्यालय में ''आत्म'' एक अध्ययन का विषय होना चाहिए। विद्यालय में यदि निर्देशन तथा परामर्श का कार्यक्रम चलाया जा रहा हो तो ''आत्म अध्ययन'' उसका एक महत्वपूर्ण अंश होगा। परामर्श-दाता, अध्यापक अथवा मनोवैज्ञानिक, निर्देशन के लिए निर्धारित समय में 'स्वयं के ज्ञान' से संबंधित क्रियाओं का आयोजन कर सकते हैं। यदि विद्यालय में निर्देशन-सेवाएँ उपलब्ध न हों तो एक मनोवैज्ञानिक शिक्षा का कार्यक्रम प्रारंभ किया जाए जिसमें उन्हें आत्मज्ञान संबंधी जानकारी दी जाए। इस कार्यक्रम में कुछ ऐसी क्रियाएँ होंगी जो बच्चे स्वयं तथा कुछ समूह में करेंगें। स्वयं की जाने वाली क्रियाओं से उन्हें अपने विषय में सोचने का अवसर प्राप्त होगा कि उन्हें क्या अच्छा लगता है क्या नहीं, किन कार्यों में वे अपना अधिकांश समय बिताते हैं अर्थात उनके विचार में उनके व्यक्तित्व की क्या विशेषताएँ हैं साथ ही दूसरों के विचार में वे कैसे हैं आदि। समूह में की जाने वाली क्रियाओं से उन्हें दूसरों से अपने विषय में जानकारी मिलती है जिससे उनकी अपने विषय में

जरा सोचिए

यदि आपके लिए फिर से स्कूल जाना संभव हो तो आप वहाँ किस प्रकार का वातावरण पसद करेंगे? अपने किसी ऐसे शिक्षक या अध्यापक के बारे में सोचिए जिन्होंने आपकी सीखने की अभिप्रेरणा को प्रभावित किया हो।

बनाई गई आत्मधारणा की पुष्टि होती है। पारस्परिक व्यवहार के द्वारा ही आत्मधारणा का वास्तविक स्वरूप सामने आता है। मनोवैज्ञानिक जोसेफ लफ्त के अनुसार किसी भी व्यक्ति के "स्व" को चार भागों में बाँटा जा सकता है।

मुक्त स्व (Open Self)– वह जिसकी जानकारी स्वयं तथा दूसरों को होती है।

छिपा स्व (Hidden Self)– जो स्वयं को ज्ञात है औरों को नहीं।

अंध स्व (Blind Self)– जो औरों को ज्ञात है स्वयं को नहीं।

अज्ञात स्व (Unknown Self)– जो किसी को ज्ञात नहीं।

जिन व्यक्तियों में आत्मज्ञान की कमी होती है वे अपने वास्तविक "स्व" से अनभिज्ञ रह जाते हैं और उनके "स्व" का अधिकांश भाग "गुप्त", "छिपा हुआ", अथवा "अज्ञात" रह जाता है। ऐसे ही व्यक्ति अपनी योग्यताओं, क्षमताओं को न पहचान पाने के कारण उनका प्रयोग अपने सुख तथा समाज की उन्नति के लिए नहीं कर पाते जिससे उनमें असंतोष और नैराश्य की भावना बनी रहती है। व्यक्ति में आत्म जागरूकता जितनी अधिक होगी उतना ही वह अपनी आत्मशक्ति व अपने आत्मज्ञान का प्रयोग स्वयं के विकास अर्थात अपनी क्षमताओं के विकास तथा कमियों को दूर करने के लिए कर पाएगा। शिक्षा के माध्यम से इस प्रकार की जागरूकता लाई जा सकती है। कुछ क्रियाओं का उल्लेख हम यहाँ करेंगे। बच्चों की परिपक्वता, परिस्थितियों, समय तथा साधनों की सुलभता को देखते हुए शिक्षक यदि स्वयं भी कुछ क्रियाएँ सोच पाएँ तो ये क्रियाएँ अधिक लाभकारी सिद्ध होंगीं।

इन मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को हमने "भौतिक स्व", "सांवेगिक स्व" तथा "चिन्तन स्व" के ज्ञान के लिए की जाने वाली क्रियाओं में विभाजित किया है।

भौतिक स्व

अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिए भौतिक आत्मबोध पहला कदम होगा। इसके अंतर्गत बालकों को उनके शारीरिक अंगों एवं प्रक्रियाओं की जानकारी दी जाए। शारीरिक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वच्छता तथा पौष्टिक आहार पर निर्भर है। स्वास्थ्य संबंधी तथा खानपान संबंधी आदतें इसी आयु में बनती हैं। इसलिए अध्यापक थोड़ा समय इस प्रकार की जानकारी देने के लिए अवश्य निकालें कि सीमित साधनों में भी बच्चे स्वास्थ्य संबंधी नियमों का पालन किस प्रकार करें? सस्ता पौष्टिक आहार कैसे प्राप्त किया जाए आदि? साथ ही इस जानकारी का प्रयोग किस प्रकार शारीरिक शक्ति को बढ़ाने, बीमारियों से बचने और शारीरिक अंगों के विकास और दोषों को दूर करने के लिए किया जाय इसकी भी चर्चा की जाए।

संबद्ध क्रियाकलाप

अपने बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखिए जिनमें आपके व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएँ प्रदर्शित होती हों। बातचीत द्वारा अथवा लिखित रूप में इसे अपने किसी अभिन्न मित्र अथवा निकट संपर्क में रहने वाले व्यक्ति के साथ बाँटिए। देखिए कि आपकी अपने विषय में तथा दूसरों की आपके विषय में धारणाओं में कितनी समानता अथवा अंतर है?



हमारे देश में शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग क्रियाओं का प्रयोग सदियों से होता आ रहा है। इसके महत्व को देखते हुए हमारे कई विद्यालयों में योग शिक्षा के लिए शिक्षक नियुक्त किए गए हैं। विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा के अंतर्गत भी विभिन्न प्रकार के व्यायाम सिखाए जाते हैं। योग शिक्षा में विभिन्न यौगिक क्रियाओं द्वारा अंगों में स्फूर्ति तथा शारीरिक शक्ति को बढ़ाया जा सकता है। "ध्यान" द्वारा तथा "विश्राम" द्वारा अंगों के शिथिलीकरण (Relaxation) की विधियाँ भी बच्चों को बताई जाती हैं। इन सभी विधियों से शारीरिक शक्ति को नियंत्रित किया जा सकता है। विद्यालयों में "योग शिक्षा", "व्यायाम", "ध्यान" आदि को शिक्षा का एक अंग इसीलिए बनाया गया है ताकि बच्चों में "शारीरिक स्व" संबंधी जागरूकता लाई जा सके। अच्छा स्वास्थ्य बालक में एक आत्मविश्वास उत्पन्न करता है जो कि सकारात्मक आत्मधारणा के लिए महत्वपूर्ण है।

सांवेगिक तथा चिन्तन "स्व"

इन क्रियाओं द्वारा बच्चों को उनकी भावनाओं, संवेगों तथा मनस्थिति का अनुभव कराया जाता है और विभिन्न परिस्थितियों, विषयों से संबंधित विचारों, मूल्यों, तर्कों द्वारा उन्हें अपने "चिन्तन स्व" तथा "सांवेगिक स्व" से अवगत कराया जाता है। हालाँकि हमें "आत्म" को एक संपूर्ण एकक के रूप में ही देखना होगा क्योंकि आत्म के ये विभिन्न पक्ष (भौतिक, सांवेगिक एवं चिन्तन) एक दूसरे से संबंधित हैं और इन क्रियाओं में सब एक साथ भी प्रभावित हो सकते हैं जैसे ध्यान का प्रयोग शारीरिक विश्रांति के साथ-साथ विचारों और भावनाओं को केंद्रित करने तथा नियंत्रित करने के लिए भी होता है।

यहाँ चर्चा के लिए हम किसी क्रिया में भावनाओं तथा किसी में विचारों को अधिक महत्व देंगे तथा कुछ सामान्य रूप से आत्मज्ञान के सभी पक्षों पर केंद्रित होंगी।

भावनाएँ हमारे अनुभवों का एक महत्वपूर्ण अंश होती हैं। प्रतिदिन हम अकेले या सबके साथ विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करते हुए कभी प्रसन्नता, कभी दुख, कभी उदासी, कभी उत्तेजना, कभी परेशानी या घबराहट, कभी संतोष या असंतोष आदि भावनाओं का अनुभव करते हैं। सांवेगिक क्रियाओं की सहायता से बच्चे का ध्यान उसके द्वारा अधिक अनुभव की जाने वाली भावनाओं की ओर दिलाया जाता है ताकि वे इन विभिन्न भावनाओं के अंतर को पहचान सकें, किस प्रकार की भावनाओं की उसके जीवन में बहुतायत है क्योंकि सकारात्मक अथवा नकारात्मक भावनाएँ ही आत्मधारणा व आत्मविम्ब को प्रतिबिम्बित करती हैं। यदि बच्चे को प्रसन्नता, क्षमता, प्रेम, आशा, आनंद से संबंधित भावनाओं की अनुभूति अधिक होती हो तो उसकी आत्मधारणा सकारात्मक होगी इसके विपरीत जिसे दुख, पीड़ा, संशय, भय, नैराश्य से संबंधित भावनाओं की अनुभूति अधिक होती है उनमें नकारात्मक आत्मधारणा के विकास की संभावना अधिक होगी।

हमारे विचार, विश्वास, प्रवृतियाँ तथा मूल्य हमारे "चिन्तन स्व" को बनाते हैं प्रायः हमारी नकारात्मक भावनाएं तथा व्यवहार हमारे गलत, असंगत, अवास्तविक, विचारों, विश्वासों तथा मूल्यों के कारण होती हैं। सही एवं स्पष्ट आत्मधारणा के विकास के लिए विचारों एवं मूल्यों का स्पष्टीकरण आवश्यक है। यहाँ हम कुछ ऐसी क्रियाओं का उल्लेख करेंगे जिनसे विद्यार्थियों को अपने विचारों एवं मूल्यों के स्पष्टीकरण में सहायता मिलेगी।

यहाँ कुछ अभ्यास दिए जा रहे हैं जिन्हें शिक्षक विद्यार्थियों से कराएँ इससे विद्यार्थियों की अपने विषय में विचारों, धारणाओं और मूल्यों की पुष्टि होगी। साथ ही वे अपनी उन सभी भावनाओं, इच्छाओं और विचारों को अनुभव कर पाएँगें जो "आत्म" के विभिन्न अंश हैं। इससे उन्हें "आत्म परिचय" में सहायता मिलेगी। इस प्रकार की क्रियाओं से बच्चों में उस "अंतर्दृष्टि" तथा अंतर्शक्ति का विकास हो सकेगा जिससे उन्हें जीवन में आत्म-निर्देशन मिल सके।

जरा सोचिए

कुछ ऐसी परिस्थितियों व घटनाओं के विषय में सोचिए जिनके **फलस्वरूप** आपको बहुत आनंद अथवा प्रसन्नता का अनुभव हुआ हो। उस समय आपको किस तरह की भावनाओं का अनुभव हुआ? इसी तरह अप्रिय परिस्थितियों व घटनाओं के फलस्वरूप अनुभव की जाने वाली अपनी भावनाओं के विषय में भी विचार कीजिए।

स्वयं की दृष्टि में "मैं"

अभ्यास 1

5 से 8 वर्ष की आयु के वालकों एवं बालिकाओं के लिए।

उद्देश्य--इस अभ्यास द्वारा शिक्षक यह जान सकेंगे कि विद्यार्थी की अपने तथा अपने आसपास के महत्वपूर्ण व्यक्तियों और वस्तुओं के विषय में क्या धारणा है।

विधि--यह क्रिया स्कूल में कला परियोजना के रूप में की जा सकती है।

सामग्री- एक बड़ा चार्ट पेपर, पेंसिल आदि।

वच्चों को शीशे में देखकर अपना चित्र वनाने के लिए कहें। साथ ही उन्हें अपने माता पिता, भाई-वहन, दादा-दादी, पालतू पशु, अन्य प्रिय लगने वाली वस्तुएँ जैसे अच्छे लगने वाले खिलौने, फूल, पौधे, घर की वस्तुएँ आदि के भी चित्र एकत्र करने के लिए कहें। इस सभी चित्रों को भी वच्चे चार्ट में लगाएँ।

वच्चों में व्यावसायिक जागरूकता लाने के ध्येय से उन्हें माता-पिता तथा अन्य व्यक्तियों के चित्रों के नीचे उनके व्यवसाय लिखने के लिए कहें।

अभ्यास 2

9 से 11 वर्ष के वालक/वालिकाओं के लिए।

उद्देश्य--इन क्रियाओं से वच्चों को अपनी नकारात्मक तथा सकारात्मक भावनाओं की पुष्टि में सहायता मिलेगी।

विधि--अध्यापक बच्चों के साथ प्रतिदिन अनुभव की जाने वाली भावनाओं के विषय में वातचीत करें। विभिन्न प्रकार की सकारात्मक तथा नकारात्मक भावनाओं को प्रकट करने वाले शब्दों की सूची बनाकर कक्षा में लगाई जाय। इस सूची में अच्छी भावनाओं को प्रदर्शित करने वाले शब्द जैसे खुश, उत्तेजित, प्रसन्नचित, प्रोत्साहित आदि तथा कुछ शब्द नकारात्मक भावनाओं वाले जैसे निराश, दुखी, उदास, भयभीत, अकेला, क्रोधित आदि हों।

1. अपनी भावनाओं को लिखने के लिए विद्यार्थियों से एक छोटी नोटबुक बनाने के लिए कहें। उन्हें उस पर एक शीर्षक तथा उनकी कुछ भावनाओं को प्रदर्शित करता हुआ चित्र लगाने के लिए भी कहा जाय। शीर्षक कुछ इस प्रकार के हो सकते हैं जैसे 'मेरी भावनाएँ', 'मेरे मनोभाव', 'मेरे अनुभव' आदि।

बच्चों को हर पृष्ठ पर दिन में दो-तीन बार, उस समय अनुभव की जाने वाली भावनाओं को लिखने के लिए कहें। भावनाओं को और वास्तविक रूप देने के लिए चित्र, ड्राइंग आदि का प्रयोग भी किया जा सकता है।

एक सप्ताह बाद बच्चे अपनी "भावनाओं की पुस्तक" या डायरी को पढ़ें और देखें कि कौन-सी भावनाओं का अनुभव उन्हें बार-बार हो रहा है। इस नोट बुक को यदि बच्चे चाहें तभी औरों को दिखाया जाए, अन्यथा नहीं। जो बच्चे उसे औरों के साथ बाँटना चाहें वे अपनी भावनाओं के विषय में अपने साथियों को बताएँ ताकि उन्हें ये जानकारी मिल सके कि उनकी व औरों की भावनाओं में क्या अंतर है। यदि कुछ विद्यार्थियों की नकारात्मक भावनाएँ अधिक हैं तो बच्चे उनका सामना किस प्रकार करें और उन्हें किस प्रकार सुधारें इसकी भी चर्चा की जाए।

2. **नीचे दिए वाक्यों को पढ़कर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :**

मुझे अच्छा लगता है जब

....

....

....

....

....

मुझे बुरा लगता है जब

....

....

....

....

....

मुझे जब अच्छा लगता है तो मैं

....

....

....

....

....

मुझे जब बुरा लगता है तो मैं

....

....

....

....

....

अभ्यास 3

9 से 11 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए।

उद्देश्य– स्वयं के प्रति जागरूकता लाने के लिए।

सामग्री– एक बड़ा चार्ट पेपर।

विधि– प्रत्येक विद्यार्थी को आधे चार्ट में अपना चित्र बनाने के लिए कहें। चित्र के नीचे उसे परिवार संबंधी सूचना, उसके द्वारा किए जाने वाले रुचिकर व अरुचिकर कार्य, प्रिय व अप्रिय लगने वाली वस्तुएँ और व्यक्तियों की सूचना देने के लिए कहें। ये सूचना लिखकर देने के साथ-साथ, चित्रों द्वारा, असली वस्तुएँ लगाकर, कार्टून आदि बनाकर भी दी जा सकती है। इस परियोजना में बच्चों को अपनी कल्पना और सृजनात्मकता दिखाने का अवसर मिलेगा। प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा दी गई परियोजना अनोखे ढंग की होगी। बच्चे एक दूसरे के चार्ट को देखेंगे और उन पर दी गई सूचना से वे एक दूसरे के विषय में जानेंगे। बच्चे यह भी जान सकेंगे कि परिवार का तथा कक्षा का एक अंग होते हुए भी उनका एक अलग व्यक्तित्व है। उनकी रुचियाँ, प्रिय तथा अप्रिय लगने वाली वस्तुएँ भिन्न हैं। संभव हो तो प्रत्येक विद्यार्थी के चार्ट को बच्चो के डेस्क के पास कक्षा में लगाया जाए।

अभ्यास 4

8 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों के लिए।

द्देश्य–आत्म जागरूकता, आत्मस्वीकृति एवं आत्म सम्मान के लिए।

नीचे दी हुई क्रियाओं से बच्चों को अपने व्यक्तित्व के सकारात्मक तत्वों के ज्ञान का मिलेगा जो उन्हें आत्मस्वीकृति की ओर ले जाएगी।

विधि– बच्चों से जो उन्हें अपने बारे में अच्छा लगता है और जो काम वह अच्छी तरह से कर सकते हैं उसकी सूची बनाने के लिए कहा जाए। साथ ही उनके अपने विचार में दूसरों को उनके बारे में क्या अच्छा लगता है उसे भी लिखें। इस सूचना को बालक/बालिका अपने साथी के साथ बाँटें।

सकारात्मक आत्मबिम्ब वाले बच्चे को इस प्रकार की सूची बनाने में कोई समय नहीं लगेगा। अध्यापक इस विधि से सकारात्मक आत्मबिम्ब वाले विद्यार्थियों का आसानी से पता लगा सकते हैं।

निर्देश– तुम जो कार्य अच्छी तरह कर सकते हो उन्हें लिखकर नीचे दिए वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति करो।

(1) मैं....................................सकता/सकती हूँ

(2) मैं....................................सकता/सकती हूँ

(3) मैं....................................सकता/सकती हूँ

(4) मैं....................................सकता/सकती हूँ

मुझे अपनी निम्नलिखित बातें पसंद हैं।

....

....

....

....

दूसरों को मेरी निम्नलिखित बातें अच्छी लगती हैं।

....

....

....

....

दूसरों की दृष्टि में "मैं"

अभ्यास 5

9 से 11 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए।

उद्देश्य– इस अभ्यास से बच्चे को अपने विषय में दूसरों की धारणाओं का पता लग सकेगा। इससे उनके आत्मसम्मान में भी वृद्धि होगी।

एक पृष्ठ पर प्रत्येक बच्चे को अपना नाम लिखने के लिए कहें। इस पृष्ठ को एक से दूसरे साथी को देते हुए पूरे समूह में घुमाया जाए। प्रत्येक विद्यार्थी को पृष्ठ पर उस बच्चे (जिसका उस पर नाम लिखा है) की कोई अच्छी लगने वाली व्यक्तित्व-विशेषता लिख़ने के लिए कहा जाय। जब पृष्ठ विद्यार्थी के पास वापिस आ जाए तो वह दूसरों द्वारा लिखी गई व्यक्तित्व-विशेषताओं को दूसरे विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाए, दूसरे साथी ताली बजाकर अथवा कुछ कहकर प्रशंसा करें।

अभ्यास 6

उद्देश्य– ''आत्म सम्मान'' (Self Esteem) में वृद्धि के लिए।

आठ-दस विद्यार्थियों के समूह बना दिए जाएँ। उनसे कुछ ऐसे विख्यात व्यक्तियों के नाम (जितने व्यक्ति समूह में हैं) लिखने के लिए कहें जिन्होंने किसी क्षेत्र में ख़्याति पाई हो जैसे फिल्म अथवा दूरदर्शन कलाकार, कोई बड़ा आविष्कारक अथवा वैज्ञानिक, जाने पहचाने नेता, समाज सुधारक आदि। समूह के प्रत्येक व्यक्ति का नाम किसी विख्यात व्यक्ति के साथ जोड़ा जाए। एक प्रसिद्ध व्यक्ति के सामने कई विद्यार्थियों के नाम हो सकते हैं। बाद में इस मिलान के कारणों की समूह में चर्चा की जाए।

अभ्यास 7

उद्देश्य–दूसरों के साथ सामंजस्य कर पाने की क्षमता तथा दूसरों की दृष्टि में स्वयं का सकारात्मक अथवा नकारात्मक मूल्यांकन। अध्यापक एक प्रश्नावली बनाएँ जिनमें अपूर्ण वाक्य हों। बच्चों को इन वाक्यों को अपने आप कक्षा में अथवा अकेले में (बच्चों की इच्छानुसार) पूरा करने की स्वतंत्रता दी जाए।

1. दूसरों के विचार में मैं..
2. मुझे जब गुस्सा आता है तो दूसरे...
3. जब मैं खुश होता हूँ तो दूसरे सोचते हैं कि मैं..
4. मेरे विचार में दूसरे बच्चे मुझे पसंद **करते** हैं–.............हां.............**नहीं**.................
5. मुझ से बड़े मुझे..कहकर बुलाते हैं।
6. दूसरे बच्चों के विचार में मैं...
7. मैं दूसरों पर...के लिए निर्भर करता/करती हूँ।
8. जब मैं उदास होता/होती हूँ तो दूसरे..
9. औरों के विचार में मेरा...
10. औरों के विचार में मैं अपना...
11. औरों को देखने में मैं..

12. मेरे माता-पिता की इच्छा है कि मैं...
13. अध्यापकों के विचार में मेरा कक्षा-कार्य...
14. मेरे मित्र मुझे..
15. यदि मेरे मित्र मुझसे झगड़ा करें तो..
16. उपरोक्त प्रश्नों के उत्तरों द्वारा मुझे अपने विषय में मालूम हुआ कि मैं.................
17. अवकाश के समय मैं दूसरों के साथ..
18. जब मैं कोई गलती करता/करती हूँ तो मुझे दूसरे...
19. जब कोई मुझे डाँटता है तो मैं...
20. मुझे परेशानी में देखकर दूसरे..

इन सभी कथनों के उत्तरों में यदि विद्यार्थी की नकारात्मक भावनाएँ तथा विचार प्रदर्शित होते हों तो शिक्षकों को ऐसे विद्यार्थियों के विचारों एवं भावनाओं में परिवर्तन लाने के लिए विशेष प्रयास करने होंगे। विशेषकर कुछ सामूहिक कार्यक्रमों में सफलता, दूसरों द्वारा प्रशंसा तथा प्रोत्साहन मिलने पर उन्हें अपनी नकारात्मक आत्मधारणा को सकारात्मक बनाने की प्रेरणा मिलेगी। इससे सकारात्मकता की संभावना बढ़ेगी साथ ही दूसरों के साथ सामंजस्य कर पाने की क्षमता भी बढ़ेगी।

अभ्यास 8

मूल्य-स्पष्टीकरण के लिए

9 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों के लिए

उद्देश्य–नीचे दी गई कुछ क्रियाओं से विद्यार्थियों को अपनी रुचियों व मूल्यों अर्थात उन सभी बातों की जानकारी होगी जो उनके लिए महत्वपूर्ण हैं।

(1) किसी छुट्टी के दिन शाम को तुम क्या करना पसंद करोगे? क्रमानुसार किन्हीं तीन पर निशान लगाओ :

– कोई अच्छी सी कहानी की पुस्तक पढ़ना। ☐

– दोस्तों के साथ सिनेमा देखना। ☐

– दोस्तों के साथ अपनी पसंद का खेल खेलना। ☐

– किसी रेस्तराँ में मित्रों के साथ बैठकर खाना। ☐

– अच्छे खिलाड़ियों द्वारा स्टेडियम में खेला जा रहा खेल देखना। ☐

– घर में बैठकर टी.वी. पर फिल्म देखना। ☐

– रेडियो में गाना सुनना। ☐

2. नीचे दिए गए कार्यों में कौन सा तुम्हारे लिए अधिक आवश्यक है? क्रमानुसार कथन के सामने संख्या लिखो :

- अच्छे मित्र बनाना। ☐
- अच्छा स्वास्थ्य रखना। ☐
- अपनी पसंद की पुस्तकें पढ़ना। ☐
- घर को साफ व सजाकर रखना। ☐
- अपनी पसंद के खेल को खेल पाना। ☐
- पढ़ाई में अच्छा कर पाना। ☐
- अच्छे विद्यालय में पढ़ना। ☐
- देखने में आकर्षक लगना। ☐
- अपनी पसंद की वस्तुएँ खाना। ☐
- बाहर घूमने जाना। ☐
- हरदम टी.वी. देख पाना। ☐

3. यदि तुम्हें किसी प्रतियोगिता में 1000/- रु. मिल जाएँ तो तुम उसका क्या करोगे?

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

4. उन सभी वस्तुओं की सूची बनाओ जो तुम्हारे पास हैं और तुम्हें अच्छी लगती हैं। सबसे अच्छी लगने वाली वस्तु को सबसे पहले, उसके बाद उससे कम और फिर कुछ और कम, इस प्रकार पसंद के क्रमानुसार सूची बनाओ।

(1) .... (11) ....

(2) .... (12) ....

(3) .... (13) ....

(4) .... (14) ....

(5) .... (15) ....

(6) .... (16) ....

(7) .... (17) ....

(8) .... (18) ....

(9) .... (19) ....

(10) .... (20) ....

अभ्यास 9

नीचे निबंध के लिए कुछ विषय दिए गए हैं जो विद्यार्थियों को अपने विषय में सोचने, योजना बनाने तथा लक्ष्य निर्धारित करने में सहायक होंगे।

1. मेरी इच्छा है कि
2. मैं बड़ा/बड़ी होकर
3. मेरी अभिलाषा
4. मेरा जीवन लक्ष्य
5. मैं और मेरा देश
6. मेरे अधिकार और कर्तव्य
7. मैं और मेरा परिवार
8. मैं समाज के लिए बहुमूल्य हूँ क्योंकि
9. अच्छे मित्र की विशेषताएँ
10. मैं कैसा व्यक्ति बनना चाहूँगा/चाहूँगी?

सारांश–अध्याय 3

''स्व'' अथवा ''आत्म'' किसे कहते हैं? आत्मधारणा का विकास कैसे होता है?

''स्व'' व्यक्ति के विचारों–धारणाओं, क्षमताओं से मिलकर बनता है। हम अपने विषय में जैसा सोचते हैं, जो भी विचार रखते हैं, वही व्यक्ति की आत्मधारणा कहलाती है। माता-पिता, परिवार के अन्य सदस्यों, विद्यालय में शिक्षकों, सहपाठियों एवं मित्रों के संपर्क में घटी घटनाओं के फलस्वरूप आत्मधारणा का विकास होता है।

आत्मधारणा स्कूली सफलता को किस तरह प्रभावित करती है?

ऐसा प्रायः देखा गया है कि निम्न आत्मधारणा वाले छात्रों में सीखने की क्षमता कम हो जाती है। आत्म-विश्वास की कमी के कारण उनमें स्वाभाविक जिज्ञासा तथा सृजनात्मक योग्यता का भी अवरोध हो जाता है तथा हीनता की भावना के कारण उन्हें अपनी सफलता पर संदेह हो सकता है।

विद्यालय में किस प्रकार का वातावरण आत्मबिंब में वृद्धि में सहायक हो सकता है?

व्यक्तिपरक शिक्षण विधि तथा विद्यार्थियों के लिए भयरहित तथा चिन्तारहित वातावरण आत्मबिम्ब पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। बच्चों की भावनाओं, विचारों को मान्यता देना, उनकी क्षमताओं के अनुरूप ही उनसे अपेक्षाएँ रखना आदि आत्म-विश्वास को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

4

कुछ प्रश्न

- क्या हर एक व्यक्ति का अपना एक अलग ही व्यक्तित्व है?
- क्या हर एक व्यक्तित्व, विलक्षण विशेषताओं का समूह है?
- इन विशेषताओं के आधार क्या हैं?

उद्‌देश्य

इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि

- अलग-अलग व्यक्तियों की व्यक्तित्व-विशेषताओं में भिन्नता होती है।
- यह भिन्नता व्यक्ति की आनुवंशिकता और वातावरण के प्रभाव के कारण होती है।
- व्यक्तित्व के विकास में वातावरण का अत्यधिक महत्व है।
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझने के लिए उनके कारणों को समझना आवश्यक है।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझने की आवश्यकता

विद्यार्थियों में आत्मजागरूकता लाने के लिए सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है कि प्रत्येक विद्यार्थी दूसरे से भिन्न है तथा उसकी क्षमताएँ और रुचियाँ भी औरों से भिन्न हैं।

बहुत सी परिस्थितियों में व्यक्ति सही निर्णय नहीं ले पाते क्योंकि उन्हें अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं एवं क्षमताओं की पूरी जानकारी नहीं होती अतः उनके लिए यह निश्चय करना कठिन होता है कि उनके लिए क्या करना लाभप्रद एवं उचित है। उदाहरण के लिए व्यवसायिक निर्णय को ही लीजिए। कई व्यवसाय ऐसे हैं जिन्हें व्यक्ति अपनाना तो चाहेगा किन्तु वह उन्हें अच्छी तरह कर पाएगा कि नहीं यह बहुत से अन्य कारणों पर भी निर्भर है। व्यक्ति को सफलता उसी काम में मिलती है जिसे करने की उसमें योग्यता है और साथ ही जिसे करने में उसे आनंद आता है। इसलिए किसी भी परिस्थिति में व्यक्ति को यह निश्चय करने से पहले कि उसके लिए क्या करना उचित या संतोषजनक है यह जानना होगा कि ऐसे कौन-कौन से कार्य हैं जिन्हें वह अच्छी तरह कर सकता है या जिन्हें करने की उसमें योग्यता है साथ ही किन-किन कार्यों में उसे आनंद की अनुभूति होती है।

विभिन्नता प्रकृति का साधारण नियम है, कोई भी दो प्राणी एक से नहीं होते। कोई भी गुण दो व्यक्तियों में समान मात्रा में नहीं मिलता। प्रत्येक बच्चा स्वतंत्र व्यक्तित्व लेकर उत्पन्न होता है तथा क्रमशः अपने चारों ओर के वातावरण से प्रभावित होकर एक व्यक्ति विशेष के रूप में बड़ा होता है।

कक्षा में विभिन्नता

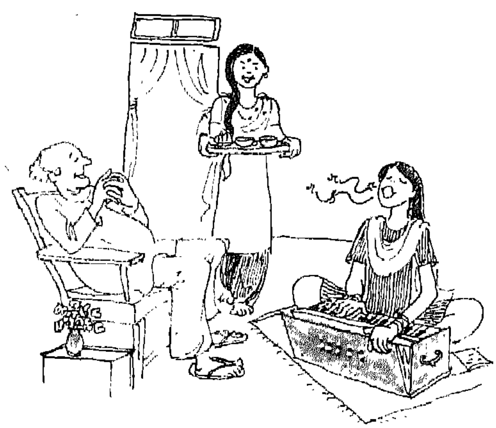
कक्षा में अनेक विषय पढ़ाए जाते हैं। प्रत्येक विषय को एक ही शिक्षक पढ़ाता है किन्तु उस विषय में क्या सभी विद्यार्थी समान अंक प्राप्त करते हैं? आप कहेंगे नहीं। एक बच्चा यदि एक विषय में अच्छा है तो दूसरा बच्चा दूसरे विषय में। यदि सुरेश को गणित के प्रश्न बहुत जल्दी समझ में आते हैं तो महेश को उन्हें समझने में बहुत देर लगती है। गीता हिन्दी में सर्वप्रथम आती है तो मीरा को हिन्दी बहुत कठिन लगती है। रमेश को विज्ञान में अधिक अंक प्राप्त होते है। तो उषा को अंग्रेजी में। विनय की हस्तकलाओं में रुचि है तो आलोक की चित्र बनाने में। इससे पता चलता है कि बच्चों की योग्यता तथा रुचि प्रत्येक विषय में अलग-अलग होती है।

सहपाठ्यक्रियाओं में भिन्नता

पढ़ाई-लिखाई की भाँति ही खेल-कूद, नाटक या संगीत में भी सभी विद्यार्थी एक जैसे कुशल नहीं होते। मनजीत क्रिकेट का बहुत अच्छा खिलाड़ी है तो साजिद फुटबाल अच्छा खेलता है। राजेश सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अधिक भाग लेता है। शीला संगीत में निपुण है तो समीर तबला बजाने में सबसे आगे है।

घरेलू कार्यों में भिन्नता

परिवार में एक ही माता-पिता के दो बच्चे एक जैसी सुविधाओं के होते हुए भी भिन्न होते



एक ही परिवार में पलते हुए भी रीता और मीना की रुचियों में कितना अंतर दिखता है

हैं। रीता और मीना दो बहने हैं। रीता घर के कामकाज में बहुत कुशल है। वह परिवार के सभी सदस्यों की देखभाल बहुत अच्छी तरह करती है परंतु मीना का मन घर के कामकाज में नहीं लगता। उसकी गायन और वादन में रुचि है। वह आगे चलकर एक कलाकार बनना चाहती है।

सामूहिक कार्यों में भिन्नता

जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी, जैसे सार्वजनिक आयोजनों में, समारोह या त्यौहार जैसे अवसरों पर भी प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार में अंतर मिलता है। आपने देखा होगा कि कुछ व्यक्ति बहुत घुल-मिल जाते हैं। वे मिलनसार होते हैं। उनके साथ सबका मनोरंजन भी होता है। परंतु कुछ संकोची तथा नीरस स्वभाव के होते हैं। इसी प्रकार समूह में कोई नेता बन जाता है तो कोई पीछे चलता है।

सारांश यह कि स्कूल, घर, समूह आदि जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यक्तिगत अंतर देखने को मिलता है। कभी आपने सोचा है कि लोगों की योग्यता, रुचि तथा व्यवहार में इतना अंतर क्यों होता है? इस प्रकार के व्यक्तिगत अंतर के दो आधार माने गए हैं—आनुवंशिकता तथा वातावरण।

आनुवंशिकता क्या है?

वे सभी गुण तथा विशेषताएँ जो व्यक्ति के जन्म के समय उसमें होती हैं, व्यक्ति की आनुवंशिकता कहलाती हैं। ये जन्मजात गुण तथा विशेषताएँ व्यक्ति को अपने माता-पिता, दादा-दादी, तथा उनके पूर्वजों से मिलती हैं। हाँ, कोई भी किसी एक पूर्वज की सभी विशेषताओं को ग्रहण नहीं करता। हो सकता है कि उसका कद उसके पिता जैसा हो, उसकी आँखें माँ से मिलती-जुलती हों, नाक दादी जैसी हो और गोल चेहरा नाना जैसा हो। एक ही माँ के दो बच्चे भी भिन्न-भिन्न

जरा सोचिए

अपने आसपास व्यक्तियों के साथ बातचीत व व्यवहार करते हुए आप स्वयं को किन-किन बातों में दूसरों से भिन्न पाते हैं?

प्रकार से इन विशेषताओं को ग्रहण करते हैं और इसीलिए एक ही माता-पिता के सभी बच्चे एक दूसरे से बहुत सी बातों में भिन्न दिखाई देते हैं। यहाँ तक कि जुड़वाँ भाई-बहन भी पूरी तरह एक जैसे नहीं होते।

कभी-कभी बच्चा अपने माता-पिता की मुख्य विशेषता को भी वंशानुगत नहीं कर पाता। उदाहरण के लिए एक पहलवान का लड़का दुबला-पतला हो सकता है, और एक अच्छे क्रिकेट खिलाड़ी का लड़का शायद बल्ला पकड़ना भी न सीख सके। आखिर ऐसा होता क्यों है? इसलिए कि उसके माता-पिता उसके बहुत से पूर्वजों में से एक हैं जिनसे वह यह विशेषताएँ प्राप्त करता है संभव है कि उसे यह गुण या अवगुण अपने दादा, दादी, नाना, नानी या उनके भी किसी पूर्वज से मिला हो।

व्यक्तित्व प्रदान करते हैं। यही कारण है कि हर व्यक्ति की अपनी एक अलग पहचान होती है।

आनुवंशिकता तथा वातावरण

बहुत समय से मनोवैज्ञानिक यह जानने के लिए प्रयत्नशील हैं कि किसी व्यक्ति के विकास में आनुवंशिकता और वातावरण का कहाँ तक योगदान है? किन्तु वे किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सके हैं। हाँ, अनुसंधान से इतना जरूर पता चलता है कि आनुवंशिकता का प्रभाव शरीर की रचना पर अधिक दिखाई देता है और मानसिक पक्ष पर कम।

बुद्धि के विषय में वैज्ञानिकों का मत है कि व्यक्ति की मानसिक योग्यता जन्म के समय पूर्णतया निश्चित नहीं होती यद्यपि बुद्धि की सीमा आनुवंशिकता पर कुछ मात्रा में निर्भर होती है किन्तु उसका विकास वातावरण पर अधिक निर्भर है। यही कारण है कि अच्छे वातावरण की सहायता से कम बुद्धि वाले बालक के बुद्धि स्तर को और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

यह भी देखा गया है कि दो समान बुद्धि वाले व्यक्ति अलग-अलग व्यवसायों में सफलता प्राप्त करते हैं। इससे ज्ञात होता है कि मानसिक योग्यता एकात्मक नहीं है वरन बहुमुखी है। जिस बुद्धि स्तर का बच्चा विज्ञान या गणित में अच्छा होता है उसी स्तर का बच्चा कविता या इतिहास में अच्छा हो सकता है। बुद्धि के स्वरूप के विषय में और अधिक चर्चा हम अगले अध्याय में करेंगे।

जरा सोचिए

आपकी कौन-कौन सी शारीरिक विशेषताएँ आपके परिवार के अन्य व्यक्तियों से मिलती हैं और कौन सी नहीं?

वातावरण क्या है?

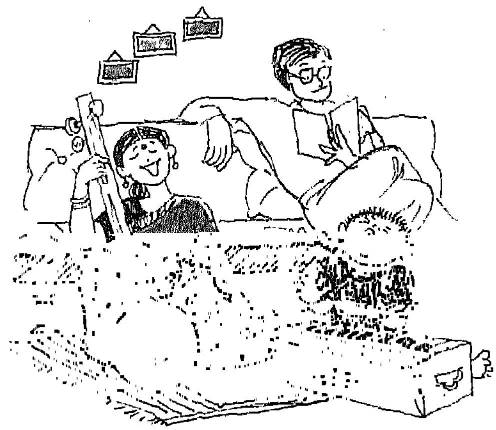
वातावरण उन सब व्यक्तियों, वस्तुओं और परिस्थितियों से मिलकर बनता है जो बच्चे के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालती हैं। वह कैसा भोजन करता है? परिवार के सदस्यों का उसके प्रति कैसा व्यवहार है? उसकी परिस्थितियाँ जिनमें वह बड़ा होता है, घर वालों के विचार और मूल्य, उसके पड़ोसी और मित्र, शिक्षक जिनसे वह शिक्षा प्राप्त करता है—सभी मिलकर उसका वातावरण बनाते हैं। बच्चा कुछ गुण और विशेषताएँ जन्म से लाता है जो वातावरण के साथ क्रिया-प्रतिक्रिया करते हुए बच्चे को एक विशेष प्रकार का अनोखा

जहाँ तक व्यक्तित्व की विशेषताओं का संबंध है आनुवंशिकता का प्रभाव व्यक्ति की आक्रामकता या भीरुता, विनयशीलता या संकोच और इसी प्रकार के अन्य गुणों या स्वभाव पर हो सकता है। परंतु हमारा अनुभव और वातावरण का प्रभाव व्यक्तित्व-विशेषताओं को बनाने में इतने महत्वपूर्ण हैं कि आनुवंशिकता के प्रभाव को स्वीकार करना भी कठिन प्रतीत होता है।

अंत में कहा जा सकता है कि आनुवंशिकता उन सभी गुणों का योग है जो बच्चा जन्म से ही लेकर आता है। ये गुण व्यक्ति को कुछ निश्चित विशेषताएँ प्रदान करते हैं। किन्तु इन गुणों को परिमार्जित एवं रूपांतरित कर एक विशेष साँचे में ढालने का काम वातावरण ही करता है। स्पष्ट है कि व्यक्ति की योग्यताएँ और विशेषताएँ, आनुवंशिकता और वातावरण के मिले जुले प्रभाव से ही विकसित होती हैं। अतः व्यक्तित्व के विकास में दोनों का योगदान होता है। आनुवंशिकता और वातावरण दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। उनके सहयोग से ही व्यक्ति के गुणों तथा योग्यताओं का समुचित विकास संभव है।

वातावरण का योग्यताओं पर प्रभाव

किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए जन्मजात क्षमता ही काफी नहीं उसके लिए उपयुक्त वातावरण का होना भी अत्यंत आवश्यक है। बच्चों के घर तथा स्कूल का वातावरण उनके विकास में बहुत सहायक होता है। जिस बच्चे के परिवार में माता-पिता की साहित्य या कला में



रुचि होती है वह बचपन से ही उन रुचियों के संपर्क में आ जाता है। उसे साहित्य या कला की शिक्षा स्वतः ही मिलती रहती है। उसी प्रकार जिस बच्चे के माता-पिता घर पर खेलकूद, हॉकी, क्रिकेट आदि की ही चर्चा करते रहते हैं वह विज्ञान, गणित, इतिहास आदि विषयों में अंक प्राप्त करने के लिए उतना प्रयत्नशील न होगा जितना कि उसका वह सहपाठी जिसके माता-पिता विद्याध्ययन को सबसे अधिक महत्व देते हैं।

रहने के स्थान का भी योग्यताओं एवं अन्य विशेषताओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। मान लीजिए किसी बच्चे में कृषि विज्ञान की अभिक्षमता विद्यमान है। परंतु जिस नगर में वह रहता है वहाँ कृषि पढ़ाने के लिए कोई साधन नहीं हैं तो उसे कृषि अभिक्षमता के विकास का

जरा सोचिए

आपके वातावरण की कौन सी सुविधाओं/असुविधाओं ने आपकी योग्यताओं व रुचियों के विकास पर अपना प्रभाव डाला है?

जरा सोचिए

आपके माता-पिता की कौन-कौन सी विशिष्ट योग्यताओं और रुचियों का आपकी विशेष योग्यताओं और रुचियों पर प्रभाव पड़ा है?

अवसर ही न मिल पाएगा। इसी प्रकार जिसे चित्रशाला, नाट्यशाला, संगीत सभा आदि में जाने का अवसर मिलता रहता है उसे कला और संगीत में रुचि तथा इनके द्वारा मनोरंजन करने का ज्ञान अवश्य हो जाएगा।

बच्चे के माता-पिता की अभिरुचियों, उद्देश्यों और मूल्यों का भी उसकी व्यक्तित्व-विशेषताओं के विकास में बहुत हाथ होता है। उदाहरण के लिए कुछ माता-पिता अपने बच्चे को किसी व्यावसायिक प्रशिक्षण में प्रवेश दिलाना अधिक अच्छा समझते हैं तो कुछ उसे उच्च शिक्षा देने के पक्ष में होते हैं। कुछ माता-पिता पुरानी परंपराओं तथा रीति-रिवाजों में विश्वास रखते हैं जबकि दूसरे आधुनिक तथा प्रगतिशील विचार के होते हैं। इस प्रकार बच्चों की रुचि, उद्देश्य और जीवन-मूल्यों में अंतर होना स्वाभाविक है।

स्कूल भी बच्चे की व्यक्तिगत विशेषताओं के विकास को प्रभावित करता है। जिस विद्यालय में





कक्षा-कार्य में रुचि अच्छी सुविधाओं पर निर्भर है

छात्र अधिक संख्या में हैं व जिनके लिए पर्याप्त पठन स्थान तथा पाठ्य सामग्री नहीं है साथ ही शिक्षा का स्तर भी अच्छा नहीं है ऐसी स्थिति में पठन-पाठन कार्य में बाधा अवश्य आती है और विद्यार्थी अपनी योग्यताओं का विकास पूरी तरह नहीं कर पाएगा। परंतु ऐसे विद्यालय में जहाँ योग्य शिक्षक हैं, पाठ्य सामग्री, पुस्तकालय और प्रयोगशाला की अच्छी व्यवस्था है वहाँ उसे अपनी अभिक्षमताओं एवं रुचियों के विकास का अच्छा अवसर मिलेगा।

बच्चे की क्षमताएँ और प्रयास

प्रत्येक बच्चे का आनुवंशिकता तथा वातावरण बहुत सीमा तक निश्चित होता है। इनमें बहुत

अधिक परिवर्तन करना संभव नहीं। माता-पिता और अध्यापकों को चाहिए कि वे यह देखें कि वातावरण की सुविधाओं का अच्छे-से-अच्छा प्रयोग बच्चे के विकास के लिए हों। ध्यान रहे कि चाहे जैसे भी गुण उसे आनुवंशिकता से प्राप्त हों या जैसा भी वातावरण उसे मिला हो, बच्चा अपने प्रयास के द्वारा अपनी क्षमताओं का भली भाँति विकास कर सकता है। उदाहरण के लिए किसी बच्चे में कितनी ही रचनात्मक योग्यता क्यों न हो परंतु यदि वह आलसी है तो उसे एक अच्छा रचनाकार नहीं बनाया जा सकता। इसके विपरीत दूसरा बच्चा सामान्य योग्यता रहते हुए भी परिश्रम और लगन से कार्य करने के कारण अपनी प्राप्त योग्यता का पूर्ण लाभ उठाकर बड़ी सफलता प्राप्त कर सकता है।

किसी बच्चे में जो क्षमताएँ नहीं है अथवा वातावरण की जो सुविधाएँ उसे प्राप्त नहीं हैं उनके बारे में व्यर्थ चिन्ता करने से कोई लाभ नहीं। जिस स्थिति पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं, जिसको हम बदल नहीं सकते उसके बारे में सोच-सोच कर समय नष्ट करने से क्या लाभ? इससे कहीं अधिक आवश्यक है उन योग्यताओं एवं क्षमताओं पर ध्यान देना जो बच्चे में हैं। अध्यापकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को कक्षा तथा स्कूल के अन्य कार्यक्रमों की सहायता से उनकी व्यक्तित्व-विशेषताओं को जानने और विकसित करने के समुचित अवसर प्रदान करें।

सारांश–अध्याय 4

व्यक्तिगत विभिन्नताओं के क्या आधार हैं ?	आनुवंशिकता तथा वातावरण व्यक्तिगत विभिन्नताओं के दो प्रमुख आधार माने गए हैं।
आनुवंशिकता क्या है ?	वे गुण व विशेषताएँ जो व्यक्ति को अपने माता-पिता व अन्य पूर्वजों से प्राप्त होती हैं व्यक्ति की आनुवंशिकता कहलाती हैं।
योग्यताओं के विकास में आनुवंशिकता तथा वातावरण का क्या योगदान है ?	व्यक्ति की योग्यताएँ व व्यक्तिगत विशेषताएँ आनुवंशिकता तथा वातावरण के मिले-जुले प्रभाव से विकसित होती हैं।

अभ्यास

1. विभिन्न व्यक्तियों की व्यक्तित्व-विशेषताओं और व्यवहार में अंतर क्यों होता है?
2. आनुवंशिकता और वातावरण में क्या अंतर है?
3. 'हाँ' या 'न' में उत्तर दीजिए
   (i) व्यक्तित्व-विशेषताओं में अंतर का प्रमुख कारण व्यक्ति की आनुवंशिकता है।
   (ii) योग्यता न होने पर भी विद्यार्थी को किसी क्षेत्र में प्रवीणता के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
   (iii) दो समान बुद्धि वाले विद्यार्थी अलग-अलग विषयों में अधिक अंक प्राप्त कर सकते हैं।

5

कुछ प्रश्न

- बालकों के मानसिक स्तर, योग्यताओं और अन्य व्यक्तित्व-विशेषताओं के अंतर को कैसे समझा व मापा जा सकता है?
- आत्मबोध तथा आत्मनिर्देशन के लिए बच्चे को अपने तथा दूसरों के बीच विशेषताओं के अंतर को समझने की क्या आवश्यकता है?
- व्यक्तित्व-विशेषताओं के विकास में माता-पिता तथा अध्यापक की भूमिका का क्या महत्व है?
- व्यक्तित्व संबंधी सभी महत्वपूर्ण सूचनाओं को एक स्थान पर संक्षिप्त रूप से किस प्रकार सुव्यवस्थित किया जा सकता है?

उद्देश्य

इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि

- बच्चों में विशिष्ट योग्यताओं की पहचान एवं विकास किस प्रकार किया जाय।
- बुद्धि का स्वरूप क्या है।
- व्यक्तित्व-विशेषताओं को समझने व मापने के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षणों तथा व्यावहारिक विधियों का प्रयोग किस प्रकार किया जाय।
- अध्यापकों द्वारा व्यावहारिक विधियों का प्रयोग अधिक वांछनीय है।
- विद्यालय में अध्यापक छात्र के व्यवहार का अध्ययन कर सकता है।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं की पहचान एवं विकास

पिछले अध्याय में हमने यह तो जान लिया कि प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न है और इस भिन्नता के क्या कारण हैं। अध्यापक तथा माता-पिता के लिए प्रत्येक विद्यार्थी के अभिन्न व्यक्तित्व को जानना अत्यंत आवश्यक है ताकि वह बालक की क्षमताओं, योग्यताओं और आवश्यकताओं के अनुरूप ही शिक्षा का प्रावधान कर सकें। यह भी आवश्यक है कि प्रारंभिक वर्षों में ही विद्यार्थियों की विशिष्ट योग्यताओं की पहचान की जाए और घर और विद्यालय में उनके विकास के उचित अवसर उपलब्ध कराए जाएँ ताकि विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव हो।

जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होने लगता है उसकी विशेषताएँ स्पष्ट होने लगती हैं। कुछ विशेषकों को जानना आसान है। कुछ कठिन शारीरिक विशेषकों जैसे लंबाई, भार आदि को मापना सरल है। परंतु मानसिक विशेषकों जैसे बुद्धि, विशिष्ट योग्यताओं और व्यक्तित्व विशेषकों को मापना अत्यंत कठिन है। वर्तमान समय में ऐसी विधियाँ एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण उपलब्ध हैं जिनसे मानसिक योग्यताओं और व्यक्तित्व विशेषकों को मापा जा सकता है। परंतु किसी भी व्यक्ति की विशेषताओं, रुचियों और आकांक्षाओं को मिनटों में ही समझ लेना बिल्कुल संभव नहीं है। यह एक सतत् प्रक्रिया है। हमारी विशिष्ट योग्यताएँ अवसर पाकर निखर उठती हैं और हमारी रुचियाँ परिस्थितियों के प्रभाव से परिवर्तित हो जाती हैं, अतः सही जानकारी के लिए काफी,अर्से तक अध्ययन किया जाना चाहिए। इस प्रकार किए गए अध्ययन के फलस्वरूप ही विद्यार्थी अपनी शिक्षा में, सहपाठ्य क्रियाओं में तथा व्यवसाय के संबंध में अधिक अच्छे निर्णय ले सकता है।

बुद्धि का स्वरूप एवं व्याख्या

छात्रों की बौद्धिक क्षमता, व्यक्तित्व को समझने तथा सीखने की क्रियाओं में निर्देशन देने के लिए अध्यापक को उनके बौद्धिक स्तर को जानना आवश्यक है। सैकड़ों वर्षों से ही व्यक्ति यह अनुभव करते आ रहे हैं कि कुछ व्यक्ति अधिक बुद्धिमान होते हैं और कुछ कम। लेकिन बुद्धि क्या है इसका स्वरूप कैसा है? इन प्रश्नों के उत्तर में मनोवैज्ञानिकों में एक लंबे समय से वाद-विवाद रहा है और आज तक भी इस विषय पर वे एकमत नहीं हो पाए हैं।

प्रारंभ में बुद्धि को एक सामान्य योग्यता के रूप में माना गया जोकि समस्त मानसिक कार्यों को प्रभावित करती है। इस मत के समर्थकों ने बुद्धि की व्याख्या 'एक योग्यता' के रूप में की। सन् 1905 में सर्वप्रथम बीने और साइमन दो फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि को मापने का एक मनोविज्ञानिक ढंग निकाला। उन्होंने विभिन्न आयु के बच्चों के लिए अलग-अलग परीक्षण बनाए जो क्रम से कठिन और कठिनतर थे। एक बच्चा जिस आयु के बच्चों के लिए निर्धारित प्रश्नों के उत्तर दे देता है वही उसकी मानसिक आयु मानी जाती है उदाहरण के लिए राहुल जिसकी आयु 10 वर्ष है यदि 12 वर्ष के लिए निर्धारित प्रश्नों के

उत्तर दे देता है तो उसकी मानसिक आयु 12 वर्ष हुई यद्यपि उसकी वास्तविक आयु 10 वर्ष ही है। बुद्धि के इस एकाकी स्वरूप का ज्ञान एक संख्या के रूप में होता है और इससे प्राप्त बुद्धि लब्धि के आधार पर हम व्यक्तियों को प्रतिभाशाली, श्रेष्ठ बुद्धि, सामान्य, निम्नबुद्धि, मानसिक रूप से पिछड़े आदि वर्गों में बाँट सकते हैं। इस प्रकार की जानकारी का प्रयोग माता-पिता तथा अध्यापक, बच्चों के लिए उपयुक्त विद्यालय चयन, शिक्षण विषय तथा शिक्षण पद्धति संबंधी निर्णय लेने के लिए कर सकते हैं।

आधुनिक विचारधारा के अनुसार बुद्धि बहुत सी मानसिक योग्यताओं का मिश्रण है। यह एकक विशेषक नहीं है इसमें अनेक तत्व सम्मिलित हैं। तत्व विश्लेषण पद्धति के द्वारा इन तत्वों के स्वरूप का पता लगाने का प्रयत्न किया गया है। एक मत के अनुसार बुद्धि उन अनेक योग्यताओं का मिश्रण है, जो भिन्न-भिन्न समूहों में पायी जाती हैं। इन समूहों के आधार पर कुछ प्राथमिक या मूल मानसिक योग्यताएँ हैं जिनका उल्लेख अधिकांश मनोवैज्ञानिकों ने किया है। वे इस प्रकार हैं :

- शाब्दिक
- शब्द प्रवाह
- सांख्यिक
- दैशिक
- तार्किक
- यांत्रिक
- प्रत्यक्ष ज्ञान

पिछले कुछ वर्षों में मनोवैज्ञानिक गिल्फोर्ड ने बुद्धि के बहुतत्वी स्वरूप की व्याख्या की है तथा बुद्धि संरचना (Structure of Intellect) के सिद्धांत को स्थापित किया है। इसके अनुसार उसने बुद्धि को अनेक (120 से भी अधिक) योग्यताओं में विभाजित किया है। प्रत्येक मानसिक योग्यता के स्वरूप को उसमें निहित संक्रियाओं (Operations), विषयवस्तु (Content) एवं उत्पादन (Product) के एक संभावित सम्मिश्रण के आधार पर जाना जा सकता है। इस प्रकार हम विभिन्न व्यक्तियों में पाए जाने वाले सूक्ष्म से सूक्ष्म बौद्धिक अंतरों को भी समझ सकते हैं और किसी विशिष्ट कार्य के लिए आवश्यक योग्यता की पहचान कर उसके विकास के लिए प्रयत्न कर सकते हैं।

आधुनिकतम विचारधारा के अंतर्गत मनोवैज्ञानिक हार्वड गार्डनर ने अनेक प्रकार की बुद्धि (Multiple Intelligence) की बात की है। व्यक्ति अपनी बुद्धि को भिन्न-भिन्न प्रकार से दर्शाते हैं जैसे कि हो सकता है कोई भाषा में, कोई संगीत में, कोई सामाजिक संबंध स्थापित करने में तथा कोई शारीरिक शक्ति का प्रयोग कर पाने में अपनी बुद्धिमत्ता दिखाए। इस प्रकार व्यक्ति अपनी बुद्धि को कई प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं। इस विचारधारा के अनुसार निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले बच्चे को निम्न बुद्धि या बुद्धिहीन नहीं कहा जा सकता, हो सकता है वह अपनी बुद्धि का प्रदर्शन किसी अन्य क्षेत्र में कर पाए। हमारे देश में अभी मानसिक योग्यताओं को बहुत सूक्ष्म रूप में समझने के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षण उपलब्ध नहीं हैं इसलिए यहाँ हम मोटे तौर पर कुछ मानसिक योग्यताओं का ही उल्लेख करेंगे जिनका विद्यार्थियों के पाठ्य विषयों एवं व्यावसायिक क्षेत्रों से महत्वपूर्ण संबंध है। वैसे भी उपयुक्त प्रशिक्षण न होने के कारण शिक्षकों द्वारा मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग संभव नहीं है। विभिन्न योग्यताओं की पहचान वे प्रेक्षण, शैक्षिक उपलब्धि तथा अन्य क्रिया कलापों में संप्राप्ति के आधार पर कर सकते हैं। कुछ प्रमुख योग्यताएँ इस प्रकार हैं :

शाब्दिक योग्यता (Verbal Ability)

शाब्दिक अर्थग्रहण, शाब्दिक तर्क और शब्द

भंडार आदि के परीक्षणों द्वारा इस योग्यता का मापन किया जाता है। इसमें शब्दों के प्रयोग से संबंधित योग्यताएँ जैसे शब्दों के अर्थ समझना, उन्हें आसानी से प्रयोग में लाना, एक बात के लिए कई-कई शब्दों को काम में लाना आदि सम्मिलित हैं। योग्य व्यक्ति शब्दों या वाक्यों में कठिन विचारों या भावों को आसानी से और शीघ्र ग्रहण कर लेता है। स्कूल में बहुत से पाठ्यक्रमों में विशेषकर साहित्यिक, मानविकी आदि में शैक्षिक सम्प्राप्ति इस योग्यता पर निर्भर है। एक विद्यार्थी के कॉलेज अथवा विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के निर्णय में इसका बहुत महत्व है। प्रत्येक व्यवसाय में ऊँचे पद के कार्य के लिए इस योग्यता की आवश्यकता होती है।

सांख्यिक योग्यता (Numerical ability)

सांख्यिक तर्क, सांख्यिक परिकलन, सांख्यिक क्रम, सांख्यिक समस्याओं आदि परीक्षणों द्वारा सांख्यिक योग्यता का मापन किया जाता है। इस योग्यता से विद्यार्थी योग, ऋण, गुणा या भाग आदि गणित की क्रियाएँ ठीक-ठीक और तेजी से कर लेता है। यह योग्यता शिक्षा के क्षेत्र में गणित, भौतिकशास्त्र, तकनीकी शिक्षा तथा इंजीनियरिंग शिक्षा में सफलता के विषय में काफी सीमा तक भविष्योक्ति कर सकती है।

दैशिक योग्यता (Spatial ability)

यह वस्तुओं के रूप, स्थान एवं आकार परिवर्तन दृष्टिगत करने की योग्यता है। इसमें योग्य व्यक्ति यह समझ पाता है कि किसी वस्तु को यदि घुमाकर या उलटकर रखा जाए तो उसका आकार कैसा प्रतीत होगा। अधिकांश यांत्रिक कार्यों में वस्तुओं के स्थान संबंधों को समझने के लिए इस योग्यता की आवश्यकता होती है। यह योग्यता डिजाइनिंग, नक्शानवीसी, ड्राइंग, पेंटिग तथा अन्य विज्ञान के पाठ्यक्रमों तथा प्रशिक्षण में सफलता की भविष्योक्ति में महत्वपूर्ण है।

यांत्रिक योग्यता (Mechanical ability)

यांत्रिक उपकरणों के प्रयोग परीक्षण, यांत्रिक अर्थग्रहण परीक्षण, तथा यांत्रिक अनुकूलन परीक्षण द्वारा यांत्रिक योग्यता का मापन किया जाता है। वैसे तो प्रत्येक व्यवसाय में इस योग्यता का होना सहायक है परंतु पॉलिटेक्नीक, इंजीनियरिंग या औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में शिक्षा की सफलता की भविष्योक्ति में इस योग्यता का महत्वपूर्ण स्थान है।

तार्किक योग्यता (Reasoning abilty)

इस योग्यता से समस्याओं का हल निकाला जाता है। इससे किसी भी समस्या के प्रत्याशित फल या परिणाम की कल्पना कर ली जाती है। यह योग्यता सभी योग्यताओं में श्रेष्ठ स्थान रखती है। वास्तव में यह ऐसी क्षमता है जो सभी योग्यताओं को प्रभावित करती है। मानसिक क्रियाओं में तर्क के द्वारा या चिन्तन से किसी समस्या का हल निकालना सबसे ऊँची क्रिया है विशेषकर लेखन, पत्रकारिता, कानून आदि क्षेत्रों में सफलता के लिए यह योग्यता विशेष रूप से सहायक है।

प्रत्यक्षज्ञान योग्यता (Perceptual ability)

समरूप चित्रों, आकृतियों, वस्तुओं और शब्दों के जोड़ों के परीक्षण द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञान योग्यता का मापन किया जाता है। यह योग्यता वस्तुओं, चित्रों, आकृतियों आदि में समानता और भेद को सरलता से समझने की क्षमता प्रदान करती है। लिपिक

कार्यों में प्रत्यक्षीकरण की गति एवं शुद्धता ही मुख्य है। एक सफल लिपिक शब्दों, अक्षरों तथा संख्याओं का प्रत्यक्षीकरण बड़ी तेजी से कर लेता है। शीघ्रता के साथ-साथ उसके कार्य में बहुत शुद्धता रहती है क्योंकि हिसाब-किताब रखने में, फाइलिंग या अन्य रिकार्ड रखने की क्रिया में इस योग्यता की विशेष आवश्यकता होती है।

योग्यताओं के मापन के लिए हमारे देश में उपयुक्त मानकीकृत परीक्षण बहुत ही कम हैं। वैसे भी मानकीकृत परीक्षणों के प्रयोग के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है जिसके अभाव में अध्यापकों के लिए इन परीक्षणों का प्रयोग संभव नहीं है। यदि परीक्षण उपलब्ध हो भी तो छोटी उम्र के बच्चों पर मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग करना कठिन ही होता है। इसके कई कारण हैं जैसे—भाषा के पूरी तरह विकसित न होने के कारण परीक्षण के आदेशों को न पढ़ पाना तथा ठीक से न समझ पाना, विचारों को अच्छी तरह व्यक्त न कर पाना, ध्यान की कमी, परीक्षण करने के लिए इच्छा का अभाव आदि। इन कारणों से हो सकता है बच्चा परीक्षण को विधिवत न कर पाए। अतः इस तरह किए गए परीक्षणों की विश्वसनीयता कम होगी। परीक्षण देना ही हो तो उसे व्यक्तिगत रूप से देना होगा जिसमें समय भी अधिक लगेगा। इसलिए छोटी उम्र के बच्चों के व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए परीक्षणों के स्थान पर अन्य व्यावहारिक विधियों का प्रयोग ही अधिक उचित माना जाता है जिनमें प्रेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली आदि प्रमुख हैं। अध्यापक इन विधियों का प्रयोग आसानी से कर सकते हैं। इसी उद्देश्य से संक्षेप में हम इन विधियों की चर्चा करेंगे।

जरा सोचिए

विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपलब्धियों के आधार पर आप अपने में कौन-कौन सी योग्यताएँ अन्य व्यक्तियों की तुलना में औसत से अधिक पाते हैं?

व्यक्तित्व-निर्धारण की व्यावहारिक विधियाँ

प्रेक्षण

बच्चों की व्यक्तित्व-विशेषताओं को जानने व समझने के लिए सबसे सरल व प्रचलित विधि प्रेक्षण है। छोटे बच्चों का प्रेक्षण कठिन नहीं है



छात्रों के गुणों व प्रतिभाओं को पहचानने में प्रेक्षण बड़ा उपयोगी होता है

क्योंकि उनका व्यवहार उनके विचारों और भावनाओं को काफी सीमा तक प्रकाशित करता है। इस उम्र में उनकी प्रतिक्रियाएं भी बहुत ही स्वाभाविक होती हैं। छात्रों के निरंतर संपर्क में रहने के कारण अध्यापकों के लिए इस विधि का प्रयोग बहुत सहज है। परंतु इस विधि से प्राप्त जानकारी की विश्वसनीयता को बढ़ाने के लिए इसका वैज्ञानिक रीति से प्रयोग करना आवश्यक है।

एक प्रेक्षक को पहले यह सोचना होगा कि उसके प्रेक्षण का उद्देश्य क्या है। वह व्यक्तित्व के किस पहलू के बारे में अध्ययन करना चाहता है? किन परिस्थितियों में प्रेक्षण किया जाए तथा किस प्रकार का व्यवहार और क्रियाएँ प्रेक्षण के योग्य हैं? इसके लिए यह भी आवश्यक है कि शिक्षक को बच्चों के प्रारंभिक विकास स्तर के सामान्य व्यवहारों का अच्छा ज्ञान हो उसमें उनकी समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता हो। प्रेक्षक को उन्हीं प्रतिक्रियाओं की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए जिनसे विद्यार्थी के व्यक्तित्व पर प्रकाश पड़ता हो। ऐसा भी संभव नहीं कि व्यक्ति की सारी क्रियाओं का लेखन कर लिया जाय और न ही यह उचित होगा कि इने गिने व्यवहारों के आधार पर ही धारणाएँ बना ली जाएँ। अध्यापक को ऐसी परिस्थितियों और व्यवहारों को ही प्रेक्षण के लिए चुनना चाहिए जिनसे बच्चे के विकास एवं समायोजन को समझने में सहायता मिले। कक्षा में, खेल के मैदान में, परिवार में, साक्षात्कार के समय छात्र की प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण किया जा सकता है। कक्षा में अध्यापक बच्चे के निम्नलिखित व्यवहारों का अध्ययन कर सकता है।

सीखने की क्षमता

मुद्रित वस्तुओं को पढ़ने तथा समझने की गति, उच्चारण करके पढ़ने में शुद्धि, शब्द भण्डार, गणित की समस्याओं का हल निकालने में सफलता या असफलता, उत्तर देने की उत्सुकता, स्कूल के समय पढ़ने की आदत, स्मरण शक्ति का प्रकाशन, भाषा सीखने में सरलता, कक्षा में समय पर आना, ध्यान लगाना, कार्य में लगे रहना, पाठ्य कार्यों से मन न चुराना, साथियों की नकल न कर लेना आदि।

शारीरिक क्षमता

कम सुनना या कम दिखाई देना, अक्सर खाँसी, जुकाम, बुखार रहना, आँख से पानी बहना, आँखें मलना, पौष्टिक भोजन के अभाव में शरीर का अविकसित होना, शीघ्र थकावट होना, अधिक नींद आना, बोलने में कठिनाई होना, स्वास्थ्य संबंधी आदतें न होने के कारण शरीर और कपड़े साफ न होना, अन्य कोई शारीरिक दोष अथवा बीमारी के लक्षण होना, अत्यधिक सफाई का ध्यान होना।

सामाजिक संबंध एवं सांवेगिकता

अत्यंत क्रोध करना, जिद्दीपन, कक्षा में सबसे आगे रहने के लिए लड़ना, दूसरों के काम में बाधा डालना, हरदम लड़ना, साथियों को चिढ़ाना, तंग करना, रोब जमाना, जल्दी से रो पड़ना, अत्यधिक क्रियाशील रहना, शर्मीलापन, घबरा जाना, नाखून कुतरना, अंगूठा चूसना, दूसरों के साथ न खेलना, साथियों में अप्रिय होना, सामूहिक कार्यों में मिलकर काम न कर पाना, अपनी वस्तुओं को दूसरों को देने में आनाकानी करना, काम के लिए स्वेच्छा से आगे न आना, पीछे-पीछे रहना आदि।

बच्चे का घर या परिवार में क्या स्थान है? परिवार के सदस्यों के साथ कैसा संबंध है? इस तरह की महत्वपूर्ण सूचना माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्यों से प्राप्त की जा सकती है।

प्रेषित व्यवहार का अभिलेखन तथा लिखे

गए तथ्यों की व्याख्या इस विधि के अन्य महत्वपूर्ण चरण हैं जिनके लिए वच्चों के व्यवहार को समझने का अनुभव और कौशल की आवश्यकता होती है। अध्यापक निरीक्षित व्यवहार को लिखते समय यह ध्यान रखें कि वे किसी भी छात्र के विषय में अपनी निजी धारणाओं और विचारों से प्रभावित न हों। प्रेक्षण की विश्वसनीयता को बढ़ाने के लिए व्यवहारों का निष्पक्ष निरीक्षण करना जरूरी है। एक से अधिक प्रेक्षकों द्वारा एक स्थिति का प्रेक्षण भी उसकी विश्वसनीयता को वढ़ाता है। इसके अतिरिक्त जव प्रेक्षक एक ही व्यक्ति का कई वार प्रेक्षण करता है और इन अनेक अभिलेखों में जव एकरूपता मिलती है तो भी उसे विश्वसनीय समझा जाता है।

प्रेक्षित व्यवहार के अभिलेखन की दो प्रचिलत विधियाँ हैं : वृत्तांत अभिलेख (Anecdotal Records) तथा निर्धारण मापनी (Rating Scales)।

वृत्तांत अभिलेख

किसी भी वच्चे के व्यवहार या प्रतिक्रिया को जिसे अध्यापक अथवा प्रेक्षक महत्वपूर्ण समझता है, लिख लेता है। इसे ही वृत्तांत अभिलेख कहा जाता है। यह एक विशिष्ट ढंग का प्रेक्षण है जिसमें वच्चे के चरित्र एवं व्यक्तित्व संवंधी वास्तविक स्थिति में की गई क्रियाओं का वर्णन किया जाता है। उन्हीं क्रियाओं का लेखन किया जाता है जो अध्यापक की दृष्टि से महत्वपूर्ण हों अर्थात जिनसे व्यक्तित्व की विशेषता प्रकाशित होती हो। कुछ लम्वी अवधि तक जव इस प्रकार के लेखन संग्रहित हो जाते हैं तो इन सबके आधार पर संक्षिप्त विवरण तैयार किया जाता है जिसे छात्र के व्यक्तित्व की विभिन्न विशेषताओं के कथन के लिए संचयीवृत (Cumulative Record) में लगा दिया जाता है।

निर्धारण मापनी

प्रेक्षित तथ्यों का सार निकालकर उसे संख्यात्मक रूप में व्यक्त करने को निर्धारण विधि कहते हैं। इस विधि से अध्यापक यह जान सकता है कि किसी भी बच्चे में कोई व्यक्तित्व-विशेषता अथवा गुण कितनी मात्रा में विद्यमान है। गुणों की मात्रा के लिए कुछ ऐसे विशेषणात्मक या विवरणात्मक शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिनसे व्यक्ति की क्रियाओं का ठीक-ठीक निर्धारण हो सके। उदाहरण के लिए कुछ प्रयुक्त होने वाले शब्दों जैसे—अति उत्तम, साधारण, निम्न, निम्नतम आदि को किसी एक व्यक्तित्व-विशेषता के सामने लिख दिया जाता है। अध्यापक के विचार में वह विशेषता जिस मात्रा में वच्चे में विद्यमान है वह उसी शब्द पर चिन्ह लगा देता है।

इस पुस्तक में इस विधि का विस्तृत विवरण संभव नहीं है। जो अध्यापक इस प्रकार की निर्धारण मापनी बनाना चाहते हों वे मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन की पुस्तकों से इस विषय पर अधिक जानकारी प्राप्त करें।

साक्षात्कार (Interview)

दो व्यक्तियों के एक दूसरे के सम्मुख वार्तालाप को साक्षात्कार कहा जाता है। अपितु यह तथ्यों को एकत्र करने का एक मुख्य साधन है, छोटी उम्र के वच्चों के व्यक्तित्व अध्ययन के लिए इस विधि का प्रयोग वहुत सफलता से नहीं किया जा सकता। अतः इस स्तर पर इसका प्रयोग माता-पिता के साथ वातचीत द्वारा बच्चे के विषय में अनेक तथ्यों को इकट्ठा करने के लिए किया जाता है। वच्चे की स्कूल की ओर मानसिक तत्परता, अभिरुचियाँ, अध्ययन संवंधी आदतें, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं सूचनाएँ तथा वच्चे की दैनिक चर्या के विषय में तथ्यों का संकलन

साक्षात्कार की क्रिया से होता है। इसके द्वारा अध्यापक भी माता-पिता को उनके बच्चे के स्कूली व्यवहार, शैक्षिक उपलब्धि तथा अन्य क्रिया कलापों तथा स्कूली कार्यों में रुचि से अवगत करा सकते हैं। थोड़ी बड़ी उम्र के बच्चों के साथ अध्यापक साक्षात्कार का प्रयोग आश्वासन देने, उत्साहित करने, बालकों की कठिनाइयों के विषय में सुनने, परामर्श देने आदि के लिए करते हैं।

साक्षात्कार का प्रयोग बच्चे के व्यवहार के प्रेक्षण के लिए भी किया जाता है। साक्षात्कार के समय बच्चे के हाव-भाव, भाषा-प्रयोग, भाव भंगिमाओं, वेशभूषा तथा अन्य शारीरिक विशेषताओं के अवलोकन से उसकी स्वास्थ्य संबंधी आदतों, सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा व्यक्तित्व समायोजन संबंधी तथ्यों को प्राप्त किया जा सकता है। बच्चों के साथ साक्षात्कार के लिए स्नेहपूर्ण वातावरण का होना आवश्यक है। प्रश्न इस प्रकार घुमाफिरा कर तथा स्नेह से पूछे जाएँ ताकि बच्चों में किसी प्रकार का भय, संकोच तथा निराशा की भावना उत्पन्न न हो और वह खुलकर अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त कर सकें। इस विधि की सफलता के लिए अध्यापक में निम्नलिखित विशेषताएँ होनी वांछनीय है।

- धैर्यपूर्वक सुनना
- संवेदनशीलता
- स्वीकृति एवं दूसरों को उनके दृष्टिकोण से समझने का प्रयास
- वस्तुनिष्ठता
- बालक की योग्यता तथा सामर्थ्य के प्रति विश्वास
- निष्कपटता तथा अकृत्रिमता

वैसे तो साक्षात्कार के सही उपयोग के लिए व्यक्तिगत निपुणता तथा कौशल की आवश्यकता होती है जो विशेष प्रशिक्षण द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है इसलिए अच्छा होगा कि जिनकी समस्याएँ भावना प्रधान हों और जिनकी मनः स्थिति, भावों तथा व्यवहार को समझना अध्यापक के लिए कठिन हो ऐसे बच्चों की सहायता के लिए वे अपने आसपास के किसी मनोवैज्ञानिक अथवा निर्देशनकर्ता की सलाह लें। परंतु फिर भी तथ्यों के संकलन तथा विशेषकर माता-पिता से विचार-विमर्श के लिए इस विधि को बहुत उपयोगी माना गया है। अच्छा होगा कि साक्षात्कार के पहले ही यह निश्चित कर लिया जाय कि बातचीत किस विषय से संबंधित होगी तथा कौन से प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों को पहले ही लिखकर एक सूची बना ली जाती है और उन्हीं को आधार मानकर बातचीत की जाती है। प्रश्नों की भाषा और उनका रूप ऐसा हो ताकि उत्तर देने वाला व्यक्ति केवल 'हाँ' या 'न' में ही उत्तर न देकर कुछ वाक्यों में ही वांछनीय सूचना दे।

प्रश्नावली

व्यक्ति के अध्ययन के लिए एक अन्य विधि है, प्रश्नावली। इसमें सरल भाषा में प्रश्न दिए जाते हैं जो व्यक्ति के विषय में साधारण सूचनाएँ प्राप्त कराने में सहायक होते हैं। कुछ योग्यताओं और व्यक्तित्व गुणों की जानकारी के लिए प्रश्नावलियाँ बना ली जाती हैं। यद्यपि मानकीकृत प्रश्नावलियाँ तथा सूचियाँ उपलब्ध हो सकती हैं परंतु हो सकता है अध्यापक इनका भली भाँति प्रयोग न कर पाए इसलिए उन्हें अपनी आवश्यकतानुसार खुद ही प्रश्नावली बनानी चाहिए।

छोटे बच्चे जो अपरिपक्व होते हैं और जिन्हें भाषा का उतना ज्ञान नहीं होता, उनके विषय में सूचनाएँ उनके माता-पिता, अभिभावक तथा अन्य संपर्क में आने वाले महत्वपूर्ण व्यक्तियों से प्राप्त की जानी चाहिएँ और प्रश्नावली उन्हीं से भरवायी

जानी चाहिए। थोड़ी बड़ी उम्र के विद्यार्थी स्वयं प्रश्नावली के उत्तर दे सकते हैं। कभी-कभी बड़े छात्रों को भी प्रश्नावली के उत्तर देने में अध्यापक तथा माता-पिता के सहयोग की आवश्यकता होती है। ऐसी एक प्रश्नावली जिससे व्यक्तिगत सूचना एकत्रित की जा सकती है नमूने के तौर पर संलग्न सूची (Appendix) में दी गई है। ऐसे विद्यार्थी जो थोड़े परिपक्व हैं और जिनकी पठनयोग्यता अच्छी है वह प्रश्नावलियों द्वारा अपनी अभियोग्यता, कौशल और विशेष क्रियाओं में योग्यता का थोड़ा बहुत पता लगा सकते हैं। यहाँ कुछ छोटी-छोटी प्रश्नावलियाँ उदाहरणार्थ दी जा रही हैं जिनके प्रश्नों को पढ़कर अध्यापक तथा विद्यार्थी यह जान सकेंगे कि प्रश्नावली तथा जाँच सूची व्यक्तित्व विशेषताओं की जानकारी दिलाने में किस प्रकार सहायक हैं।

जिस प्रश्नावली के उत्तर में "हाँ" की संख्या अधिक है उससे संबंधित क्षेत्र में विद्यार्थी की सफलता प्राप्ति की संभावना अधिक होगी।

हमारी अन्य योग्यताएँ

हमारी सब योग्यताएँ लेखन-पत्र-परीक्षणों द्वारा ही नहीं मापी जातीं। बहुत सी अन्य अभियोग्यताओं एवं कौशलों के विषय में दैनिक कार्यों तथा अवकाश के समय की जाने वाली क्रियाओं के द्वारा जाना जा सकता है। ऐसी अभियोग्यताओं और कौशलों में सृजनात्मक, प्रवर्तक, शारीरिक, हस्तकौशल, कलात्मक आदि से संबंधित क्रियाएँ होती हैं।

प्रायः इन योग्यताओं का आभास विद्यार्थी की बाल्यावस्था में ही हो जाता है। यदि माता-पिता शिक्षित होते हैं और उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती है तो वे बच्चे की इन योग्यताओं के विकास के लिए प्रयत्न भी करते हैं। प्रायः देखा जाता है कि कुछ छात्रों में प्रारंभ से ही कविता लिखने, वाद्य बजाने अथवा संगीत की योग्यता होती है, कुछ चित्रकारी में भी कुशल होते हैं। कुछ में शारीरिक योग्यता अधिक होती है। वे स्कूल में खेल कूद में भाग लेना पसंद करते हैं। परंतु प्रायः इन प्राकृतिक योग्यताओं पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता क्योंकि माता-पिता तथा अध्यापक शैक्षिक उपलब्धि को ही अधिक महत्व देते हैं उनके अनुसार बच्चों को अपनी शारीरिक शक्ति और मानसिक योग्यता का सबसे अधिक प्रयोग विषय ज्ञान को बढ़ाने के लिए ही करना चाहिए। इसलिए वे उन्हें उत्तम शैक्षिक उपलब्धि के लिए ही प्रेरित करते रहते हैं परंतु अर्जित योग्यताओं में उन्हें प्रयत्न करने पर भी उतनी सफलता नहीं मिल पाती जितनी कि जन्मजात प्राकृतिक योग्यताओं के विकास द्वारा मिल सकती है।

सामान्य सृजनात्मक योग्यता

प्रत्येक व्यक्ति में जन्म से ही सृजनात्मक रूप से सोचने और चिंतन करने की योग्यता होती है। परंतु इनका पूर्ण विकास कुछ ही व्यक्तियों में हो पाता है। जिस स्कूल या घर के वातावरण में बच्चों को स्वयं कार्य करने, अपने विचार व्यक्त करने, निर्णय लेने, अपनी इच्छा के कार्य कलापों में भाग लेने की कुछ सीमा तक स्वतंत्रता और सुविधा होती है उनमें सृजनात्मक योग्यता का विकास संभव है। ऐसे ही व्यक्ति अपने नए विचारों द्वारा कला, संगीत, लेखन, नाटक अथवा औद्योगिक क्षेत्रों में नवीनता प्रदान करते हैं, नए अविष्कार कर सकते हैं और सामाजिक, वैज्ञानिक तथा साहित्यक उन्नति में सहायक होते हैं। उदाहरण स्वरूप नीचे कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं। जिनके आधार पर विद्यार्थियों में सृजनात्मक योग्यता के विषय में अनुमान लगाया जा सकता है। अध्यापक विद्यार्थियों को इन प्रश्नों के उत्तर

"हाँ" या 'न" में देने के लिए निर्देश दें।

1. का तुम्हें बहुत विषयों पर नए विचार अते हैं?
2. क्य तुम नई कहानी, लेख, नाटक, कविता, राग या चित्र का निर्माण अपने आप कर लेते हो?
3. क्या तुम शब्दों, विचारों, वस्तुओं को नए अनोखे रूप में प्रस्तुत कर सकते हो?
4. क्या तुम विभिन्न प्रचलित विधियों तथा प्रणालियों में दोष तथा त्रुटियाँ निकाल कर उनके लिए नए एवं अच्छे सुझाव दे सकते हो?
5. क्या तुम अपने कार्य को औरों से हटकर नए ढंग से करने का प्रयत्न करते हो?
6. क्या तुम नए परिवर्तनों से घबरा जाते हो?
7. क्या तुम अपने काम को बिना किसी की सहायता के अपने ढंग से करना पसंद करते हो?

इन्हीं प्रश्नों के उत्तर यदि अध्यापक स्वयं किसी विद्यार्थी के विषय में दे तो ये प्रश्न इस प्रकार पूछे जा सकते हैं :

1. विद्यार्थी को बहुत विषयों पर नए विचार आना।
2. नई कहानी, लेख, नाटक, कविता, राग या चित्र का निर्माण अपने आप कर पाना।
3. शब्दों, विचारों, वस्तुओं को नए व अनोखे रूप में प्रस्तुत कर पाना।
4. विभिन्न प्रचलित विधियों तथा प्रणालियों में दोष तथा त्रुटियाँ निकालकर उनके लिए नए एवं अच्छे सुझाव देना।
5. अपने कार्य को औरों से हटकर नए ढंग से करने का प्रयत्न करना।
6. नए परिवर्तनों से घबरा जाना।
7. अपने काम को बिना किसी सहायता के अपने ढंग से करना पसंद करना।

कला में योग्यता

इसी प्रकार कला के क्षेत्र में अभियोग्यता को जानने के लिए उदाहरण के तौर पर प्रश्न दिए गए हैं जिनके उत्तर विद्यार्थी "हाँ" या "नहीं" में दें।

1. क्या तुम ड्राइंग या पेन्टिंग करना पसंद करते हो?
2. क्या तुम ऐसी पद्धति या संरचना का प्रयोग करते हो जो अन्य विद्यार्थियों से भिन्न होती है।
3. क्या तुम्हारी रुचि किसी अन्य कला जैसे—संगीत, नाटक, वाद्य बजाने में भी है?
4. क्या तुम विचारों, भावनाओं को कला के द्वारा व्यक्त कर पाते हो?
5. क्या तुम्हें अन्य व्यक्तियों द्वारा रचित कलात्मक रचनाओं में रुचि है?
6. क्या तुम अपना अधिकतर खाली समय अन्य व्यक्तियों द्वारा रचित कलात्मक रचनाओं के विषय में जानने तथा उनके गुण दोषों की विवेचना करने में व्यतीत करते हो?
7. क्या तुम ऐसे चित्र, डिजाइन, नक्काशी की गई वस्तुएँ बनाते हो जिनकी दूसरे कलाकार भी प्रशंसा करते हैं?

अध्यापक स्वयं किसी विद्यार्थी के लिए इन्हीं प्रश्नों के उत्तर यदि देना चाहें तो इन प्रश्नों को वे उसी रूप में परिवर्तित करें जिस प्रकार ऊपर (सृजनात्मक योग्यता के अंतर्गत) दी गई प्रश्नावली में किया गया है।

लेखन-कार्य में योग्यता

1. क्या तुम किसी विचार के आधार पर आरंभ से लेकर अंत तक कहानी की रचना कर सकते हो?
2. क्या तुम किसी व्यक्ति के गुणों और विशेषताओं को कम शब्दों में मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत कर सकते हो?
3. क्या तुम्हारे द्वारा लिखित कहानी, लेख, नाटक या कविताएँ आदि अन्य व्यक्तियों द्वारा पसंद की जाती हैं?
4. क्या तुम किसी समस्या को वाद-विवाद, निबंध, संपादकीय लेख या भाषण के रूप में प्रस्तुत कर सकते हो?
5. क्या तुम किसी अधूरी कहानी, कविता या लेख को रोचक ढंग से पूरा कर सकते हो?
6. क्या तुम किसी ऐतिहासिक स्थान तथा प्राकृतिक दृश्य का वर्णन सुंदर तथा सजीव शब्दों में कर सकते हो?

नाटकीय योग्यता

1. क्या तुम अभिनय की मुद्रा या भावावस्था को दिखाने के लिए अपनी आवाज में उपयुक्त उतार-चढ़ाव ला सकते हो?
2. क्या तुम किसी भी प्रकार के व्यक्तित्व को अभिनय द्वारा व्यक्त कर सकते हो?
3. क्या तुम श्रोताओं को अपने अभिनय द्वारा प्रभावित कर लेते हो?
4. क्या वे तुम्हारी प्रशंसा और अनुमोदन करते हैं?
5. क्या तुम मुखाकृति, संकेतों और शारीरिक गतिविधियों द्वारा विचारों को व्यक्त कर लेते हो?
6. क्या तुम भावों एवं अनुभवों को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत कर सकते हो?
7. क्या तुम अन्य व्यक्तियों की भाव भंगिमाओं की अच्छी तरह नकल उतार लेते हो?
8. क्या तुम नाटक के निर्णायकों की प्रशंसा पाने में सफल हो जाते हो?

संगीत योग्यता

1. क्या तुम्हारी आवाज असाधारण रूप से अच्छी है? क्या अन्य व्यक्ति तुम्हें प्रायः गाने के लिए कहते है एवं क्या वे तुम्हारा गाना सुनकर आनंदित हो जाते हैं?
2. क्या तुम किसी संगीत समूह में अपनी कला का निष्पादन करते हो?
3. क्या तुम कण्ठसंगीत या वाद्यसंगीत के निष्पादन में अत्यधिक रुचि रखते हो?
4. क्या तुम अपनी अभियोग्यता में कुशलता प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करने के इच्छुक हो?
5. क्या किसी योग्य अथवा समर्थ निर्णायक के विचार में तुम में अधिकांश व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक संगीत अभियोग्यता है?

शारीरिक कौशल

1. क्या तुम यह अनुभव करते हो कि तुममें शारीरिक शक्ति बहुत अधिक है? क्या तुम्हें परिश्रम के कार्य करने में अधिक प्रसन्नता होती है?
2. क्या तुम्हें प्रतिस्पर्धात्मक खेलकूद के कार्यक्रमों में भाग लेने में आनंद मिलता है?

3. क्या तुम्हें स्कूल में खेलकूद कार्यक्रमों में सदैव सफलता मिलती है?
4. क्या तुम्हें लंबी रोमांचक पद-यात्रा (हाइकिंग), शिविर समारोह तथा मैदान के खेल प्रिय हैं?
5. क्या तुम्हारा शारीरिक सामंजस्य अति अच्छा है?
6. क्या तुम अपना अधिकांश खाली समय हॉकी, बास्केटबॉल, टैनिस, फुटबाल, क्रिकेट आदि खेलों के खेलने में व्यतीत करते हो?

हस्त कौशल

विभिन्न कार्यों को करते समय बाँहों, हाथों तथा उँगलियों की गति में समन्वय का होना आवश्यक है। हस्त कौशल, कारखानों में पैकिंग, फिटिंग, जैसे व्यवसायों के लिए आवश्यक है। शल्य विशेषज्ञ (सर्जन), मोटर मैकेनिक, यंत्र मैकेनिक, टाइपिस्ट आदि, इस कौशल के बिना अपने कार्य में सफलता नहीं प्राप्त कर सकते। इसके अतिरिक्त कला संबंधी व्यवसायों जैसे शिल्प कला, बुनाई, सिलाई, गुड़िया बनाना, मूर्ति कला आदि में हस्त कौशल विशेष रूप से सहायक है। यद्यपि इन कार्यों में अन्य कई योग्यताओं का होना भी आवयक है परंतु हस्त कौशल तो आवयक है ही। नीचे दी गई प्रश्नावली में इससे संबंधित कुछ प्रश्न हैं जिनका उत्तर विद्यार्थी "हाँ" या "नहीं" में दें।

1. क्या तुम किसी वस्तु अथवा जटिल यंत्र के विभिन्न भागों को अच्छी तरह संग्रहित कर लेते हो?
2. क्या तुम किसी ऐसी शिल्प कला में कुशल हो जिसमें तुम्हें सूक्ष्म भागों तथा संवेदनशील उपकरणों से कार्य करना पड़े?
3. क्या तुम्हें ऐसी मशीनों जैसे चलचित्र प्रोजेक्टरों आदि को चलाने में कुशलता प्राप्त है?
4. क्या तुम यांत्रिक उपकरणों जैसे मोटर आदि को अच्छी तरह चला सकते हो?
5. क्या तुम्हें सूक्ष्म भागों वाली वस्तुओं को संग्रहित करना अच्छा लगता है जैसे रेडियो, वायुयान अथवा जहाज के मॉडल आदि?
6. क्या तुम्हें ऐसी वस्तुओं का बनाना अथवा निर्माण करना अच्छा लगता है जिसमें तुम्हें परिश्रम करना पड़े?
7. क्या तुम्हें घर की सजावट की वस्तुएँ बनाना अच्छा लगता है?
8. क्या तुम्हें सिलाई कढ़ाई तथा बुनाई के काम में रुचि है? क्या तुम्हारे द्वारा किए गए इन कामों की दूसरों द्वारा प्रशंसा की जाती है?

योग्यताओं के अन्य प्रमाण तथा विकास

माता-पिता तथा अध्यापक छोटे बच्चों के निरन्तर सम्पर्क में रहने के कारण उनकी योग्यताओं और व्यक्तित्व-विशेषकों के विषय में काफी जानकारी दे सकते हैं। विशेषकर माता-पिता निकट प्रेक्षण के कारण काफी सीमा तक यह जानते हैं कि किस कार्य को बालक कठिनाई से और किसे आसानी से और अच्छी तरह कर सकता है।

> **जरा सोचिए**
>
> इस अध्याय में दी गई प्रश्नावलियों के आधार पर जानने का प्रयत्न कीजिए कि आप में कौन-कौन सी अन्य योग्यताएँ विद्यमान हैं।

इसलिए बालक में विद्यमान किसी भी विशेष योग्यता की वे आसानी से पहचान कर सकते हैं। सहपाठी तथा मित्र भी छात्र को उसकी सफलताओं और निर्बलताओं का आभास कराते हैं।

अध्यापक स्वयं भी किसी भी छात्र की योग्यता और गुणों पर प्रकाश डाल सकते हैं। वे बच्चों में इन योग्यताओं की पहचान के लिए इस अध्याय के पहले पृष्ठों में दी गई प्रश्नावलियों के प्रश्नों का प्रयोग करें। जिस बच्चे में भी इन योग्यताओं में से किसी भी योग्यता के लक्षण दिखाई दें तो इस प्रकार की प्रश्नावली के आधार पर अध्यापक अपने अनुमान की पुष्टि कर सकते हैं। विद्यालय में समय-समय पर होने वाली परीक्षाओं के प्राप्तांक तथा अन्य क्रियाओं में विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ भी उन्हें इस विषय में महत्वपूर्ण सूचनाएँ दे सकती हैं।

प्रत्येक अभिभावक, अध्यापक एवं प्रशासक का कर्तव्य है कि वे बच्चों को निकट से जानने और उनका अध्ययन करने का प्रयास करें। उनकी योग्यताओं और विशेष गुणों की पहचान करें और घर और स्कूल में उपलब्ध संसाधनों एवं सुविधाओं का उनके व्यक्तित्व-विकास के लिए प्रयोग करें। सही अर्थ में शिक्षा का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब शिक्षक गण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के बौद्धिक पक्ष के विकास के साथ-साथ अन्य पक्षों के विकास की ओर भी ध्यान दें। कक्षा में तथा कक्षा के बाहर होने वाले शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा खेलकूद संबंधी कार्यक्रम इस प्रकार आयोजित किए जाएँ ताकि हर एक बच्चे को किसी न किसी क्रिया में भाग लेने का अवसर मिले इससे उनमें आत्मज्ञान तो उत्पन्न होगा ही, प्रंशसा और प्रोत्साहन मिलने पर वे अपनी प्रतिभा को और भी आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित होंगे तथा अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास करेंगे। इन प्रयासों के फलस्वरूप उनमें आत्मविश्वास, आपसी मेल जोल, सहयोग, उत्तरदायित्व, आत्मनिर्भरता आदि विशेषताओं का भी प्रादुर्भाव होगा।

संचयीवृत

छात्र से संबंधित विभिन्न सूत्रों से एकत्र किया गया सूचनाओं और तथ्यों का एक संक्षिप्त विवरण "संचयीवृत" कहलाता है। छात्र के जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित सूचनाएँ समय-समय पर एकत्र की जाती हैं। एक लंबी अवधि तक एकत्र की गई इस प्रकार की सूचनाओं के आधार पर तैयार किया गया संचयीवृत, छात्र की योग्यताओं, गुणों और अन्य विशेषताओं के विकास संबंधी उतार चढ़ाव को दिखाता है।

छात्र जीवन के कई पक्षों से संबंधित व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक जैसी सूचनाएँ यद्यपि विद्यालय में होती हैं परंतु इसे एक सूत्र में बाँधने का प्रयास शायद कभी नहीं किया जाता। संचयीवृत बनाने के लिए महत्वपूर्ण तथ्यों का विश्लेषण कर उन्हें एक स्थान पर संयोजित किया जाता है जिससे कि छात्र की कठिनाइयों और आवश्यकताओं को, उसके जीवन के सभी पक्षों को ध्यान में रखते हुए सही परिप्रेक्ष में समझा जा सके। अध्यापक इस सूचना का प्रयोग विद्यार्थी की समस्याओं को समझने तथा अपने अध्ययन को उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए कर सकते हैं। छात्र द्वारा स्वयं को समझने के लिए भी यह अत्यंत सहायक सिद्ध होगा। वही संचयीवृत उत्तम समझा जाता है जो वास्तविक घटनाओं पर आधारित हो और जिसमें परिवर्तन होती हुई अवस्थाओं का वर्णन हो। इसके लिए विद्यार्थियों का वास्तविक क्रियाएँ करते हुए प्रेक्षण किया जाना चाहिए और उसके आधार पर उनके कार्यों का संक्षिप्त वर्णन और उनकी विशेष उपलब्धियों की चर्चाएँ होनी चाहिए।

संचयीवृत में निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत सूचना एकत्र की जाती है :

व्यक्तिगत सूचना	नाम, जन्मतिथि, जन्मस्थान, लिंग, पता, माता-पिता का निवास स्थान, जाति, धर्म आदि।
पारिवारिक पृष्ठभूमि	माता-पिता का नाम, आयु, शिक्षा, व्यवसाय, छात्र के साथ रहने वाले अन्य व्यक्ति, घरेलू भाषा, भाई बहनों की संख्या व उनकी शिक्षा व व्यवसाय तथा घर की मासिक आय आदि।
स्वास्थ्य संबंधी सूचना	शारीरिक विशेषताएँ, लम्बाई, वजन, कोई बीमारी या रोग अथवा अन्य कोई अक्षमता। स्वास्थ्य संबंधी आदतों का होना, कार्य करने की शक्ति आदि।
शिक्षा	उन विद्यालयों के नाम जहाँ छात्र ने शिक्षा पाई हो। विभिन्न परीक्षाओं तथा विषयों में प्राप्तांक, असफलता अथवा विशेष योग्यता पर विचार, कक्षा में स्थान, मानसिक तत्परता, समस्या का हल निकालने की योग्यता, काम करने की आदतें, सीखने की रीति, हस्तकौशल के कार्य, रचनात्मक कलाओं में उपलब्धि। इन सूचनाओं से छात्र के सीखने की प्रक्रिया को समझने में सुविधा होती है और साथ ही उसकी पढ़ाई में रुचि, इच्छाएँ और अध्ययन के क्षेत्र में संभावित सफलता का भी आभास मिलता है। स्कूल में अनुपस्थिति तथा उसके कारण।
मनोवैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा व्यक्तित्व निर्धारण	मानसिक योग्यता का स्तर, अन्य विशेष योग्यताएँ, अभियोग्यताएँ, रुचियाँ तथा अन्य व्यक्तित्व विशेषताओं से संबंधित सूचना।
व्यावहारिक विधियों द्वारा व्यक्तित्व निर्धारण	प्रेक्षण द्वारा प्राप्त वृतांत लेख, निर्धारण मापनी, आत्मकथा और छात्र तथा माता-पिता के साथ साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त तथ्य।
सहपाठ्य तथा अवकाश क्रियाएँ, विशेष प्रतिभाएँ पारितोषिक आदि।	सहपाठ्य क्रिया कलापों तथा घर में अवकाश के समय की जाने वाली क्रियाओं का विवरण। विशेष कार्यों के लिए मिले हुए पुरस्कार, पारितोषिक आदि।
सामाजिक संबंध, शैक्षिक तथा व्यावसायिक योजना	कक्षा में तथा बाहर मित्रों एवं अन्य समुदायों में सामाजिक संबंध स्थापित करने की योग्यता, बालक तथा माता-पिता द्वारा बनाई गई व्यवसाय संबंधी योजना।
सांवेगिक समायोजन	व्यक्तिगत समायोजन संबंधी सूचना, घर तथा कक्षा में व्यवहार तथा आदतें, जैसे—चुप रहना, घबरा जाना, शर्माना, लड़ना-झगड़ना, रो पड़ना आदि। ऐसे सभी तथ्य जो व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन से गंभीर संबंध रखते हों उन्हें गुप्त रखा जाय।

जरा सोचिए

छात्रों के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं से संबंधित कौन-कौन सी सूचना आपके विद्यालय में उपलब्ध होती है? इस सूचना को विधिवत एक स्थान पर एकत्र करने के लिए आप कौन-सी विधि का प्रयोग करेंगे?

संचयीवृत का उपयोग

आत्मपरीक्षण तथा आत्मनिर्देशन इसके मुख्य उद्देश्य हैं। जिस आयु के बच्चों के लिए इनके उपयोग की यहाँ चर्चा की जा रही है, वहाँ इस तरह के अभिलेख से अध्यापक तथा माता-पिता को बच्चे के स्वास्थ्य, संवेग, शिक्षा, सामाजिक समायोजन संबंधी कठिनाइयों का पता चलता है और उनके निदान के उचित उपायों और विकास की व्यवस्था की जा सकती है।

स्कूल बदलने की स्थिति में संचयीवृत को दूसरे स्कूल में भेजकर नई परिस्थिति में छात्र के समायोजन में सहायता की जा सकती है।

माता-पिता से बच्चे के विषय में विचार-विमर्श करने के लिए बच्चे की शिक्षा में उनके सहयोग के लिए इस अभिलेख से बहुत सहायता मिलती है।

विद्यालय में संचयीवृत की प्रणाली प्रारंभ करने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि अध्यापक को छात्र की ओर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना होगा। अध्यापक के लिए विद्यार्थी को अच्छी तरह जाने बिना इस तरह के अभिलेख को पूरा करना कठिन है अतः उन्हें निश्चय ही बच्चों में व्यक्तिगत रूप से रुचि लेनी होगी और तभी शिक्षा का उद्देश्य भी पूरा हो सकेगा।

सारांश–अध्याय 5

बुद्धि के स्वरूप के विषय में क्या-क्या विचारधाराएँ हैं?	प्रारंभ में बुद्धि को एक सामान्य एकक योग्यता के रूप में माना गया परंतु अब यह माना जाने लगा है कि इसमें अनेक तत्व सम्मिलित हैं। बुद्धि संरचना सिद्धांत के अनुसार बुद्धि को 120 से भी अधिक तत्वों में विभाजित किया गया है।
कुछ प्राथमिक या मूल मानसिक योग्यताएँ कौन-सी हैं?	सात प्राथमिक योग्यताओं का उल्लेख अधिकांश मनोवैज्ञानिकों ने किया है। जोकि शाब्दिक, शब्दप्रवाह, सांख्यिक, दैशिक, तार्किक, यांत्रिक व प्रत्यक्ष ज्ञान हैं। छात्रों में इन योग्यताओं की पहचान शैक्षिक तथा अन्य क्रियाकलापों में उपलब्धि के आधार पर की जा सकती है।
व्यक्तित्व-विशेषताओं की पहचान के लिए प्रमुख व्यावहारिक विधियाँ कौन-कौन-सी हैं?	थोड़े से प्रशिक्षण के बाद अध्यापक प्रेक्षण, प्रश्नावली तथा साक्षात्कार आदि विधियों का प्रयोग सरलता से कर सकते हैं।
संचयीवृत्त किसे कहते हैं?	छात्र के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं से संबंधित एक स्थान पर एकत्र की गई सूचना संचयीवृत्त कहलाती है।

अभ्यास

1. छात्रों की कुछ प्रमुख योग्यताओं की सूची बनाइए, प्रत्येक योग्यता के साथ संबंधित पाठ्यविषयों एवं अन्य क्रिया कलापों को भी लिखिए।
2. बच्चों में व्यक्तिगत विशेषताओं के अध्ययन के लिए प्रेक्षण को अच्छी विधि क्यों माना गया है?
3. कक्षा में आप बच्चे के किस प्रकार के व्यवहारों का अध्ययन कर सकते हैं?
4. पाँच ऐसे प्रश्न लिखिए जिससे किसी बच्चे में लेखन-कार्य अथवा नाटकीय योग्यता का पता लगता हो।
5. किन-किन पहलुओं से संबंधित सूचना बच्चे के व्यक्तित्व के विषय में जानकारी देने में सहायक होती है?

6

कुछ प्रश्न

- विद्यालय की शिक्षा का, बाद के व्यावसायिक जीवन से क्या संबंध है?
- विभिन्न योग्यताएँ, पाठ्यविषयों एवं व्यवसायों से किस प्रकार संबंधित हैं?

उद्देश्य

इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि :

- विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विषय व्यावसायिक जगत के विभिन्न व्यवसायों से संबंधित हैं।
- ग्यारहवीं कक्षा में विद्यार्थियों द्वारा विषयों का चुनाव बाद में अपनाए जाने वाले व्यवसायिक क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।
- एक योग्यता के होने पर विद्यार्थी अनेक विषय-समूहों और अनेक संबंधित व्यवसायों के उपयुक्त हो सकता है।

शिक्षा एवं व्यवसाय से योग्यताओं का संबंध

नवीं-दसवीं कक्षा तक पहुँचते-पहुँचते विद्यार्थी के मन में प्रायः यह विचार उठने लगते हैं कि मेरा जीवन कैसा होगा? मैं जीवन में क्या व्यवसाय करूँगा? मैं एक सिनेमा स्टार बनूँगा या कोई विख्यात संगीतज्ञ? मुझे ग्यारहवीं कक्षा में कौन-से विषय लेकर पढ़ना चाहिए और बारहवीं कक्षा के बाद किस प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए? आदि। निश्चय ही योग्यताएँ पाठ्य विषयों में सफलता, शिक्षा के स्तर और व्यवसाय में प्रवेश और उन्नति के लिए महत्वपूर्ण हैं जैसे कि एक वैज्ञानिक बनने के लिए शाब्दिक योग्यता, व सांख्यिक योग्यता के साथ-साथ विज्ञान विषयों में विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा प्रथमश्रेणी में प्राप्त की जानी चाहिए तथा एक सफल सिनेमा स्टार बनने के लिए सुंदर, प्रभावशाली व्यक्तित्व, उपयुक्त वाणी के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की मुद्रा और भाव-भंगिमाओं को प्रदर्शित कर पाने से संबंधित गुण होने आवश्यक हैं। जिस व्यक्ति में भी ये योग्यताएँ हैं वह एक वैज्ञानिक बनकर अथवा लिपिक बनकर अधिक सफलता और संतोष प्राप्त नहीं कर पाएगा। प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी सबल योग्यताओं का पूर्ण रूप से लाभ उठाना चाहिए। प्रायः व्यक्ति उतने ही सफल और सुखी होते हैं जितना वे अपने आप को "अभिव्यक्त" कर पाते हैं। अर्थात जब वे अपनी अभिक्षमता, कौशलों और योग्यताओं का अधिकतम संभाव्य उपयोग कर सकें।

विद्यार्थी का "संचयीवृत" उसे अपनी सबल योग्यताओं की जानकारी दिलाने में सहायक होता है। यदि किसी विद्यार्थी में हस्तकौशल तथा शारीरिक योग्यता कक्षा के अन्य विद्यार्थियों की तुलना में उच्च स्तर की है परंतु दैशिक और यांत्रिक पचास प्रतिशत विद्यार्थियों से कम स्तर की है तो उसके लिए डिग्री स्तर पर इंजीनियरिंग शिक्षा में जाना एक भूल होगी। संभवतः उसके लिए डिप्लोमा या सर्टिफिकेट स्तर का प्रशिक्षण पाना तथा धातुचादर कारीगर, नक्शानवीस या मशीनिस्ट जैसे कार्यों में जाना अधिक लाभप्रद हो सकता है।

निर्णय इतना सुगम नहीं

किसी भी कार्य में सफलता केवल मानसिक योग्यता, कौशल और अभियोग्यता पर ही निर्भर नहीं होती वरन सफलता प्राप्ति के लिए अन्य कारकों का भी बहुत महत्व होता है। विद्यार्थी की रुचियाँ, शिक्षा एवं प्रशिक्षण के अवसर, परिश्रम एवं लगन से कार्य करने की इच्छा इत्यादि सबका कार्य की सफलता में अपना महत्व है। एक वकील जब अपने मुकद्दमे को प्रस्तुत करता है तो उसे अपनी तार्किक योग्यता, विश्वास कराने की सामर्थ्य, वक्तव्यों को कम से कम शब्दों व अच्छी भाषा में प्रस्तुत करने का कौशल और अभिनय योग्यता की भी आवयकता होती है। मुकद्दमे की अच्छी तैयारी के लिए निरंतर परिश्रम, उत्साह और लगन जैसी विशेषताएँ भी होनी आवश्यक हैं। यह भी सत्य है कि कोई भी मनोवैज्ञानिक किसी भी कार्य में सफल होने के लिए योग्यताओं का शत प्रतिशत ठीक विवरण नहीं प्रस्तुत कर पाएगा। यदि वकील

को क़ानूनी अनुसंधान करना हो या कानूनी टिप्पणियाँ लिखने का कार्य करना हो, तो उसमें वे सब योग्यताएँ होनी आवश्यक नहीं हैं जो हमने ऊपर वर्णित की हैं। फिर भी अध्यापकों के लिए पाठ्य-विषयों, शिक्षा स्तर और व्यवसाय संबंधों को जानना लाभप्रद है ताकि वे विद्यार्थियों में पाठ्यविषयों एवं व्यवसाय संबंधों के बारे में कुछ जागरूकता उत्पन्न कर पाएँ।

जैसाकि हम पहले कह चुके हैं यद्यपि विद्यार्थियों को इस स्तर पर पाठ्यविषय संबंधी निर्णय नहीं लेने पड़ते परंतु पाठ्यविषयों और व्यावसायिक संबंधों की जानकारी से विद्यार्थी विभिन्न पाठ्यविषयों में अपनी उपलब्धि में सुधार लाने के लिए अधिक प्रेरित होंगे विशेषकर अपनी क्षमता व पसंद के पाठ्यविषयों में। दसवीं कक्षा आने तक वे पाठ्यविषयों से संबंधित व्यवसायों में और विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रयत्न भी कर सकते हैं।

इस लेख में दी गई तालिका योग्यताओं, प्रतिभाओं और कौशलों के विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों से संबंध को प्रदर्शित करती है। इस तालिका से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि किसी विद्यार्थी में किसी एक योग्यता या प्रतिभा के होने पर वह उससे संबंधित पाठ्यक्रम अथवा व्यवसाय में अवश्य सफल होगा अथवा किसी पाठ्यक्रम अथवा व्यवसाय में सफल होने के लिए एक ही योग्यता आवश्यक है। इस तालिका से पता चलेगा कि कौन सी योग्यता संबंधित पाठ्यक्रम और व्यवसाय में सफलता के लिए अधिक आवश्यक है विशेषकर सृजनात्मक योग्यता के लिए यह कहना उचित होगा कि यद्यपि हर व्यवसाय में सृजनात्मकता को प्रदर्शित करने की संभावना है परन्तु हमने इस योग्यता के समक्ष उन्हीं व्यवसायों का उल्लेख किया है जिनमें नए विचारों, शब्दों, भावनाओं का प्रयोग एवं वस्तुओं को नए रूप में प्रस्तुत कर पाना कार्य की माँग है। तालिका में प्रायः सभी व्यवसायों के लिए एक से अधिक योग्यता का उल्लेख है। यहाँ कुछ प्रमुख पाठ्यक्रमों (सामान्य तथा वोकेशनल), व्यावसायिक क्षेत्रों तथा उनसे संबंधित योग्यताओं का एक संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इस जानकारी से शिक्षक विद्यार्थियों में व्यावसायिक तत्परता लाने में सहायक हो सकेंगे।

शाब्दिक योग्यता

शब्दों द्वारा व्यक्त करने एवं समझने की योग्यता

पाठ्यक्रम

सामान्य

हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाएँ

व्यवसाय

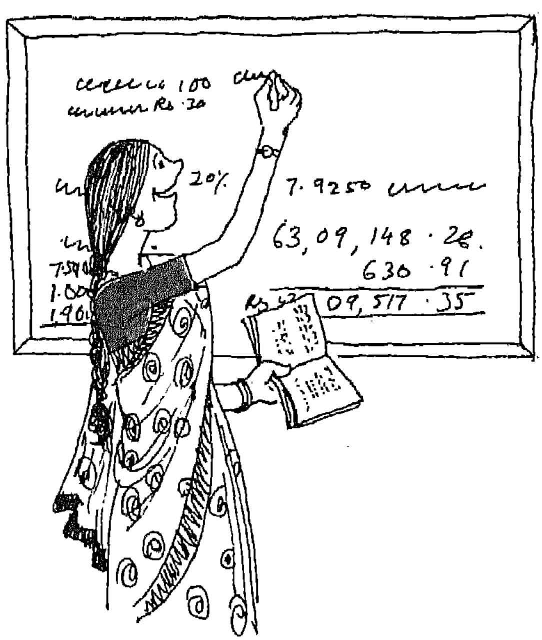
अध्यापक, वकील, लेखक, संपादक, विज्ञापनकर्ता, प्रचारक, पत्रकार; अनुवादक, दुभाषिया, परामर्शदाता, रिसेप्शनिस्ट आदि।

वोकेशनल

लाइब्रेरी साइंस

व्यवसाय

लाइब्रेरियन, अध्यापक, लेखक, अनुवादक आदि।



तार्किक योग्यता

(समस्याओं का तार्किक हल निकालने, योजना बनाने, तथ्यों का प्रयोग करने तथा निष्कर्ष निकालने की योग्यता)

पाठ्यक्रम

सामान्य

गणित, विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति, मनोविज्ञान, नागरिक शास्त्र तथा इतिहास

व्यवसाय

डाक्टर, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्रज्ञ, व्यापारी, वकील, न्यायाधीश, अनुसंधानकर्ता, प्रशासनिक एवं प्रबंधक सेवाओं में ऑफिसर, राजनीतिज्ञ, इतिहासकार, पुरातत्ववेत्ता, मानवविज्ञानी, संग्रहपाल, समाजशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, परामर्शदाता, तथा भ्रमण संबंधी व्यवसाय।

सांख्यिक योग्यता

(अंकों से शीघ्रता एवं शुद्धता से कार्य करने तथा गणित के प्रश्नों को हल करने की योग्यता)

पाठ्यक्रम

सामान्य

गणित, विज्ञान, वाणिज्य

वोकेशनल

बुककीपिंग, बैंकिंग, एकाउंटैंसी एवं ऑडिटिंग, कंप्यूटर अध्ययन तथा सामान्य बीमा

व्यवसाय

लेखाकार, बुककीपर, कोषाध्यक्ष, विक्रेता, लिपिक, कंप्यूटर-प्रोग्रामर, सिस्टम एनालिस्ट, कीपंच-ऑपरेटर, बीमा-अधिकारी, बीमा-एजेंट, बैंक-ऑफिसर, बैंक-क्लर्क, कैशियर आदि

व्यवसाय

गणितविद्, इंजीनियर, गणितशिक्षक, सांख्यिकीविद्, कंप्यूटर-प्रोग्रामर, सिस्टम एनालिस्ट आदि।

दैशिक योग्यता

(वस्तुओं को आकाश में दृष्टिगत करना, आकृति संबंधों को समझना तथा वस्तु को दो या तीन आयामों से देखने की क्षमता)

पाठ्यक्रम

सामान्य

रेखागणित, विज्ञान, मेकेनिकल ड्राइंग, भूगोल, एवं ड्राइंग

व्यवसाय

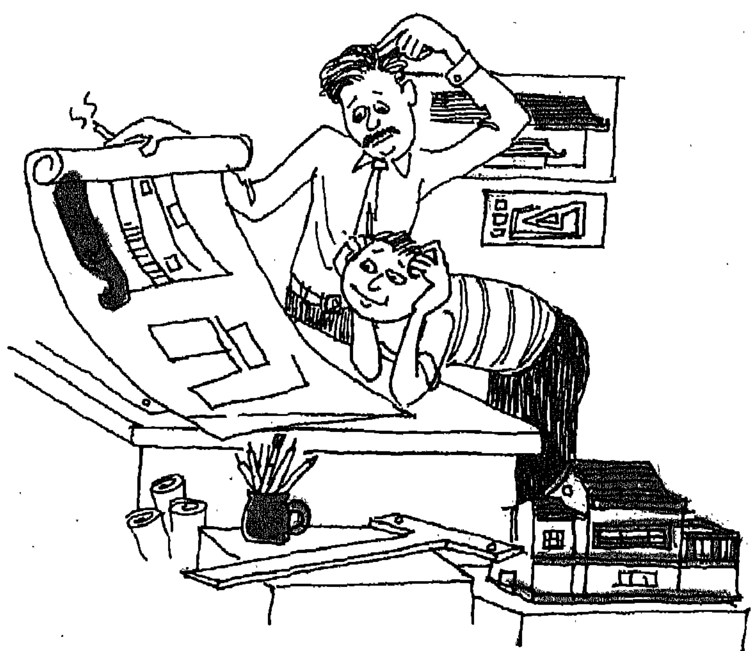
औद्योगिक इंजीनियर, वास्तुविद् (आर्किटेक्ट), नक्शानवीस, इंजीनियर, डाइमेकर, बढ़ई, धातुचादर-कारीगर, कमर्शियल कलाकार, आंतरिक सज्जाकार आदि।

वोकेशनल

वस्त्र डिजाइनिंग, ड्रेस डिजाइनिंग आदि।

व्यवसाय

वस्त्र डिजाइनर, फैशन डिजाइनर, आंतरिक सज्जाकार, ड्रेसडिजाइनिंग, मॉडलिंग, कमर्शियल कलाकार, पेंटर आदि।



यांत्रिक अर्थग्रहण

(यांत्रिक समयबोध, जटिल यांत्रिक उपकरणों को बनाने, चलाने तथा मरम्मत करने के कार्य को शीघ्रता से करने की योग्यता)

पाठ्यक्रम

सामान्य

विज्ञान, मेकेनिकल ड्राइंग, गणित

व्यवसाय

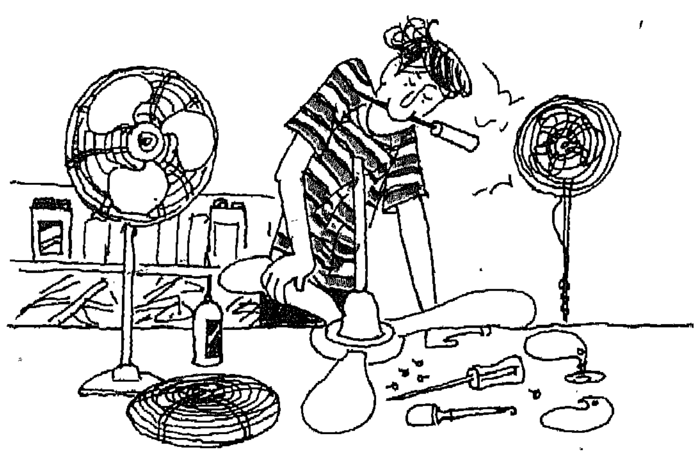
इंजीनियर, वास्तुविद्, वैज्ञानिक, अनुसंधानकर्ता, विमानचालक, अंतरिक्ष अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी संबंधी, परिवहन सेवा संबंधी तथा कारखानों में उत्पादन संबंधी व्यवसाय, कंप्यूटर इंजीनियर, प्रोग्रामर, एनालिस्ट आदि।

वोकेशनल

विद्युत प्रौद्योगिकी, इलैक्ट्रॉनिक टेक्नोलॉजी, वातानुकूलन तथा प्रशीतन प्रौद्योगिकी, मोटर प्रौद्योगिकी, सूचना एवं विरचना प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर अध्ययन आदि।

व्यवसाय

रेडियो एवं टी.वी. यांत्रिक, वातानुकूलन एवं प्रशीतन यांत्रिक, यंत्र मेकेनिक, मोटर मेकेनिक, कारखानों के उत्पादन कार्यों में लगे हुए मशीनिस्ट, फिटर, ग्राइंडर, बढ़ई, शॉपशिक्षक, तथा प्रोग्रामर, सिस्टम एनालिस्ट, की पंच आपरेटर आदि।



लिपिक गति एवं परिशुद्धता

(शुद्धता व शीघ्रता से शब्दों को देखने व लिखने, अभिलेख करने और अंकों तथा अक्षरों का क्रमानुसार विन्यास करने की योग्यता)

पाठ्यक्रम

सामान्य

वाणिज्य

वोकेशनल

बैंकिंग, मार्केटिंग तथा सेल्स-मैनशिप, स्टेनोग्राफी व टाइपिंग, सेक्रेटेरियल प्रैक्टिस, ऑफिस मैनेजमेंट आदि।

व्यवसाय

लिपिक, कैशियर, बुककीपर, फाइलक्लर्क, कोडिंग क्लर्क, स्टॉक-क्लर्क, स्टोरकीपर, प्रयोगशाला-प्राविधिक, सहायक सचिव, टाइपिस्ट, आशुलिपिक, एकाउन्टैंट आदि।



शारीरिक कौशल

(कार्य जिनमें शारीरिक शक्ति, सामंजस्य एवं सहनशक्ति की आवश्यकता हो)

पाठ्यक्रम

सामान्य

खेलकूद, जिम्नास्टिक, तैरना आदि

व्यवसाय

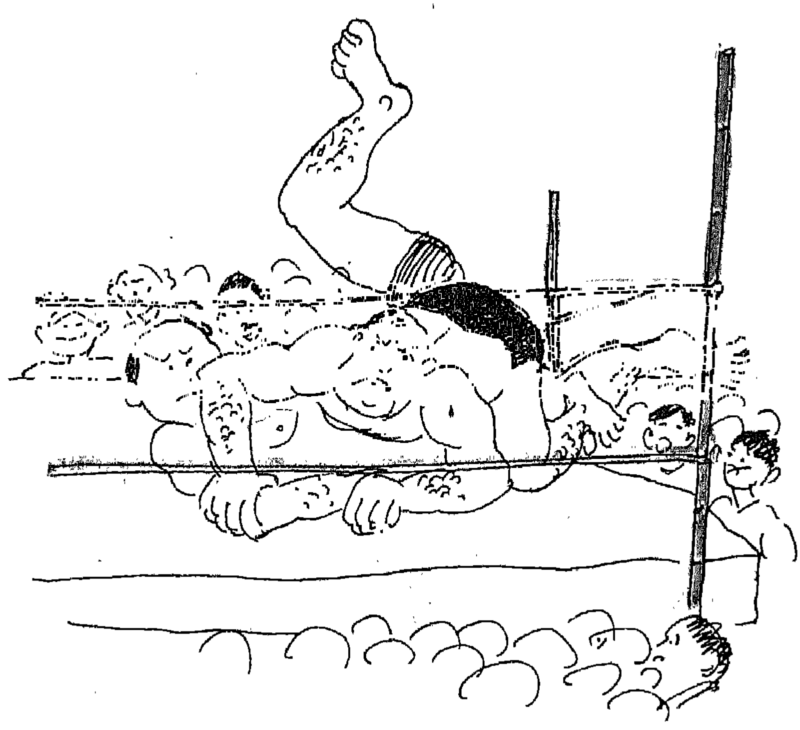
खिलाड़ी, पुलिस, सीमासुरक्षा, जल, थल तथा वायु सेना, अग्निशमन, कृषि तथा वन संबंधी व्यवसाय।

वोकेशनल

मशीनकार्य, बागवानी, कृषि आदि

व्यवसाय

कृषि, बागवानी, वन संबंधी व्यवसाय मशीनकार्य, ट्रैक्टर, क्रेन आदि चलाने वाले, निर्माण कारीगर, मेकेनिक आदि।



हस्त कौशल

(हाथों एवं उँगलियों में समन्वय, सामंजस्य तथा सूक्ष्मता से काम करने की क्षमता)

पाठ्यक्रम

सामान्य

मेकेनिकल ड्राइंग, पेन्टिंग, ड्राइंग, वाद्यसंगीत, सिलाई

व्यवसाय

चित्रकार, मूर्तिकार, वादक, शिल्पकार एवं अन्य कुशल कारीगर, बढ़ई, फिटर, दंतविशेषज्ञ, प्रयोगशाला प्राविधिक, कसीदाकार, बुनकर, सुनार, घड़ीसाज़ आदि।

वोकेशनल

ड्रेस डिज़ाइनिंग एण्ड मेकिंग, वस्त्र डिजाइनिंग, कटिंग एण्ड टेलरिंग, प्रयोगशाला कार्य, स्टेनोग्राफी, टाइपिंग आदि।

व्यवसाय

आशुलिपिक, ड्रेस डिजाइनर, टेलर, वायरमैन, इलैक्ट्रीशियन, बढ़ई, आशुलिपिक, टाइपिस्ट, प्रयोगशाला प्राविधिक आदि।



सृजनात्मक योग्यता

(नए और मौलिक विचारों को वस्तुओं, शब्दों, भावनाओं और कार्यों में प्रस्तुत करना)

पाठ्यक्रम

सामान्य

विज्ञान, कला, गणित, भाषा, संगीत, वाद्य संगीत, चित्रकला, नाट्यकला, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य तथा कार्यानुभव के अंतर्गत की जाने वाली क्रियाएँ।

व्यवसाय

औद्योगिक डिजाइनर, अन्वेषक, विक्रेता, अनुसंधानकर्ता, चित्रकार, पेन्टर, लेखक, कवि गायक, संगीतरचयिता, वादक, अभिनेता, मूर्तिकार, शिल्पकार, फोटोग्राफर, कार्टूनिस्ट, फिल्मनिर्माता, निर्देशक, नर्तक, अभिनेता, बढ़ई, अध्यापक आदि।





कलात्मक

(विचारों एवं भावों को कलात्मक वस्तुओं द्वारा प्रकट करना)

पाठ्यक्रम

सामान्य

कला, गृहविज्ञान

वोकेशनल

आंतरिक सज्जा, वास्तुडिजाइन, ब्यूटीशियन, वस्त्र डिजाइनिंग, ड्रेस डिजाइनिंग, फैशन डिजाइनिंग, भोजन परिरक्षण एवं पोषण आदि।

व्यवसाय

औद्योगिक डिजाइनर, वस्त्र डिजाइनर, फर्नीचर-डिजाइनर, ड्रेस डिजाइनर, मॉडल, कमर्शियल कलाकार, चित्रकार, मूर्तिकार, नर्तक, नाटककार, अभिनेता, आंतरिक सज्जाकार, कला अध्यापक, होटल, रेस्तराँ तथा पर्यटक उद्योग के व्यवसाय, विमान परिचारिका, रिसेप्शनिस्ट आदि।

संगीत योग्यता

(विचारों और भावों को गाने के द्वारा तथा वाद्यों को बजाकर निष्पादन करने की योग्यता)

|

पाठ्यक्रम

संगीत तथा वाद्यों का प्रयोगात्मक एवं सैद्धान्तिक अध्ययन

|

व्यवसाय

संगीतकार, गायक, वाद्य निष्पादक, संगीत तथा वाद्य निर्देशक, संगीत शिक्षक, बैण्डलीडर आदि।

नाटकीय योग्यता

(वाणी से शारीरिक गतिविधियों तथा मुखाकृति द्वारा विचारों को व्यक्त करने की योग्यता)

|

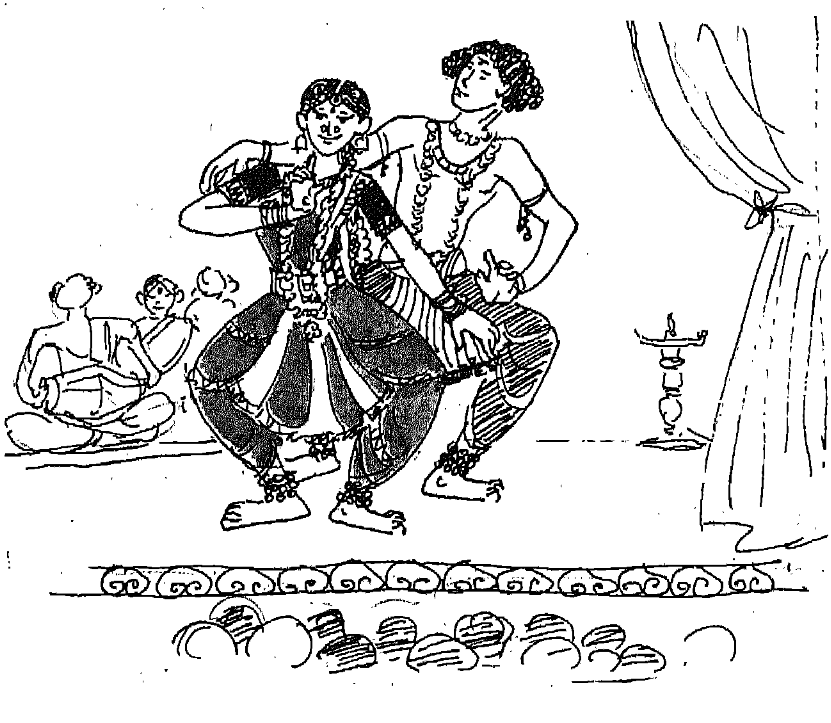
पाठ्यक्रम

नाट्यकला

|

व्यवसाय

अभिनेता, निर्देशक, प्रहसन अभिनेता, नृत्यनिर्देशन आदि।



प्रवर्तक योग्यता

(किसी विचार अथवा क्रिया को ग्रहण कराने के लिए अन्य व्यक्तियों को विश्वस्त कराने की योग्यता)

पाठ्यक्रम

समाजशास्त्र, हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाएँ।

व्यवसाय

विक्रेता, वकील, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, लेखक, पत्रकार, विक्रय मैनेजर, जनसेवा अधिकारी, व्यापारी, पर्यटक गाइड आदि।



जरा सोचिए

जिस व्यवसाय में आप हैं या जिसे अपनाने की सोच रहे हैं उससे संबंधित पाठ्य-विषयों में स्कूली स्तर पर आपकी उपलब्धियाँ किस स्तर की थीं/हैं? आपके विचार से क्या आपमें अपने चुने हुए व्यवसाय से संबंधित आवश्यक योग्यताएँ हैं?

सारांश–अध्याय 6

योग्यताओं एवं पाठ्यविषयों के सम्बन्ध को जानना क्यों लाभप्रद है?	योग्यता पाठ्य-विषयों में सफल बना देती है। योग्यता की जानकारी होने पर विद्यार्थी को पाठ्यविषयों में उपलब्धि में सुधार लाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
किसी पाठ्यक्रम अथवा व्यवसाय में सफल होने के लिए क्या एक ही योग्यता आवश्यक है?	विशेष योग्यता के साथ-साथ अन्य संबंधित योग्यताएँ, कार्य की इच्छा एवं लगन आदि गुण पाठ्यविषयों में सफलता पाने में सहायक हो सकते हैं।
क्या स्कूली कार्यों में उपलब्धि के आधार पर योग्यताओं की जानकारी की जा सकती है?	पाठ्यविषयों तथा अन्य क्रिया कलापों में समय-समय पर होने वाली उपलब्धियाँ विद्यार्थियों को उनकी योग्यताओं का ज्ञान कराने में सहायक हो सकती हैं।
पाठ्यविषयों एवं व्यावसायिक सम्बन्धों की जानकारी क्यों लाभप्रद है?	यह जानकारी स्कूली शिक्षा को और अधिक अर्थपूर्ण बना देती है। साथ ही जीवन-लक्ष्यों की प्राप्त में स्कूली शिक्षा का क्या महत्व है इस तथ्य को समझ पाते हैं।

अभ्यास

शिक्षकों के लिए

1. कार्य में सफलता क्या मानसिक योग्यताओं पर ही निर्भर है?
2. स्कूली स्तर पर क्या आपको अपनी योग्यताओं का थोड़ा-बहुत भी ज्ञान था? कक्षा में किस प्रकार की क्रियाएँ बच्चों की योग्यताओं की जानकारी में सहायक हो सकती हैं?

विद्यार्थियों के लिए

अपनी कुछ योग्यताओं तथा उनसे संबंधित पाठ्यविषयों एवं व्यवसायों की सूची बनाएँ।

7

कुछ प्रश्न

- रुचि क्या है?
- किसी कार्य को करने में रुचि का क्या महत्व है?
- विभिन्न क्रियाओं को किन-किन प्रमुख रुचि-क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है?
- रुचियों के विकास में विद्यालय तथा शिक्षक की क्या भूमिका होती है?

उद्देश्य

इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि:

- बच्चों में रुचियों की पहचान एवं विकास किस प्रकार किया जाय।
- योग्यता व रुचि का क्या संबंध है।
- किसी भी क्रिया में सफलता के लिए एक अभिरुचि प्रतिदर्श की आवश्यकता होती है।
- रुचियों का विद्यालय के पाठ्य विषयों तथा अन्य कार्यों में सफलता की प्राप्ति से गहरा संबंध है।

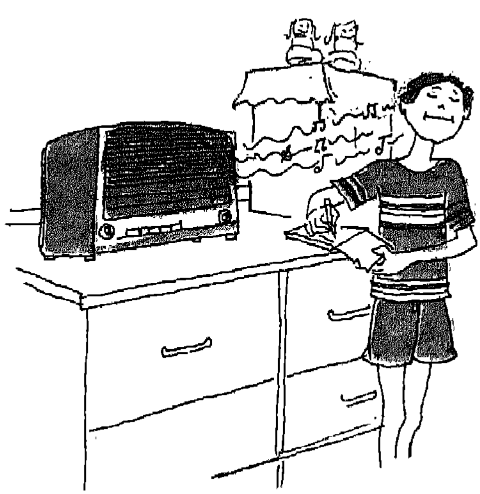
रुचियों की पहचान एवं विकास



स्कूली विषयों में सफलता, सही व्यवसाय का चुनाव एवं सामंजस्य अथवा जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता केवल योग्यताओं के ज्ञान पर ही निर्भर नहीं है अपितु व्यक्ति की रुचियाँ, व्यक्तित्व-विशेषताएँ, परिश्रम और लगन से कार्य करने की इच्छा आदि भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं जितनी कि योग्यताएँ।

जीवन में अप्रसन्न एवं असंतुष्ट व्यक्तियों में कुछ ऐसे हैं जो अपने कार्य को पसंद नहीं करते। आप शायद ऐसे लोगों से परिचित हों—एक अध्यापक जो इंजीनियर बनना चाहता था, एक बैंक आफिसर जो डाक्टर बनना चाहता था, एक लिपिक जो अध्यापक बनना चाहता था। ऐसे व्यक्ति अपने कार्य में अधिक सफल नहीं हो पाए क्योंकि वे अपने कार्य में इतनी रुचि नहीं लेते थे जो उन्हें व्यवसाय में उन्नति के लिए प्रेरित कर सके। अधिकांश व्यक्ति उन कार्यों को करना चाहते हैं जिनसे उन्हें सुख की प्राप्ति हो, जिनसे उनका मनबहलाव हो और जिसमें उनका ध्यान लग सके। अतः न केवल व्यवसाय में सफलता प्राप्ति के लिए अपितु जीवन में सुख और आनंद की प्राप्ति तथा अवकाश के समय के अच्छे उपयोग के लिए भी रुचियों की पहचान एवं विकास आवश्यक है।

प्रारंभिक वर्षों में ही बच्चों को तरह-तरह के कार्यों और क्रियाओं के अनुभव प्रदान कर उनकी सहज रूझानों की पहचान की जा सकती है। जिन कार्यों में बच्चे को आनंद आता है यदि उसे उनके विकास के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाएँ तो विद्यालय बच्चे की इस व्यक्तित्व-विशेषता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। देखा गया है कि बच्चों को खिलौने, कहानी की पुस्तकें,



अन्य खेलने की वस्तुएँ आदि प्रदान करना उनकी रुचियों के विकास में सहायक होते हैं। विद्यालय में इस प्रकार की सुविधाएँ पाठ्यक्रम को रोचक तो बनाती ही हैं साथ ही बच्चों के गुणों व रुचियों के विकास में भी सहायक हो सकती हैं।

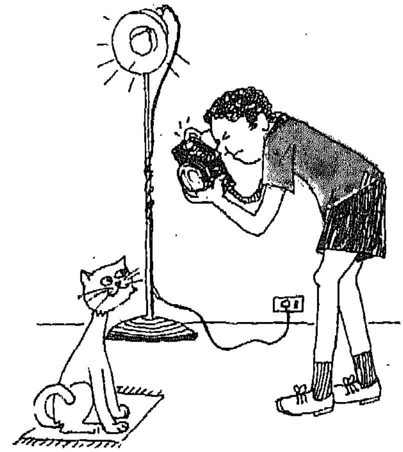
रुचि का अर्थ

जब हमारी किसी कार्य में रुचि होती है तो हम उसे बिना किसी के कहे जाने पर भी करना पसंद करते हैं और उसमें हमें आनंद आता है। यदि किसी व्यक्ति को तैरने, ताश खेलने, चित्र बनाने या वाद्य बजाने में आनंद आता है तो हम कह सकते हैं कि उसकी इन क्रियाओं में रुचि है और यदि उसे इन क्रियाओं को करना पसंद नहीं है तो कहा जाएगा कि उसकी इन क्रियाओं में रुचि नहीं है।

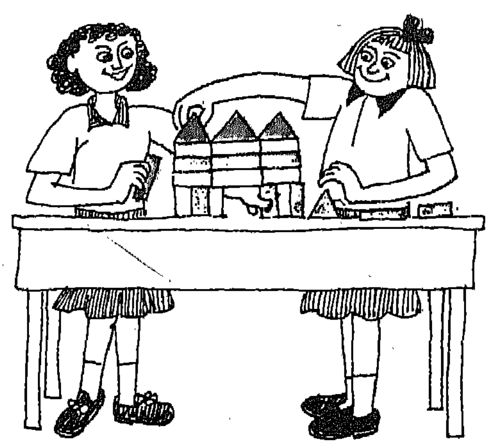
किसी क्रिया में रुचि अथवा अरुचि अनुभव पर आधारित होती है। उदाहरण के लिए यदि किसी को पतंग उड़ाने, मोटर चलाने, नाटक करने, फोटोग्राफ़ी सीखने का अवसर ही न प्राप्त हुआ हो तो यह कहना मुश्किल होगा कि उसकी इन कार्यों में रुचि है या नहीं।

रुचि को एक प्रेरक शक्ति माना गया है जो ध्यान को किसी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया की ओर उन्मुख करती है।

जैसा कि हमने पहले कहा, रुचि अनुभव द्वारा ही अधिगत होती है। किसी कार्य को करने के पश्चात ही उस कार्य में रुचि अथवा अरुचि का ज्ञान हो सकता है। उदाहरण के लिए ऐसे परिवार में जहाँ बच्चों को तरह-तरह के खेल खिलौनों से सीखने व खेलने की सुविधाएँ मिलती हैं वहाँ उन्हें उन क्रियाओं के अच्छा लगने या न लगने का अधिक अनुभव होता है। इसी प्रकार विद्यालय में बालक–बालिकाओं को यदि विभिन्न प्रकार के खेल, गायन, चित्रकला, नाट्यकला, पुस्तकें पढ़ने, वाद-विवाद आदि जैसी क्रियाओं में भाग



जिस काम में दिल लगे उसे करने में हमें आनंद आता है।



रुचि और साथियों का तादात्म्य

लेने के अधिक अवसर मिलते हैं तो उन्हें अच्छे लगने वाले तथा आनंद मिलने वाले कार्यों का पता लगता है। जिन क्रियाओं से बच्चे को आनंद आता है वह उन्हें मेहनत और लगन से तथा अच्छी तरह कर पाता है और उसे उस कार्य के लिए औरों की प्रशंसा मिलती है। इस प्रकार उसे अपनी रुचियों के विकास के लिए प्रेरणा मिलती है। शिक्षक बच्चों को इस प्रकार के अनुभव प्रदान करने में अत्यंत सहायक हो सकते हैं। शिक्षक यदि सजग है तो वह बच्चों को रुचिकर लगने वाले कार्यों की पहचान कर सकता है और रुचिकर कार्यों में अधिक कौशल प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

रुचि जन्मजात एवं अर्जित दोनों ही कारणों से उत्पन्न हो सकती है। रुचि के उद्गम के संबंध में मनोवैज्ञानिक सुपर (Super) लिखते हैं कि "रुचि की उत्पत्ति में जहाँ एक ओर जन्मजात अभिक्षमता एवं अंतःस्रावी तत्व (Endocrine factors) सहायक होते हैं वहाँ दूसरी ओर सुविधाओं एवं सामाजिक मूल्यांकन का विशेष हाथ रहता है। कुछ वस्तुएँ जिन्हें व्यक्ति भली भाँति चाहता है तथा जो उसको मान्यता एवं संतुष्टि प्रदान करती हैं, रुचि कहलाती हैं। यही नहीं, कुछ व्यक्तियों में किसी कार्य को करने की रुचि अपने साथियों के तादात्मय से होती है। कभी-कभी व्यक्ति स्वयं भी रुचि के प्रति अपना प्रत्यय बना लेता है।

जरा सोचिए

आपकी रुचियाँ आपके आसपास के व्यक्तियों से किस प्रकार भिन्न हैं? आपके विचार में इन भिन्नताओं के क्या कारण हो सकते हैं?

जरा सोचिए

आपके घर तथा विद्यालय की कौन-सी परिस्थितियाँ, सुविधाएँ अथवा कठिनाइयाँ, आपकी रुचियों के विकास में सहायक अथवा बाधक हुई हैं?

योग्यताओं की भाँति रुचियों के विषय में भी यह विवाद रहा है कि रुचियाँ जन्मजात हैं या अर्जित। काफी विवाद के फलस्वरूप निष्कर्ष निकाला गया कि रुचियों की उत्पत्ति में वंशानुक्रम एवं वातावरण दोनों का ही योगदान रहता है। अर्थात

एक दूसरी विचारधारा के अनुसार सामाजिक परिस्थितियाँ ही रुचियों को प्रभावित करती हैं तथा सामाजिक और आर्थिक भिन्नता के कारण ही रुचियों में अंतर होते हैं।

यह भी कहा जाता है कि रुचियाँ बाल्यकाल

जरा सोचिए

बाल्यावस्था में आपकी किस प्रकार की क्रियाओं में रुचि थी? किशोरावस्था तथा उसके बाद भी क्या आपकी इन रुचियों में कोई परिवर्तन हुए? आपके विचार में इन परिवर्तनों के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

में टिकाऊ या स्थायी रूप नहीं ले पातीं। जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता है उसकी रुचियाँ भी बढ़ती रहती हैं। 15-16 वर्ष की आयु के समीप उनमें कुछ दृढ़ता आने लगती है और 24-25 वर्ष के समीप ये स्थायी रूप धारण कर लेती हैं।

एक बच्चा जिसमें विज्ञान अथवा कला की योग्यता है वह इन्हें अच्छी तरह तभी सीख पाएगा यदि उसकी इन विषयों में रुचि विकसित की जाए। अभाव, इच्छाएँ, आदतें, संस्कृति, सुविधाएँ, अनुभव आदि कुछ ऐसे ही स्थिर तत्व हैं जो रुचि को निर्धारित करते हैं। अतः उचित सुविधाएँ प्राप्त होने पर विद्यार्थी के लिए उसकी योग्यता वाले विषय को रुचिकर भी बनाया जा सकता है क्योंकि किसी भी कार्य को अच्छी तरह सीखने के लिए योग्यता और रुचि दोनों का ही होना आवश्यक है।

रुचि के प्रारूप

व्यावसायिक मनोवैज्ञानिकों ने रुचियों का वर्गीकरण चार प्रकार से किया है।

1. अभिव्यक्त रुचि (Expressed Interests)

जब व्यक्ति किसी वस्तु, क्रिया अथवा व्यक्ति के संबंध में अपने विचार व्यक्त करता है कि उसे अमुक वस्तु या क्रिया रुचिकर है या नहीं तो वह व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्त की गई रुचियाँ होती हैं। प्रायः इस प्रकार की रुचियाँ अविश्वसनीय होती हैं क्योंकि इसमें अपने वास्तविक विचारों को छिपाकर गलत उत्तर दिया जा सकता है। छोटी उम्र के तथा बिना पढ़े-लिखे व्यक्तियों की रुचियों की जानकारी के लिए इस विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

2. प्रदर्शित रुचि (Manifest Interest)

प्रदर्शित रुचि को शब्दों द्वारा व्यक्त न करके व्यक्ति के व्यवहार के निरीक्षण द्वारा जाना जाता है। यदि कोई बहुत खेलता है, प्रायः हारमोनियम बजाता है, मित्रों के साथ बातचीत में समय व्यतीत करता है तो इन क्रियाओं में उसकी रुचियों का प्रदर्शन होता है। इस प्रकार की रुचि अधिकतर विश्वसनीय होती हैं परंतु कुछ विचारों के अनुसार ये रुचियाँ भी वास्तविक नहीं होती हैं। हो सकता है विजय क्रिकेट में इसलिए अधिक समय व्यतीत करता है क्योंकि उसका मित्र सुशील क्रिकेट खेलना चाहता है।

3. परीक्षित रुचि (Tested Interests)

व्यक्ति की किसी क्षेत्र में रुचि अधिक होने पर उसकी उस विषय में जानकारी भी अधिक होगी और वह उपलब्धि-परीक्षण द्वारा उस विषय में अधिक अंक प्राप्त करेगा। उदाहरणार्थ मीरा ने संगीत में उपलब्धि-परीक्षण दिए जाने पर 86% अंक प्राप्त किए इसलिए इस परीक्षण में उपलब्धि के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उसकी संगीत में रुचि अधिक है।

4. प्रपत्र रुचि (Inventoried Interests)

इस प्रकार की रुचि को मानकीकृत रुचि प्रपत्रों एवं रुचि परीक्षणों के द्वारा ज्ञात किया जाता है। इनमें व्यक्ति को बहुत सी क्रियाओं के समूहों में से कुछ का चयन करना होता है।

> **जरा सोचिए**
>
> आपनी कक्षा में जानने का प्रयत्न कीजिए कि विभिन्न छात्रों के व्यवहार द्वारा प्रदर्शित रुचियों तथा अन्य संबंधित क्रियाओं में उपलब्धियों में क्या समानता है? आपके विचार में इस समानता या असमानता के क्या कारण हो सकते हैं?

जैसा कि हम पहले योग्यताओं की पहचान के संदर्भ में कह चुके हैं, शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग संभव नहीं है। अतः योग्यताओं की तरह विद्यार्थियों की रुचियों की जानकारी के लिए भी उन्हें "प्रेक्षण" तथा उपलब्धि-परीक्षणों का ही सहारा लेना होगा।

रुचि प्रतिदर्श (Interest Patterns)

अधिकांश व्यक्तियों की बहुत सी रुचियाँ होती हैं, केवल एक ही नहीं। ये रुचियाँ असंबंधित विषयों में भी हो सकती हैं जैसे कला, गणित, नागरिक शास्त्र तथा शारीरिक क्रियाओं जैसे खेलकूद, फोटोग्राफी, आदि में।

यद्यपि किसी विद्यार्थी की असंबंधित क्रियाओं में रुचि हो सकती है परंतु उसकी कुछ रुचियाँ दूसरों की अपेक्षा सबल होंगी। रुचियों का समुच्चय साथ ही साथ उनकी सबलता ही रुचि प्रतिदर्श है। सभी क्रियाओं में सफलता के लिए एक रुचि प्रतिदर्श की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए नाटक की वेषभूषा का प्रबंध करने के लिए, पोशाक को चुनने तथा उनको नया स्वरूप देने के लिए कलात्मक रुचि, उनकी खपत के लेखे के लिए सांख्यिकी रुचि की आवश्यकता होगी। इसी प्रकार एक अच्छा चिकित्सक बनने के लिए विज्ञान विषयों में रुचि के अतिरिक्त, रोगियों की सेवा करने, दूसरों के साथ मिलकर कार्य करने, यंत्रों और औजारों से कार्य करने में भी रुचि होनी चाहिए। एक अच्छी गृहिणी को सीने-पिरोने, भोजन बनाने, आंतरिक सज्जा और परिचर्या आदि रुचियों की आवश्यकता होती है।

अर्थात हम यह कह सकते हैं कि एक सामान्य रुचि में अनेक विशिष्ट क्रियाओं की रुचि सम्मिलित होती है। एक उदाहरण लें : यदि किसी विद्यार्थी को विक्रेता का काम पसंद है तो उसे दूसरों से बात करना, विक्रय वस्तु की जानकारी प्राप्त करना, बहुत देर तक कार्य करना, वस्तुओं के आर्डर प्राप्त करना, उनका रिकार्ड रखना और ग्राहकों की शिकायतें सुनना भी पसंद होगा अर्थात विक्रय कार्य में ये सभी क्रियाएँ या कुछ और भी सम्मिलित होंगी। अतः विद्यार्थी में किसी भी रुचि का होना इस बात पर निर्भर है कि उसकी अनेक संबंधित क्रियाओं में रुचि है या नहीं? किसी भी व्यवसाय में अथवा कार्य में सफलता पाने के लिए व्यक्ति की उन सभी क्रियाओं में रुचि होनी चाहिए जो उस व्यवसाय के कार्यों से संबंधित हैं।

रुचि क्षेत्र (Interest areas)

मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों के द्वारा बहुत सी क्रियाओं को रुचि क्षेत्रों में संयोजित किया है। अमरीकी मनोवैज्ञानिक जी. फ्रेडरिक कुदर ने रुचियों के दस क्षेत्रों का वर्णन किया है। अधिकांश क्रियाएँ इन दस क्षेत्रों में वितरित की जा सकती हैं जो इस प्रकार हैं :–

रुचि क्षेत्र	पाठ्य विषय तथा अन्य कार्य
1. सांख्यिकी रुचि	इस रुचि वाले विद्यार्थी प्रायः गणित, बुककीपिंग, लेखाशास्त्र के कार्यों को पसंद करते हैं। इनकी अंकों के साथ काम करने में विशेष रुचि होती है।
2. वैज्ञानिक रुचि	इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले विद्यार्थी भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव बिज्ञान, गणित आदि विषयों में

		आनंद प्राप्त करते हैं। इन्हें विशेषकर प्रयोगात्मक कार्य करना, तथा समस्याओं के हल निकालना अच्छा लगता है।
3.	**यांत्रिक रुचि**	ये मशीनों को बनाना या उनकी मरम्मत करना पसंद करते हैं तथा ये औजारों और यंत्रों के प्रयोग में शीघ्र ही कुशलता प्राप्त कर सकते हैं।
4.	**प्रवर्तक रुचि**	इस रुचि वाले व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से मिलना, अपनी बातचीत द्वारा उन्हें विश्वास दिलाना तथा दूसरों से अधिक संबंध बढ़ाना पसंद करते हैं। इन्हें विक्रय कार्य, सामाजिक आयोजनों जैसे पिकनिक, पार्टी आदि का आयोजन करना तथा उनमें भाग लेना अच्छा लगता है।
5.	**कलात्मक रुचि**	ये व्यक्ति सृजनात्मक कार्य करते हैं। इन्हें रेखाचित्र, चित्रकारी, नृत्य, मॉडल बनाना, अभिनय करना, आंतरिक सज्जा करना, वस्त्रों के डिजाइन बनाना, फूल सजाना आदि काम विशेष रूप से पसंद होते हैं।
6.	**साहित्यिक रुचि**	प्रबल साहित्यिक रुचि वाले व्यक्ति लेख, कहानी, नाटक, कविता आदि पढ़ना, लिखना, सुनना अथवा उनकी रचना करना पसंद करते हैं। इन्हें हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं संबंधी साहित्य में भी रुचि होती है।
7.	**संगीतात्मक रुचि**	इस क्षेत्र के व्यक्तियों को संगीत सभाओं में जाना, वाद्य बजाना, गाना, संगीत संबंधी पुस्तकों को पढ़ना अच्छा लगता है। इन्हें संगीत सृजन में भी रुचि होती है।
8.	**समाज-सेवा रुचि**	समाज-सेवा में रुचि रखने वाले दूसरों की सहायता करना पसंद करते हैं। इन्हें बीमार, निर्धन, दुखी तथा हताश व्यक्तियों की सेवा करना, उनसे बात करना, उनके दुखों के विषय में सुनना और सलाह देना अच्छा लगता है।
9.	**लिपिक रुचि**	इन्हें किसी भी एक प्रकार के कार्य को निरंतर, शीघ्रता और परिशुद्धता से करना अच्छा लगता है। इस रुचि वाले व्यक्ति कार्यालयों में पत्रलेखन, फाइलिंग, टाइपिंग,

		आशुलिपि, टेलीफोन ऑपरेटर आदि कार्यों को पसंद करते हैं।
10.	बाह्य अभिरुचि	इस रुचि वाले व्यक्तियों को घर से बाहर समय व्यतीत करना अच्छा लगता है। इन्हें लंबे सफर करना, शिविर समारोहों में भाग लेना, जंगली फूलों को एकत्रित करना, जंगलों में चिड़ियों तथा अन्य जीव-जन्तुओं का निरीक्षण करना तथा पर्वतारोहण आदि क्रियाएँ करना विशेष रूप से पसंद होता है।

जरा सोचिए

आप जिस व्यवसाय में हैं या जिसमें जाने की सोच रहे हैं वह किस रुचि क्षेत्र से संबंधित है? क्या आपकी रुचि इस रुचि क्षेत्र से संबंधित सभी क्रियाओं में है?

जैसा कि इस अध्याय में हमने प्रारंभ में कहा, विद्यालय में विभिन्न क्रियाओं जैसे खेलकूद, नृत्य, संगीत, अभिनय, चित्रकला, कहानी, लेख, कविताएँ पढ़ने, सुनने तथा लिखने, वाद-विवाद, लकड़ी तथा धातु से विभिन्न प्रकार की सजावट की वस्तुओं को बनाने, नक्काशी करने, बिजली के यंत्रों के मॉडल बनाने, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, कपड़ा रँगने, डिजाइन बनाने, तरह-तरह की छपाई करने तथा अन्य संबंधित कार्यों की अधिक से अधिक सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिए ताकि बच्चों को अपनी रुचियों की पहचान और विकास के अवसर मिल पाएँ। विशेष प्रतिभा वाले बच्चों को कार्य का अनुभव प्राप्त होने पर ही आनंद की अनुभूति होगी। इस प्रकार उन्हें अपनी क्षमता के कार्यों में रुचि उत्पन्न करने का अवसर मिलेगा। इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए कि जो बच्चे निम्न आर्थिक सामाजिक परिस्थितियों से आए हैं, और जिन्हें इस प्रकार की सुविधाएँ घरों में उपलब्ध नहीं होतीं उन्हें इन क्रियाओं में भाग लेने के लिए विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाए। विद्यालय में समय-समय पर इन क्रियाओं में प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाएँ जिससे रुचिकर कार्य में योग्यता का भी विकास हो सके। प्रत्येक शहर में ऐसे कई संस्थान हैं जहाँ बच्चों को अपनी रुचिकर क्रियाएँ करने के अवसर मिल सकते हैं। इस प्रकार के संस्थानों में "बाल भवनों" द्वारा उपलब्ध सुविधाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनकी जानकारी शिक्षक, बच्चों व माता-पिता को दें। विद्यालय की ओर से बच्चों को अजायबघर, चित्रकला संग्रहालयों, कृत्रिम नभ-मंडल (Planetarium), विज्ञान मेलों, बाल मेलों, वैज्ञानिक संस्थानों, विज्ञान-प्रदर्शनियों आदि को दिखाने के लिए ले जाया जाय। प्रत्येक समुदाय में सामुदायिक क्लब, पुस्तकालय, तथा नृत्य, संगीत, चित्रकला तथा अन्य कलाओं की शिक्षा के लिए विशेष संस्थान भी उपलब्ध होते हैं। ऐसे संस्थानों की जानकारी यदि शिक्षकों द्वारा बच्चों को दी जाय तो बच्चों की रुचियों के विकास में सहायता हो सकती है। विद्यालय में

एन.सी.सी., स्काउट्स एवं गाइड, विज्ञान मेले आदि के अंतर्गत की जाने वाली क्रियाओं का बच्चों की व्यक्तित्व-विशेषताओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षक यह देखें कि इन क्रियाओं में अधिक से अधिक बच्चे भाग लें। विद्यालय द्वारा बच्चों को देश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक संस्थानों तथा विशेषकर ऐसे संस्थानों में जहाँ रुचियों के विकास की सुविधाएँ हों, भ्रमण के लिए ले जाया जाए। बहुत से ऐसे क्लब एवं संस्थान हैं जो बच्चों के लिए अवकाश-कालीन शिविर समारोहों, चित्रकला प्रतियोगिताओं, बाल मेलों, हाइकिंग आदि का आयोजन करते हैं। इस संबंध में कुछ सूचना "इंडियन काउंसिल फॉर चाइल्ड वेलफेयर", शहर के बालभवन, "नेशनल स्पोर्ट्स क्लब ऑफ इंडिया" आदि के स्थानीय दफ्तरों से प्राप्त की जा सकती है।

जरा सोचिए

अपने विद्यालय में छात्रों में विभिन्न रुचियों के विकास के लिए आप किस प्रकार के सुझाव देना चाहेंगे?

सारांश–अध्याय 7

किसी भी कार्य की सफलता-प्राप्ति में रुचियों का क्या महत्व है?	रुचि एक प्रेरक शक्ति है जो व्यक्ति को कार्य की ओर उन्मुख करती है। इसलिए रुचिकर कार्य को करते हुए व्यक्ति को आनंद व सुख का अनुभव होता है। ऐसे कार्य को व्यक्ति बार-बार करना चाहता है अतः उसमें सफलता-प्राप्ति की संभावना अधिक होती है।
योग्यता व रुचि का क्या संबंध है?	जिस कार्य में व्यक्ति को आनंद आता है वह उसे मेहनत व लगन से अच्छी तरह कर पाता है अतः रुचिकर कार्य में योग्यता का विकास किया जा सकता है।
रुचियों को किस-किस तरह जाना जा सकता है?	रुचियों के विषय में व्यक्ति के विचारों द्वारा, व्यवहार द्वारा, कार्यों में उपलब्धि द्वारा तथा परीक्षणों द्वारा जाना जा सकता है।
रुचि प्रतिदर्श किसे कहते हैं ?	एक सामान्य रुचि में अनेक क्रियाओं की रुचि सम्मिलित होती है। किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए उससे संबंधित सभी क्रियाओं में रुचि होनी आवश्यक है।

अधिकांश कार्यों को किन-किन रुचि-क्षेत्रों में वितरित किया गया है?	मनोवैज्ञानिकों ने अधिकांश कार्यों को सांख्यिक, वैज्ञानिक, यांत्रिक, प्रवर्तक, कलात्मक, साहित्यिक, संगीतात्मक, समाज सेवा, लिपिक एवं बाह्य दस क्षेत्रों में विभाजित किया है।
रुचि-क्षेत्रों का पाठ्यविषयों, अन्य क्रियाओं तथा व्यवसायों से क्या संबंध है?	अधिकांश पाठ्यविषयों, क्रियाओं तथा व्यवसायों को रुचि-क्षेत्रों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है। व्यवसाय में किए जाने वाले कार्य यदि व्यक्ति के लिए रुचिकर हों तो उनमें सफलता की संभावना अधिक होगी।

अभ्यास

1. अपने रुचिकर लगने वाले कार्यों की सूची बनाइए। आपके विद्यालय में इन रुचियों के विकास के लिए क्या-क्या सुविधाएँ उपलब्ध हैं?
2. ये रुचिकर क्रियाएँ किन-किन रुचि-क्षेत्रों में वर्गीकृत की जा सकती हैं?
3. अपने शहर के कुछ ऐसे समुदायिक संस्थानों के विषय में सूचना एकत्रित कीजिए जहाँ विद्यार्थियों के लिए विभिन्न क्रियाओं में भाग लेने के अवसर उपलब्ध हों।

8

कुछ प्रश्न

- रुचियों का पाठ्यविषयों में उपलब्धि से क्या संबंध है?
- रुचियों के विकास से अवकाश के समय का उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है?
- रुचियाँ विषयों के चुनाव में किस प्रकार सहायक हैं?
- क्या एक रुचि के आधार पर अनेक व्यवसाय चुने जा सकते हैं?

उद्‌देश्य

इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि :

- विद्यालय की विभिन्न क्रियाओं में सफलता-प्राप्ति में रुचियों का विशेष स्थान है।
- व्यवसाय में सफलता बहुत कुछ इस बात पर निर्भर है कि उसमें किए जाने वाले कार्य कहाँ तक व्यक्ति की रुचियों से संबंधित हैं।
- रुचियाँ हमारे जीवन को रुचिकर बनाने तथा अवकाश के समय के सदुपयोग में सहायक होती हैं।
- किसी एक रुचि-क्षेत्र के अंतर्गत अनगिनत व्यवसाय आ जाते हैं।

शिक्षा एवं व्यवसाय में रुचियों की भूमिका

रुचियों का पाठ्यविषयों में उपलब्धि से विशेष संबंध है। जिस विषय में विद्यार्थी की रुचि है उसमें उसे अच्छे अंक प्राप्त करने की संभावना भी अधिक होगी। यह सत्य है कि विद्यालय में सफलता के लिए और भी बहुत से कारक महत्वपूर्ण हैं जैसे बुद्धि, योग्यता, कठिन परिश्रम, पढ़ाई की विधियाँ आदि। परंतु रुचि विद्यार्थी को प्रेरणा देती है और कठिन कार्य करने के लिए भी प्रोत्साहित करती है जिससे कठिन कार्य को करते हुए आनंद की प्राप्ति होती है। अतः शैक्षिक तथा व्यावसायिक जीवन में सफलता-प्राप्ति में रुचियों का प्रमुख स्थान है।

रुचियाँ सहपाठ्य विषयों के चयन में भी विद्यार्थी की सहायता करती हैं। इनकी सहायता से विद्यार्थी का विद्यालयी जीवन आनंदमय बन सकता है क्योंकि रुचिकर कार्यों को करने से विद्यार्थी की प्रतिष्ठा, सम्मान, अनुमोदन जैसी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। इनके कारण उसकी विद्यालय के बाहर की दिनचर्या भी नियमित हो जाती है। इसके अतिरिक्त अवकाश के समय को अर्थपूर्ण ढंग से बिताने के लिए, मन बहलाने व जीवन में सुख-संतोष की प्राप्ति के लिए भी रुचियों का विकास आवश्यक है। दिन प्रतिदिन एक-सा काम करते रहने के कारण उत्पन्न थकान तथा कामकाजी जीवन की नीरसता को दूर करने में भी रुचियों का बहुत महत्व है। जीवन के ऐसे क्षणों में जब कठिनाइयाँ और परेशानियाँ आती हैं, तथा प्रौढ़ावस्था अथवा वृद्धावस्था आने पर जब सक्रिय जीवन में थोड़ी स्थिरता आने लगती है, उस समय व्यक्ति के पास अवकाश का समय भी अधिक होता है तब शैशवकाल में विकसित रुचियाँ जीवन की रिक्तता को दूर करने में अत्यंत सहायक होती हैं।

प्राथमिक स्तर से ही यदि बच्चों की रुचियों के विकास की ओर ध्यान दिया जाए तो दसवीं कक्षा आने तक उन्हें अपनी सबल रुचियों का काफी सीमा तक ज्ञान हो सकेगा और ग्यारहवीं कक्षा में उन्हें अपनी सबल रुचियों तथा योग्यताओं के आधार पर उचित विषयों के चुनाव में सहायता मिलेगी।

विषयों के चुनाव के समय विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य के व्यवसाय की ओर भी ध्यान देना चाहिए जैसे व्यावसायिक क्षेत्र का निर्णय, योग्यताओं के साथ-साथ रुचियों को भी ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। व्यवसाय में भी आनंद तथा सफलता की प्राप्ति में रुचियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। आप ऐसे बहुत से व्यक्तियों को जानते होंगे जो केवल इसलिए काम करते हैं कि उसके द्वारा वे अपना और परिवार का पालन पोषण करते हैं परंतु उन्हें कार्य करते हुए किसी प्रकार के आनंद की प्राप्ति नहीं होती क्योंकि उन्हें अपना काम रुचिकर नहीं लगता।

उदाहरण के लिए राहुल और आशीष को ही लीजिए जो एक ही कार्यालय में काम करते हैं,

उनको एक ही वेतन मिलता है, एक साथ ही पदोन्नति होती है और अनेक दृष्टिकोणों से वे इंजीनियरिंग कार्य में समान रूप से सफल समझे जाते हैं परंतु उन दोनों में एक बहुत बड़ा अंतर यह है कि राहुल की अपने कार्य में रुचि है परन्तु आशीष को इंजीनियरिंग कार्य अधिक रुचिकर नहीं है। राहुल अपने ओवरसियर्स को कार्य करने में प्रोत्साहित करता है और उन्हें उचित प्रकार की सलाह देता है और निर्माण स्थलों पर कार्य के निरीक्षण को महत्वपूर्ण समझता है। इसके विपरीत आशीष निर्माण स्थल पर कार्य निरीक्षण करने से जी चुराता है, अधीनस्थ कर्मचारियों को ठीक समय पर परामर्श नहीं प्रदान करता और कई बार उसका अपने सहयोगियों से झगड़ा भी हुआ है। जब आशीष गौरव से पूछता है कि तुम क्यों निर्माण स्थल पर इतना समय व्यतीत करते हो, तो गौरव सदा कहता है कि मुझे इस कार्य में रुचि है, मैं इस भवन को अच्छा बनते देखना चाहता हूँ। इस प्रकार हम प्रायः देखते हैं कि जिन्हें अपने कार्य में रुचि होती है वे कार्य में अधिक समय और शक्ति लगाने में नहीं हिचकिचाते और घर का तथा अवकाश के समय का बहुत बड़ा भाग अपने व्यवसाय संबंधी कार्यों में लगा देते हैं क्योंकि उस कार्य में उन्हें आनंद मिलता है और उसमें ही सुख और संतोष की प्राप्ति होती है।

आज के इस वैज्ञानिक युग में ऐसे असंख्य व्यवसाय हैं जिनमें से विद्यार्थी अपने लिए किसी भी व्यवसाय का चुनाव कर सकता है। परंतु इसका तात्पर्य यह नहीं कि उसकी रुचियों और प्रशिक्षण के अनुकूल तथा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला केवल एक ही व्यवसाय होगा। ऐसे कई व्यवसाय हो सकते हैं जिनसे उसकी रुचि के साथ-साथ आवयकताओं की भी पूर्ति होगी। उदाहरण के लिए यदि किसी विद्यार्थी की साहित्यिक क्रियाओं में रुचि प्रबल है तो वह संपादक, भाषा-अध्यापक, पत्रकार, लेखक, पुस्तकाध्यक्ष, वकील, न्यायाधीश आदि में से किसी भी व्यवसाय में जा सकता है। इसी प्रकार यांत्रिक कार्यों में रुचि रखने वाले मोटर मेकेनिक, इंजीनियर, मशीनिस्ट, फिटर आदि व्यवसायों में से किसी भी व्यवसाय को अपना सकते हैं। यद्यपि ये सभी व्यवसाय भिन्न हैं और सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करते है।

आगे के पृष्ठों में एक तालिका दी जा रही

जरा सोचिए

किसी व्यवसाय में दो व्यक्तियों से बातचीत करके जानने का प्रयत्न कीजिए कि वे अपने व्यवसाय में कितने संतुष्ट व असंतुष्ट हैं। उनसे इसके कारणों को जानने का भी प्रयत्न कीजिए।

जरा सोचिए

आप जिस व्यवसाय में हैं या जिसे अपनाने की सोच रहे हैं उसमें किए जाने वाले कार्य आपके लिए कितने रुचिकर हैं?

है जो विभिन्न रुचि-क्षेत्रों से संबंधित व्यवसायों को दिखाती है।

इस तालिका की सहायता से अध्यापक छठी, सातवीं तथा आठवीं कक्षाओं के बालक/बालिकाओं को जिन्हें अपनी रुचियों के विषय में थोड़ी बहुत जानकारी हो गई है, अपनी रुचि के क्षेत्र से संबंधित व्यवसायों के विषय में अधिक सूचना एकत्र करने के लिए प्रोत्साहित करें। दसवीं कक्षा आने तक वे इन रुचियों से संबंधित विषयों में अच्छी उपलब्धि के प्रयास भी कर पाएँगे ताकि वे ग्यारहवीं कक्षा में उन विषयों को चुन पाएँ।

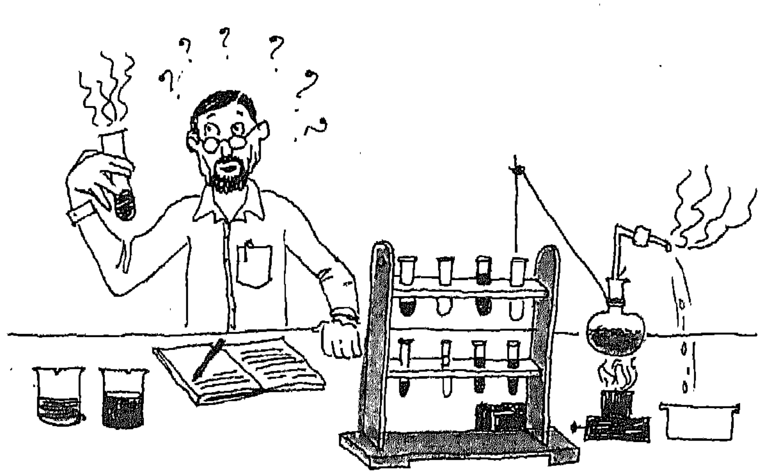
शिक्षक विद्यार्थियों को अपनी पसंद के व्यवसायों से संबंधित उच्च शिक्षा/प्रशिक्षण, कार्य प्रकृति तथा कार्य के अवसरों के विषय में जानकारी एकत्र करने के लिए कहें। इस प्रकार की सूचना विद्यार्थी अपने माता-पिता, सगे संबंधियों, व्यवसाय में काम करने वालों से पत्र व्यवहार करके अथवा उनसे बातचीत करके एकत्र कर सकते हैं। शिक्षा एवं व्यवसाय संबंधी सूचना विद्यालयों में परामर्श दाता से ली जा सकती है। इसके लिए विद्यार्थियों को परामर्शदाता से संपर्क करने के लिए कहा जाए।जहाँ परामर्शदाता उपलब्ध नहीं है ऐसे विद्यालयों में शिक्षक विद्यार्थियों को विषय से संबंधित शैक्षिक और व्यावसायिक सूचना देने का प्रयास करें तथा उन्हें ऐसे सूत्रों जैसे पास के रोजगार के दफ्तर तथा व्यावसायिक साहित्य के विषय में भी जानकारी दें जहाँ से वे स्वयं ऐसी सूचना एकत्र कर सकें।

इस प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों से ही व्यावसायिक जागरुकता तथा तत्परता उत्पन्न करने में सहायक हो सकते हैं।

रुचियों से संबंधित व्यवसाय तालिका

वैज्ञानिक रुचि

भौतिकविद्	पुरातत्ववेत्ता	मत्स्यवैज्ञानिक	गणितविद्
रसायनविद्	कृषिविद्	कृमिशास्त्रवेत्ता	समन्वेषक
धातुकर्मविज्ञ	वनस्पतिविज्ञानवेत्ता	मनोवैज्ञानिक	विज्ञान अध्यापक
सागरवर्णनशास्त्री	चिकित्सक	मानसिक चिकित्सक	सर्वेक्षक
भूगर्भविद्	शरीर विज्ञान विशेषज्ञ	नक्शानवीस	औषधकारक
भूकम्पवैज्ञानिक	जीवाणुवेत्ता	जीव विशेषज्ञ	अनुसंधानकर्ता
खनिजवेत्ता	सलोतरी (वेटरनरी डाक्टर)	प्रयोगशाला प्राविधिक	स्वास्थ्य परिचारिका
अन्वेषक		पथ्यभोक्ता	औषध उत्पादक
	दृष्टि परीक्षक	सांख्यिकीविद्	रसायनशास्त्री
	शल्य चिकित्सक	आयव्ययपरीक्षक	प्रयोगशाला सहायक



यांत्रिक रुचि

- यांत्रिक इंजीनियर
- सिविल इंजीनियर
- केमिकल इंजीनियर
- इलैक्ट्रीकल इंजीनियर
- औद्योगिक इंजीनियर
- कम्प्यूटर इंजीनियर
- खानं इंजीनियर
- इलैक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर
- एरोनॉटिकल इंजीनियर
- लोकोमोटिव इंजीनियर
- विमान चालक
- ओवरसियर
- नक्शानवीस
- व्यावसायिक चिकित्सक
- दन्तशिल्पी
- इलैक्ट्रोप्लेटर
- वातानुकूलन एवं प्रशीतन यांत्रिक
- मशीनिस्ट
- सांचाकार
- फिटर
- इलैक्ट्रिशियन
- रेडियो तथा टेलीविजन मेकेनिक
- यंत्रमेकेनिक
- वैल्डर
- लाइनमैन
- वायरमैन
- घड़ीसाज
- मोटर मेकेनिक
- टेलीफोन मेकेनिक
- डाइफिटर
- लोहार
- वढ़ई
- नलकार
- ऑफिस मशीन ऑपरेटर
- धातुचादर कारीगर
- औजार निर्माता
- क्रेन ऑपरेटर
- लिफ्टमैन
- सानकारीगर
- टाइपसेटिंग मशीन ऑपरेटर
- कंपोजिटर





साहित्यिक रुचि

पत्रकार	साहित्य आलोचक	हस्तलिपि लेखक	रेडियो अभिज्ञापक
कला आलोचक	स्तंभ-लेखक	विज्ञापनकर्ता	न्यायाधीश
कहानीकार	निवन्धकार	विज्ञापन आलोचक	वकील
लेखक	संवाददाता	समुपदेष्टा	प्रवक्ता
कवि	इतिहासकार	अभिनेता	पुस्तकाध्यक्ष
प्रकाशक			विक्रेता

वाणिज्यक रुचि

वैंकर	लेखप्रमाणक	क्रय अधिकारी	कौस्ट एनालिस्ट
बैंक मैनेजर	शेयरदलाल	वकील	उत्पादनकर्ता
बैंक क्लर्क	अल्पशः विक्रेता	निर्यातकर्ता	सचिव
कैशियर	दलाल	बीमाएजेन्ट	आशुलिपिक
कोषाध्यक्ष	थोकव्यापारी	चार्टर्ड एकाउंटेंट	ठेकेदार
लेखाकार	उद्योगपति		विक्रेता



सामाजिक रुचि

समाजसेवक	पादरी/मौलवी/पुरोहित	समुपदेष्टा	विदेशी संवाददाता
जन सम्पर्क अधिकारी	स्वास्थ्य परिचारिका	दुभाषिया	अध्यापक
समाजविज्ञानवेत्ता	व्यावसायिक चिकित्सक	अनुवादक	कैरियर टीचर
परामर्शदाता	व्यायाम प्रशिक्षक	प्रकाशक	स्वास्थ्य निरीक्षक
मनोचिकित्सक	चिकित्सक	पत्रकार	श्रमकल्याण-अधिकारी
मनोवैज्ञानिक	मेयर	लेखक	वालसेविका
वकील	राजनीतिज्ञ	राजदूत	शिशु शिक्षक
कानूनी सलाहकार			ग्राम सेवक



ललितकला रुचि

कर्मिशयल कलाकार	अभिनेता/अभिनेत्री	सज्जाकार	बुनकर
कला समालोचक	मॉडल	वस्त्र-डिजाइनर	कसीदाकार
विज्ञापन-कर्ता	मूर्तिकार	फर्नीचर डिजाइनर	शिल्पकार
विज्यूलाइजर	नर्तक	संगीत-निर्देशक	टेलर
कार्टूनिस्ट	चित्रकार	फिल्म-निर्देशक	गद्दी बनाने वाला
वास्तुविद	वादक	एँटीक-डीलर	बढ़ई
पुरातत्ववेत्ता	संगीतकार	नक्काशी करने वाला	कुम्हार
नाटककार	गायक	सुनार	खिलौनाकार
कवि			पुतली बनाने वाला

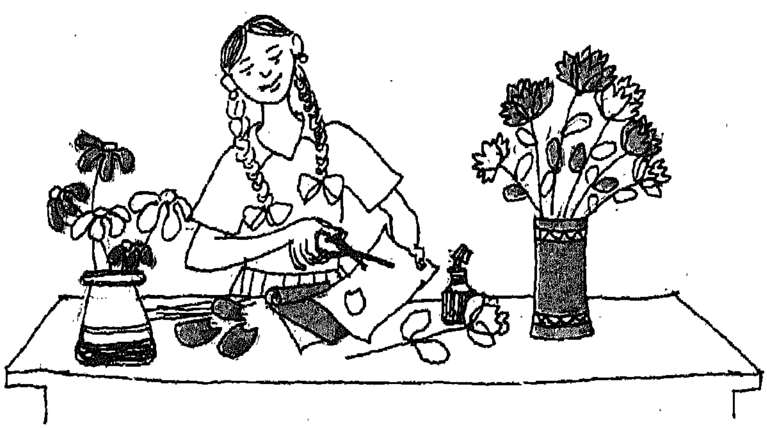


लिपिक रुचि

लिपिक	टाइपिस्ट	होटल-कीपर	स्टॉक क्लर्क
आशुलिपिक	लाइब्रेरी असिस्टैंट	स्टोर-कीपर	विक्रेता
फाइल क्लर्क	सेक्रेटरी (सचिव)	क्रय-अधिकारी	टिकटचेकर
इन्श्योरेन्स क्लर्क	दूरभाप परिचालक	हाउस-कीपर	बुकबाइंडर
लेखाकार	बैंकक्लर्क	स्वागतकर्ता	रेलवे-क्लर्क
कोषाध्यक्ष	बुककीपर	ट्रैफिक पुलिसमैन	प्रयोगशाला-प्राविधिक

बाह्य रुचि

खिलाड़ी	उद्यान रक्षक	थल/जल सेना तथा	जन-सेवा अधिकारी
गाइड	फार्ममेकैनिक	वायुसेना ऑफिसर	स्वागतकर्ता
शिकारी	कुक्कुटपालक	पोताधिकारी	पुरातत्ववेत्ता
कृषक	पर्वतारोही	विमानचालक	बस कंडक्टर
पुष्पवेत्ता	खेलकूद प्रबंधक	विमानपरिचारिका	ड्राइवर
उद्यानविद	अरण्यरक्षक	सलोतरी	विक्रय प्रतिनिधि
कृषि अधिकारी		बीमाएजेंट	सर्वेक्षक



जरा सोचिए

दी गई तालिका में कौन-कौन से व्यवसाय आपके द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषयों से संबंधित हैं?

सारांश–अध्याय 8

रुचि को शिक्षा एवं व्यवसाय की सफलता में एक महत्वपूर्ण कारक क्यों माना गया है?	रुचिकर कार्य को करते हुए विशेष आनंद की प्राप्ति होती है। रुचिकर विषय विद्यार्थी को कम कठिन लगता है इसी प्रकार रुचिकर व्यवसाय में व्यक्ति अपना अधिकांश समय और शक्ति व्यतीत कर देते हैं। रुचिकर कार्य व्यक्ति की कई आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।
विभिन्न रुचि-क्षेत्र व्यवसायों से किस प्रकार संबंधित हैं?	एक रुचि-क्षेत्र के अंतर्गत अनेक व्यवसाय हैं जिनकी जानकारी होने पर व्यक्ति अपने लिए योग्यता और रुचि के उपयुक्त व्यवसाय का चुनाव कर सकता है।

अभ्यास

विद्यार्थियों के लिए

1. जो विषय तुम पढ़ रहे हो वे तुम्हारी रुचियों से किस प्रकार संबंधित हैं?
2. लेख में दी गई तालिका की सहायता से अपनी प्रबल रुचियों से संबंधित व्यवसायों को लिखो।
3. अपनी पसंद के किसी एक व्यवसाय को चुनकर उससे संबंधित चित्र एवं कार्य संबंधी सूचना एकत्रित कर एक चार्ट बनाओ।

शिक्षकों के लिए

आपके द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषयों से संबंधित व्यवसायों के बारे में पास के रोजगार दफ्तर अथवा अन्य प्रशिक्षण केन्द्रों से विद्यालय के पुस्तकालय के लिए पठन सामग्री प्राप्त करिए।

9

कुछ प्रश्न

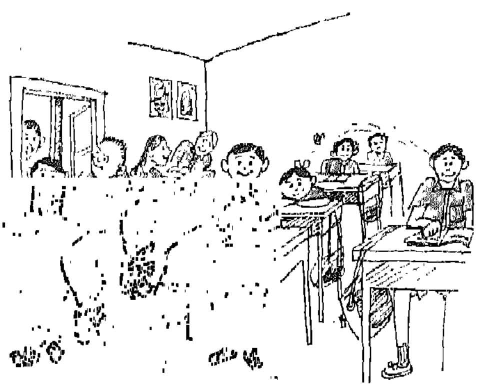
- सीखने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारक कौन-कौन से हैं?
- सीखने की क्रिया को सहज किस प्रकार बनाया जा सकता है?
- बच्चों में अध्ययन संबंधी सही आदतों का विकास किस प्रकार किया जाए?
- "अधिगम संबंधी विकलांगता" क्या है? यह किस-किस प्रकार की होती है?
- सामान्य कक्षा में ही सीखने संबंधी कठिनाइयों का निदान किस प्रकार किया जा सकता है?

उद्देश्य

इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि :

- कक्षा में सभी बच्चे सीखने के लिए समान रूप से तत्पर नहीं होते।
- ये असमानताएँ बच्चों की सामाजिक व मानसिक परिपक्वता, सामाजिक परिवेश व अन्य कई कारकों के प्रभाव के कारण होती हैं।
- अध्ययन संबंधी आदतों तथा पढ़ने-लिखने व अंकों से कार्य कर पाने से संबंधित कठिनाइयों को दूर करने के प्रयासों द्वारा बच्चों की सीखने की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।

सीखने में भिन्नता तथा स्कूली उपलब्धि



हर व्यक्ति की सीखने की क्षमता और शैली में अंतर होता है।

अब तक हमने देखा कि योग्यताओं, रुचियों तथा अन्य व्यक्तित्व-विशेषताओं में अंतर के फलस्वरूप बच्चों की स्कूली तथा अन्य उपलब्धियों में भिन्नता होती है परंतु इस भिन्नता का कारण कुछ और भी है और वह है विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता, तथा सीखने की विधियों में अंतर।

सीखना तथा मानव-विकास

मानव का विकास सीखने के द्वारा हुआ है-- इसका प्रमाण हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति के विकास को देखते हुए मिलता है। मनुष्य प्रत्येक क्षण वातावरण में विभिन्न परिस्थितियों, व्यक्तियों तथा वस्तुओं से क्रिया-प्रक्रिया करते हुए कुछ-न-कुछ सीखता है। शैशव से वयस्क होने तक उसके व्यवहार, चिन्तन आदि में अनेक परिवर्तन आते हैं। सीखने की प्रक्रिया के फलस्वरूप ही उसे नए-नए अनुभव प्राप्त होते हैं जो उसके ज्ञान और कौशल को परिष्कृत करते हैं परंतु सीखने की क्षमता शारीरिक और मानसिक परिपक्वता पर निर्भर है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि अपरिपक्वता में दिया गया प्रशिक्षण व्यर्थ जाता है। उदाहरण के लिए छह माह के बच्चे से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह चलना सीख लेगा। इसी प्रकार तीन वर्ष का बच्चा ठीक से लिखना नहीं सीख पाएगा इसका कारण है इस आयु तक उसके हाथों, उँगलियों तथा मांसपेशियों का पर्याप्त विकास एवं उनमें सामंजस्य नहीं हो पाता। पाया गया है कि पौष्टिक आहार के अभाव में जिन बच्चों का शारीरिक विकास ठीक नहीं होता, उनमें सीखने की क्षमता भी कम होती है। सीखने की क्रिया तभी उत्तम होगी जबकि सीखने की सामग्री व उससे प्राप्त होने वाले अनुभव, सीखने वाले की परिपक्वता एवं उसकी अनुभवात्मक पृष्ठभूमि पर आधारित हों। आपमें से बहुत से शिक्षक शायद यह अनुभव कर चुके हों कि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से आए बालकों के सीखने के ढंग में भिन्नता होती है। आपने शायद यह भी देखा होगा कि जब आप किसी विशेष प्रकार के विद्यार्थी समूह को अलग तरीकों से पढ़ाने का प्रयत्न करते हैं तो उनके द्वारा सीखे गए काम में सुधार हो जाता है। विशेषकर मंदगति से सीखने वाले तथा अवर उपलब्धि करने वाले

छात्रों के लिए यदि उनकी मानसिक योग्यताओं, रुचियों और सामाजिक परिवेश के अनुरूप पठनविधि एवं पठनसामग्री का उपयोग किया जाए तो उनकी स्कूली उपलब्धि में सुधार लाया जा सकता है।

हमारी शिक्षा में क्षति तथा विद्यालयों में छात्रनिष्क्रमण के कई कारणों में प्रमुख कारण हैं शिक्षण विधि तथा पठनसामग्री का बालकों की आवश्यकतानुसार न होना, पाठ्यचर्या का बहुत सरल अथवा कठिन होना तथा सीखने के लिए पर्याप्त सुविधाओं का उपलब्ध न होना आदि। छात्र निष्क्रमण तथा शिक्षा में क्षति को रोकने तथा प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के ध्येय को पूरा करने के लिए विद्यालयी शिक्षा को रुचिकर तथा प्रभावशाली बनाना आवश्यक है। आवश्यकता इस बात की भी है कि सीखने की क्रिया को प्रभावयुक्त, वास्तविक एवं अर्थपूर्ण बनाया जाए ताकि माता-पिता/अभिभावक को बच्चों को विद्यालय में भेजना लाभप्रद प्रतीत हो साथ ही जो बच्चे विद्यालय में आ गए हैं उन्हें विद्यालय में रहना अच्छा लगे और वे कुछ सीखने के लिए प्रेरित हों। सीखने की क्षमता न केवल शैक्षिक उपलब्धि एवं बौद्धिक विकास को वरन सांवेगिक, सामाजिक यानी संपूर्ण व्यक्तित्व-विकास को प्रभावित करती है, अर्थात सीखने संबंधी कौशलों के अभाव में विद्यार्थी अनेक भावात्मक एवं सांवेगात्मक मनोग्रन्थियों के शिकार हो सकते हैं। सीखने में अक्षम बच्चे अच्छे सामाजिक संबंध भी स्थापित नहीं कर पाते। विद्यालयी स्तर पर सीखने में अक्षमता सबसे अधिक अवस्तर शैक्षिक उपलब्धि के रूप में सामने आती है।

शैक्षिक उपलब्धि का स्कूली शिक्षा के बाद के प्रशिक्षण, उच्चशिक्षा तथा व्यावसायिक चुनाव से गहन संबंध है। जिन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि विद्यालय के प्रारंभ से लेकर उच्चतर माध्यमिक स्तर तक प्रायः उच्च स्तर की ही रही है उनके विषय में कॉलेज तथा विश्वविद्यालय की शिक्षा तथा डिग्री स्तर के उच्चस्तरीय व्यवसायों में सफलता की भविष्योक्ति की जा सकती है। ऐसे विद्यार्थी जिनकी शैक्षिक उपलब्धि उनकी मानसिक क्षमता से कम है प्रायः अप्रभावकारी सीखने की विधियों के प्रयोग व अन्य प्रभावों के कारण अपनी क्षमताओं के अनुरूप उपलब्धि नहीं कर पाते। इस प्रकार के कुछ कारकों की चर्चा अब हम यहाँ करेंगे।

सीखने में प्रभावकारी कारक

सीखने की क्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए अध्यापकों को उन सभी कारकों के महत्व को समझना आवश्यक है जो सीखने की क्रिया को प्रभावित करते हैं।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा जानवरों पर किए गए परीक्षणों द्वारा देखा गया है कि सीखने की क्रिया यदि किसी लक्ष्य की ओर केन्द्रित हो तो कठिन क्रियाएँ भी सरलता से सीखी जा सकती हैं। इनमें मनोवैज्ञानिक स्किनर तथा कोहलर द्वारा किए गए परीक्षण उल्लेखनीय हैं। इनके अनुसार यदि विद्यालय के अनुभव व क्रियाएँ विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक हों तो उन्हें सीखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक क्षमताएँ उसकी सीखने की क्षमता को प्रभावित करती हैं। इसलिए यदि पठनविधि, पठनसामग्री अथवा अन्य कोई भी क्रिया विद्यार्थी की क्षमता व रुचि के अनुकूल नहीं है तो संभव है उसकी क्षमता के अनुरूप व्यवहार में परिवर्तन न हो पाए और न ही वह किसी कौशल और ज्ञान को भली भाँति अर्जित कर पाए। बच्चा कितना सीखता है, क्या सीखता है यह इस पर भी निर्भर है कि

उसमें उस कार्य अथवा क्रिया को करने की प्रेरणा है या नहीं।

विद्यालय में अध्यापक का उद्देश्य है व्यवहार का परिष्कार करना तथा उसे समाज सम्मत बनाना ताकि बालक/बालिकाएँ समाज में एक उपयोगी एवं संतुलित जीवन बिता सकें। अध्यापकों के सम्मुख यही एक प्रश्न है कि सीखने की प्रक्रिया से अथवा स्कूल के क्रिया कलापों से विद्यार्थी के व्यवहार में किस प्रकार के अपेक्षित परिवर्तन लाए जाएँ ताकि उसकी उपलब्धियाँ, उसकी क्षमताओं के अनुरूप हों। व्यवहार में परिवर्तन लाने की इसी क्रिया को सीखने की संज्ञा दी गई है। मनोवैज्ञानिक स्किनर के अनुसार "व्यवहार अर्जन में उन्नति की प्रक्रिया को सीखना कहते हैं"। मनोवैज्ञानिक जी.डी. बॉज के अनुसार "सीखना एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति विभिन्न आदतें, ज्ञान एवं दृष्टिकोण सामान्य जीवन की माँगों की पूर्ति के लिए करता है।"

उद्देश्य

किसी भी कार्य को शीघ्रता से सीख पाने के लिए उद्देश्य का स्पष्ट होना आवश्यक है। बच्चा उस क्रिया को नहीं सीखना चाहता जो उसके किसी उद्देश्य की पूर्ति न करती हो। विद्यार्थी परीक्षा के निकट तो रात-रात भर पढ़ते हैं क्योंकि उस समय उनका उद्देश्य परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना है परंतु यही विद्यार्थी विद्यालय की दिन प्रतिदिन की शिक्षा संबंधी एवं अन्य क्रियाओं को सीखने में विशेष तत्परता नहीं दिखाते क्योंकि अधिकतर विद्यार्थियों को विद्यालय के विभिन्न पाठ्यविषयों एवं कार्यक्रमों के उद्देश्यों की कोई जानकारी नहीं होती। इन सबका उनके व्यक्तित्व-विकास एवं जीवन से क्या संबंध है इसका उन्हें स्पष्ट ज्ञान नहीं होता। इसलिए किसी भी विषय का व्यक्तित्व-विकास में तथा जीवन-समस्याओं को समझने एवं उनका हल निकालने में क्या महत्व है इसे विद्यार्थियों को समझाना अत्यंत आवश्यक है।

अभिप्रेरणा–लक्ष्य को पाने की इच्छा सीखने के लिए प्रेरणा उत्पन्न करती है। अभिप्रेरणा विद्यार्थी में क्रियाशीलता तथा उत्साह उत्पन्न करती है और लक्ष्य-प्राप्ति तक ले जाती है। लक्ष्य की स्पष्टता तथा विद्यालय के क्रियाकलापों का रुचिकर होना बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करने में सहायक होते हैं।

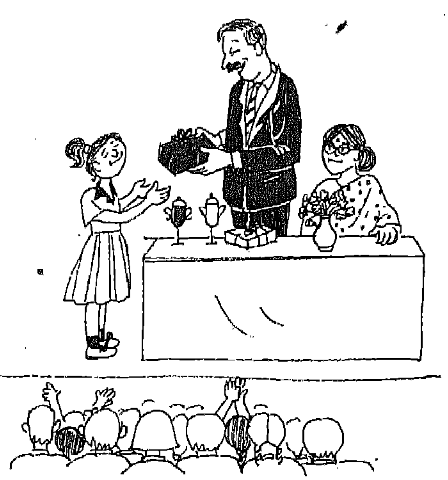
दर्शकों से प्रेरणा पाकर खिलाड़ी मैच में कुशलता का प्रदर्शन करते हैं। शिक्षण की सफलता के लिए आवश्यक है कि छात्र नवीन ज्ञान पाने के लिए प्रेरित हों। यदि शिक्षक को छात्र के पूर्व-ज्ञान के स्तर तथा उसके सामाजिक परिवेश की कुछ जानकारी हो तो वे पाठ्यचर्या को वास्तविक एवं अर्थपूर्ण बना सकेंगे और तभी विद्यार्थी उससे कुछ सीखने के लिए प्रेरित हो सकेंगे।

पुनर्बलन– जब किसी कार्य द्वारा सुख, संतोष व आनंद की प्राप्ति होती है तो उसे फिर से करने की इच्छा की संभावना बढ़ जाती है जिससे व्यवहार की कुशलता भी बढ़ती है। पुरस्कार, दण्ड, परिणाम का ज्ञान आदि पुनर्बलन का काम करते हैं। स्किनर, थार्नडाइक आदि मनोवैज्ञानिकों ने भी अपने प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया कि यदि कोई क्रिया संतोष प्रदान करती है तो उससे सीखने की क्रिया को बल मिलता है। थार्नडाइक ने सीखने की क्रिया के प्रभाव को स्थायी रूप देने के लिए प्रोत्साहन तथा प्रेरणा की भी बात की। अतः अध्यापकों को विद्यालय में ऐसी विधियाँ अपनानी चाहिए जिनसे छात्रों को संतोषप्रद अनुभव प्राप्त हो जैसे विद्यार्थियों के कार्यों का मूल्यांकन करते समय प्रशंसा, प्रोत्साहन आदि का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाय।



पुरस्कार पाने का आनंद सीखने वाले की सीखने की तत्परता को बढ़ा देता है

संगठन– सीखने की क्रिया के विभिन्न अंगों का संगठन नए ज्ञान को पूर्वज्ञान से जोड़ने के लिए किया जाता है। कोई भी नई सीखी जाने वाली क्रिया पुराने अनुभवों से प्रभावित होती है। व्यक्ति नई परिस्थिति या उससे प्राप्त ज्ञान का लाभ पूर्व अर्जित ज्ञान व अनुभव के आधार पर करता है। इसलिए किसी भी नए विषय को पढ़ाने के पूर्व उसका पहले पढ़ाए गए विषय से संबंध जोड़ना आवश्यक है।



थार्नडाइक ने कुछ अन्य नियमों जैसे शारीरिक और मानसिक तत्परता, सीखने की क्रिया का मानसिक स्तर के अनुकूल होना आदि कारकों का भी उल्लेख किया है जिसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं।

शिक्षण विधि– शिक्षण-विधि का प्रभाव अमिट होता है। छोटी उम्र के बच्चों के लिए खेल विधि, क्रिया द्वारा सीखना आदि का अत्यंत महत्व है। कहानियों, संगीत कविताओं तथा नाटक द्वारा इस स्तर पर विद्यालय के पाठ्यक्रम को और भी रुचिकर बनाया जा सकता है।

पाठ्य सामग्री– यदि पाठ्यक्रम को "सरल से कठिन की ओर" के सिद्धान्त के आधार पर संगठित किया गया है तो वह सीखने में सहायक होगा। छोटी उम्र के बच्चों के लिए पठन सामग्री का मातृभाषा में उपलब्ध होना, सीखने की क्रिया को और सरल बना सकता है साथ ही पठन सामग्री यदि बच्चों की मानसिक तत्परता, आवश्यकताओं, क्षमता, और रुचियों को ध्यान में रखकर बनाई जाए तो वह और भी प्रभावकारी सिद्ध होगी।

कार्य का समय और विश्राम– सीखने की क्रिया में समय निर्धारण तथा समय पर विश्राम देने से अधिक सफलता मिलने की संभावना होती है। अभिभावक तथा माता-पिता बच्चों को पढ़ने के लिए समयसारणी बनाते समय खेल तथा विश्राम के लिए पर्याप्त समय का प्रावधान करने का सुझाव दें। विद्यालय में भी पढ़ाई, खेल, तथा विश्राम का उचित समन्वय होना चाहिए।

उचित वातावरण–यहाँ हमारा तात्पर्य बाह्य तथा आंतरिक दोनों प्रकार के वातावरण से है। कक्षा में प्रकाश तथा वायु का प्रबंध, सफाई आदि बाहरी वातावरण को बनाते हैं। इसी प्रकार बच्चे का

सीखने के लिए शारीरिक तथा मानसिक रूप से तैयार होना तथा कक्षा में भयरहित एवं चिन्तारहित वातावरण का होना सीखने के लिए आंतरिक वातावरण बनाते हैं।

जिन कारकों का हमने उल्लेख किया है उनके आधार पर यदि विद्यालय में शिक्षा तथा अन्य क्रियाओं का प्रावधान किया जाय तो संभव है विद्यार्थी विद्यालय के अनुभवों से अधिक से अधिक लाभ उठा पाएँ।

इन्हीं कारकों को आधार मानकर नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं। शिक्षक यदि इन्हें अपनाने का प्रयास करें तो वे संभवतः विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को सहज बना सकेंगे।

जरा सोचिए

जिस विषय को आप पढ़ा रहे हैं उसे किस प्रकार आप खोज विधि अथवा क्रियात्मक विधि द्वारा पढ़ा सकते हैं? बालकों में चिन्तन शक्ति के विकास के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं?

- बच्चों के लिखने, पढ़ने तथा अन्य क्रियाओं को प्रारंभ करने के पूर्व उनकी शारीरिक और मानसिक तत्परता की जानकारी का होना।
- बच्चों के व्यक्तिगत भेदों को जानना अर्थात उनकी रुचियों, योग्यताओं, क्षमताओं एवं संप्राप्ति आदि की जानकारी होना।
- बच्चों की सामाजिक-पारिवारिक पृष्ठभूमि को जानना।
- प्रारंभिक स्तर पर विद्यालय के अनुभवों का नवीन एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाना, ताकि बच्चों को उनमें आनंद का अनुभव हो। इससे उनमें कुछ सीखने व जानने की इच्छा, सहज जिज्ञासा और कौतूहल को बढ़ावा मिलेगा। वे अपने आसपास के वातावरण को जानने व समझने के लिए स्वयं प्रयास करेंगे तथा अपनी क्षमताओं के विकास के लिए प्रेरित होंगे।
- विद्यालय की विभिन्न क्रियाओं में बच्चों की आवश्यकताओं और सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखना।
- बच्चों को खेल द्वारा तथा क्रियाओं द्वारा सीखने के अवसर प्रदान करना।
- छात्रों को विभिन्न समस्याओं पर चिंतन के अवसर प्रदान करना।

शिक्षण में इन कारकों को सम्मिलित किए जाने के फलस्वरूप संभव है मंदगति से सीखने वाले तथा अवर उपलब्धक बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियाँ में भी सुधार हो सके। पढ़ाते समय शिक्षक यह भी जानने का प्रयत्न करें कि विद्यार्थी अपनी चिन्तन एवं तर्क शक्ति, स्मरण शक्ति तथा अन्य संवेदन एवं प्रत्यक्षबोधात्मक क्षमताओं का प्रयोग स्कूल में लिखने-पढ़ने तथा अन्य क्रियाओं के सीखने में किस प्रकार कर रहे हैं? शोध द्वारा ज्ञात होता है कि माता-पिता की शिक्षा, घर की शिक्षा संबंधी सुविधाओं एवं आदतों, शारीरिक स्वास्थ्य एवं आत्मधारणा आदि का विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। विशेषकर निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से आए हुए विद्यार्थियों के लिए विद्यालय में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा तथा स्वास्थ्य, एवं पौष्टिक आहार संबंधी जानकारी उनके मानसिक, शारीरिक एवं शैक्षिक विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकती है।

अध्ययन संबंधी आदतें– माता-पिता एवं बच्चों को प्रभावकारी अध्ययन संबंधी आदतों से अवगत

कराया जाए ताकि शिक्षक विद्यार्थियों में जीवन के प्रारंभिक वर्षों से ही पढ़ने के सही तरीकों का विकास कर सकें। इससे संबंधित कुछ मुख्य बातें इस प्रकार हैं :—

- बच्चों को याद करने या रटने के स्थान पर सोच समझकर पढ़ने तथा उत्तर देने के लिए प्रोत्साहन करना।
- बच्चों को पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार की पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं को उपलब्ध कराना तथा उनके चयन करने में सहायता देना।
- शब्दकोश की सहायता से शब्दज्ञान बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देना।
- पढ़ने के लिए उपयुक्त प्रकाश, स्वच्छ वायु तथा शांत वातावरण का महत्व बताना।
- पढ़ने के लिए किसी एक निश्चित स्थान का महत्व बताना जहाँ सभी पठन-सामग्री रखी जा सके।
- विद्यार्थी की पठनगति तथा शब्दों के ठीक उच्चारण कर पाने की क्षमता की जानकारी होना।
- बच्चे द्वारा शब्दों को सही तथा सामान्य गति से लिखे जाने पर महत्व देना।
- बच्चों को नियमित रूप से तथा समय-सारिणी बनाकर पढ़ने के महत्व को बताना।
- बच्चों को शब्दों के अर्थ और उनके उचित प्रयोग के लिए पर्याप्त अभ्यास देना तथा नये शब्दों को याद करवाकर शब्द भंडार का विकास करना।
- बच्चों में समझ कर पढ़ने की आदत डालना। इसके लिए पढ़ी हुई वस्तु का सारांश लिखवाना अथवा उसकी चर्चा करना।

सीखने से सम्बन्धित कठिनाइयाँ

मनोवैज्ञानिकों ने स्कूल की पढ़ाई तथा अन्य क्रियाओं से अरुचि से संबंधित कुछ अन्य दोषों का उल्लेख किया है जिनके कारण बहुत से बच्चे स्कूली शिक्षा से पूरा लाभ नहीं उठा पाते व कक्षा में अपनी आयु के दूसरे बच्चों की तुलना में सामान्य गति से लिख, पढ़ व समझ नहीं पाते। इन्हें गणित के प्रश्नों को हल करने में भी कठिनाई होती है जिसके फलस्वरूप ये बच्चे अपनी क्षमताओं के अनुरूप उपलब्धि नहीं कर पाते। बहुत से

जरा सोचिए

अपने स्कूली जीवन के प्रारंभिक वर्षों की याद करिए। किस प्रकार के अनुभवों, अन्य व्यक्तियों के व्यवहार व अन्य सुविधाओं ने आपकी सीखने की क्षमता को बढ़ावा दिया। एक शिक्षक की दृष्टि से अब आप उन अनुभवों व अपनी शैक्षिक उपलब्धियों में क्या संबंध देखते हैं?



बच्चे प्रारंभिक कक्षाओं में ही बार-बार अनुत्तीर्ण होने के कारण स्कूल छोड़ देते हैं। यदि वे विद्यालय में रहते भी हैं तो वे कक्षा के कार्यों में विशेष रुचि नहीं दिखाते। स्कूली कार्यों में इस प्रकार की कठिनाइयाँ प्रायः "सीखने से संबंधित विकलांगता" अथवा "अधिगम संबंधी विकलांगता" के कारण होती है।

इन बच्चों की बौद्धिक क्षमता सामान्य बच्चों के समान ही होती है। इनमें प्रायः पढ़ने, लिखने, समझने, अपने को भली प्रकार अभिव्यक्त न कर पाने, याद न कर सकने, क्षण भर के लिए भी शांत होकर बैठ न पाने आदि जैसी समस्याएँ होती हैं। ये कठिनाइयाँ किसी प्रकार के मानसिक पिछड़ेपन अथवा शारीरिक दोष के कारण नहीं होतीं वरन परंतु चिन्तन, तर्क, स्मरण तथा अन्य संज्ञानात्मक क्षमताओं से संबंधित मस्तिष्क के विभिन्न भागों में किसी गड़बड़ी के कारण होती हैं। यह विकलांगता आनुवंशिक कारणों, सांवेगिक परेशानियों तथा कठिनाइयों के कारण हो सकती है। यहाँ देश के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी आँकड़े देना संभव नहीं है। कुछ सर्वेक्षणों के अनुसार हमारे देश की आबादी की 2% जनसंख्या किसी न किसी विकलांगता से ग्रस्त है। इनमें से किस सीमा तक यह विकलांगता अधिगम संबंधी तथा व्यावहारिक कारणों से है इस विषय में भी विश्वसनीय आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं। जामिया मिलिया इसलामिया स्थित, बाल निर्देशन चिकित्सालय द्वारा देहली के 17 प्राथमिक विद्यालयों में किए गए सर्वेक्षण में, बच्चों में अधिगम संबंधी विकलांगताएँ काफी सीमा तक पाई गई और यह छात्र निष्क्रमण का एक बहुत बड़ा कारण भी माना गया। इन बच्चों को एक विशेष कार्यक्रम द्वारा सहायता दी गई जिसमें वैयक्तिक स्तर पर पढ़ने, लिखने तथा गणित संबंधी सहायता दी गई जिसके फलस्वरूप बच्चों की कक्षा में सीखने की क्षमता व तत्परता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सुधार पाया गया।

ऐसे अध्ययन तथा अन्य तथ्यों के आधार पर सम्भवतः यह कहा जा सकता है कि बच्चों की सीखने की क्षमता, तत्परता तथा सीखने की विधियों में विभिन्नता होती है। विद्यार्थी की सीखने की क्षमता किस स्तर की है तथा उसमें लिखने, पढ़ने, अभिव्यक्त कर पाने, अंकों के साथ काम कर पाने आदि के लिए किन आधारभूत कौशलों का विकास हुआ है ऐसी जानकारी के आधार पर इन कमियों को दूर करने के लिए शिक्षक विशेष रूप से प्रयास कर सकते हैं। इस प्रकार विद्यालय में ऐसे विद्यार्थियों की शैक्षिक तथा अन्य क्रियाओं में रुचियों का विकास तथा शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार लाया जा सकता है। इन प्रयत्नों के फलस्वरूप बच्चों को सांवेगिक परेशानियों तथा अनेक मनोग्रन्थियों से भी बचाया जा सकता है। संभव है इससे उनकी निम्न हो गई आत्मधारणा में भी वृद्धि और सुधार हो सके।

आइए देखें कि विद्यार्थियों में अधिगम संबंधी कठिनाइयाँ किस-किस प्रकार की होती हैं।

शब्द अंधता– शब्दों और अक्षरों को सही-सही पढ़ व लिख न पाना। लिखते समय अक्षरों को उलट कर पढ़ना व लिखना जैसे "कल" को "लक", "रमन" को "मरना" आदि। पढ़ते समय अक्षरों को छोड़ देना आदि।

समझने तथा अभिव्यक्त करने में कठिनाई– इस प्रकार के दोषों से ग्रस्त बच्चे पढ़ी गई, लिखी गई तथा सुनी गई सामग्री को ठीक प्रकार से समझ नहीं पाते। यहाँ तक कि उन्हें संकेत तथा हावभाव को समझने, तथा भाषा को स्पष्ट तथा प्रभावपूर्ण ढंग से बोलने में भी कठिनाई हो सकती है।

संख्या संबंधी कठिनाई– कुछ बच्चों को अंकों के चिह्नों को समझने तथा उनके संबंधों को समझने में कठिनाई होती है। गणित के जिन प्रश्नों को सामान्य बच्चे आसानी से कर लेते हैं इन्हें करने में भी इन बच्चों को कठिनाई हो सकती है। इस तरह के बच्चे जोड़ने, घटाने आदि में गलतियाँ करते हैं। प्रारंभिक स्तर पर इन कठिनाइयों की पहचान कर लेने पर इनको दूर किया जा सकता है।

स्मरण संबंधी, ध्यान संबंधी, व्यवस्थित एवं संगठन करने संबंधी कठिनाइयाँ– कुछ बच्चे स्मरण की गई वस्तु को फिर से याद करने, देर तक ध्यान लगाने, कैसी भी सीखे गए कार्य को क्रमानुसार न बता पाने या लिख पाने, काम को व्यवस्थित व संगठित न कर पाने जैसी कठिनाइयों से भी ग्रस्त रहते हैं।

सामान्य कक्षाओं में इन कठिनाइयों का अनुभव करने वाले बच्चों को शिक्षक वैयक्तिक रूप से सहायता प्रदान करें। जिन बच्चों में थोड़ा-बहुत प्रयत्न करने से सुधार न हो तो शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के हेतु प्रशिक्षण प्राप्त मनोवैज्ञानिक की सहायता लें अथवा ऐसे बच्चों को इस प्रकार की सहायता देने वाले बाल निर्देशक चिकित्सालय (Child GuidanceClinic) में भेजें।

सीखने में कठिनाइयों के निदान के कुछ उपाय

सीखने से संबंधित कठिनाइयों को अनुभव करने वाले बच्चों के लिए सामान्य कक्षा में ही शिक्षण-विधि तथा पाठ्यक्रम में बदलाव के प्रयत्न किए जाने चाहिए। लिखाई, पढ़ाई तथा अंकों से संबंधित कठिनाइयों को दूर करने के लिए बहु-इन्द्रिय उपागम (Multi-Sensory Approach) का प्रयोग किया जाना चाहिए जिसके अंतर्गत कुछ क्रियाओं के लिए सुझाव इस प्रकार हैं।

- विशेष अक्षरों को पहचानने व लिखने के लिए बच्चों को अभ्यास कराया जाए जैसे, मोटे व रंग बिरंगे कागज की सहायता से विविध आकार, रंग रूप वाले अक्षरों को काट कर एक कपड़े के थैले में डालें। बच्चे काटे हुए अक्षरों को छूकर अक्षरों को पहचानने का प्रयास करें। कुछ अक्षरों को बच्चे स्वयं अंकित करके काटें अथवा, रंगीन कागज पर चिपका कर काटें।
- अक्षर को पहचानने व सही उच्चारण के साथ अक्षर को स्पर्शेन्द्रिय द्वारा अनुभव भी करायें। बच्चे को आँखें मूँद कर त्वचा पर अंकित किए जाने वाले अक्षरों की पहचान करने के लिए कहा जाय।
- बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में उनकी क्षमता के अनुरूप कार्य दिए जाएँ जहाँ वे एक से सुनाई पड़ने वाले शब्दों का उच्चारण करके अभ्यास करें।
- जिन बच्चों में ध्यान की कमी है उन्हें लगातार व्यस्त रखा जाए। उनके लिए ऐसी क्रियाओं का भी प्रावधान हो जिनमें शारीरिक शक्ति का अधिक से अधिक प्रयोग हो।
- भाषा से संबंधित अन्य कमियों को दूर करने के लिए बच्चों को अपूर्ण शब्द अथवा अर्द्धपूर्ण शब्दों को लिखकर दिया जाय जिन्हें बच्चे पूरा करें जैसे—"राम विद्या—य से च—ता हुआ घ— की ओ—जाता है"। यहाँ इस वाक्य में छूटे गए अक्षरों को लिखकर या बोलकर शब्दों को पूरा करने के लिए कहा जाए।
- इसके अतिरिक्त एक अनुच्छेद में शब्द

विशेष अथवा अक्षर विशेष को रेखांकित करने के लिए कहा जाय

– एक-एक अक्षर अथवा शद को कई-कई वार लिखवा कर, रेखांकिा करके, वाक्यों में प्रयोग करके, खाली स्थानों को भरने वाले प्रश्नाभ्यास करवावर, एक अनुच्छेद या कहानी का सारांश लिखवाकर वच्चों के सही पढ़ने व लिखने में सुधार किया जा सकता है।

जो बच्चे गणित में वमजोर हैं उन्हें ठोस पदार्थो, लकड़ी के टुकड़ों, रंगीन कागज से बनाई गई संख्याओं अथवा वास्तविक वस्तुओं की सहायता से जोड़ना, घटाना, गुणा आदि के संप्रत्ययों को समझाने का प्रयास किया जाए। जिस संख्या को पहचानने व लिखने में कठिनाई हो उन्हें विभिन्न आकार व रंगों में वनवाया जाए अथवा लिखने के लिए कहा जाए।

बच्चों को विद्यालय में या वाहर भ्रमण के समय विभिन्न वस्तुओं को दिखाते समय उनके नाम से, क्रिया से, अन्य वस्तुओं के साथ संवंध से परिचित कराया जाय। इससे वालक की किसी वस्तु की ओर ध्यान केन्द्रित कर पाने की क्षमता का भी विकास होगा।

इसी प्रकार ठोस पदार्थो, लकड़ी के टुकड़ों, विन्दुओं, रेखाओं को जोड़कर किसी अपूर्ण आकृति या तस्वीर को जोड़ने, पूरा करने जैसी क्रियाओं द्वारा वालकों में ध्यान, प्रेक्षण तथा एकाग्रता की क्षमता को वढ़ाया जा सकता है। ये सभी कारक किसी भी सीखने की क्रिया में सहायक पाए गए हैं।

सीखने से संवंधित विकलांगता वाले वच्चों की आत्म धारणा निम्न स्तर की हो सकती है। ऐसे बच्चों के लिए ऐसी गतिविधियों का आयोजन किया जाए जिनसे उन्हें अपनी सीखने की क्षमता व उसमें सफलता का अनुभव हो। वालक ने जितना भी सीखा है उसके लिए उसकी प्रशंसा की जाए और आगे सीखने के लिए प्रोत्साहन दिया जाय।

– विद्यार्थी को अपनी कठिनाइयों और गलतियों को अध्यापक अथवा किसी अन्य विद्यार्थी को समझाने के लिए कहा जाए। अपनी गलतियों के विपय में वताते हुए उसमें उन्हें सुलझाने के लिए अंर्तदृष्टि का विकास होना संभव है। इसी प्रकार अध्यापक भी किसी समस्या को समझाने के लिए उसे करने से पहले वोलकर समझाएँ और उसी समस्या को विद्यार्थी को श्यामपट्ट पर समझाने के लिए कहें।

शिक्षक, विद्यार्थियों को स्वयं को प्रोत्साहित करने के लिए संज्ञानात्मक प्रशिक्षण विधियों को अपनाने के लिए कहें। जैसे–"मैं यह कार्य अवश्य करूँगा/करूँगी या कर सकता/सकती हूँ।" "मुझे परिश्रम करना ही है", "शावाश, मुझे सही उत्तर मिल गया" आदि। इस तरह अपने विपय में सोचने के तरीकों में परिवर्तन लाकर विद्यार्थियों में सीखने की क्षमता व प्रेरणा को बढ़ाया जा सकता है। शिक्षक माता-पिता को भी इन विधियों से परिचित कराएँ तथा वच्चों में अध्ययन संवंधी सही आदतें डालने के महत्व पर जोर दें। शिक्षक तथा माता-पिता द्वारा पाठ्यविपयी पुस्तकों के अतिरिक्त विद्यालय तथा घर में अच्छी पठन सामग्री उपलब्ध कराने के लिए भी प्रयास किए जाने आवश्यक हैं। इससे विद्यार्थियों में चिन्तन शक्ति, तथा लिखने पढ़ने और सीखने से संवंधित अन्य आधारभूत क्षमताओं को बढ़ावा मिलेगा, जिससे

उनकी शैक्षिक तथा अन्य क्षेत्रों में उपलब्धियों में सुधार होने की संभावना बढ़ेगी।

शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यावसायिक चुनाव

हमारी शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि का उसके द्वारा आगे पढ़े जाने वाले विषयों, तथा व्यवसाय के चुनाव व प्रशिक्षण से महत्वपूर्ण संबंध होता है। शिक्षक, अभिभावक व प्रशासक प्रायः विद्यार्थी की मानसिक क्षमता तथा विशेष योग्यताओं में क्षमताओं का अनुमान उसके विभिन्न विषयों में प्राप्तांकों के आधार पर ही करते हैं। दसवीं कक्षा के बाद विद्यालय में विद्यार्थी को विज्ञान, वाणिज्य अथवा मानविकी संबंधी विषयों में कौन से विषय दिए जाएँगे यह इस बात पर निर्भर है कि उसे इन विषय-क्षेत्रों में दसवीं कक्षा में अन्य विद्यार्थियों की तुलना में किस श्रेणी के अंक प्राप्त हुए हैं। ग्यारहवीं कक्षा में चुने गए विषयों का व्यावसायिक क्षेत्रों से क्या संबंध है यह हम पिछले अध्यायों में देख चुके हैं।

शिक्षक के अनुसार यदि किसी विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धियाँ उसकी क्षमता के अनुरूप नहीं हैं तो शिक्षक ऐसे विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता में सुधार के प्रयास करके उनकी उपलब्धियों में कुछ सीमा तक सुधार ला सकते हैं।

सारांश–अध्याय 9

सीखना किसे कहते हैं?	व्यवहार अर्जन में उन्नति की प्रक्रिया को सीखना कहते हैं। मनुष्य प्रत्येक क्षण वातावरण में विभिन्न परिस्थितियों, व्यक्तियों तथा वस्तुओं से क्रिया-प्रक्रिया करते हुए कुछ न कुछ सीखता है। सीखने के द्वारा ही व्यक्ति के व्यवहार, चिन्तन आदि में परिवर्तन आते हैं जो उसके ज्ञान और कौशल को परिष्कृत करते हैं।
कौन-कौन से कारक सीखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं?	किसी भी कार्य को अच्छी तरह सीख पाने के लिए अभिप्रेरणा व उद्‌देश्य का होना आवश्यक है, पुनर्बलन सीखे गए कार्य के संगठन में सहायक होता है। शिक्षण-विधि, पाठ्यसामग्री, कार्य का समय, उचित वातावरण आदि भी सीखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं।
विद्यार्थी की शैक्षिक क्रियाओं में क्षमता को किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है?	विद्यार्थियों में अध्ययन संबंधी सही आदतों का विकास कर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है। प्रभावकारी अध्ययन-विधियों, घर व विद्यालय में पढ़ने की सुविधाओं, अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य व सकारात्मक आत्मधारणा का शैक्षिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है।
सीखने से संबंधित विकलांगता क्या है?	प्रायः विद्यार्थियों में पढ़ने, लिखने, समझने, अपने को भली प्रकार अभिव्यक्त कर पाने, याद करने तथा अंकों से काम करने संबंधित कठिनाइयाँ होती हैं। ये कठिनाइयाँ किसी प्रकार के मानसिक पिछड़ेपन अथवा शारीरिक दोष के कारण नहीं होतीं वरन चिन्तन, तर्क, स्मरण तथा अन्य संज्ञानात्मक क्षमताओं से संबंधित मस्तिष्क के भागों में किसी गड़वड़ी के कारण होती हैं।

सीखने से संबंधित कठिनाइयों के निदान के लिए सामान्य कक्षा में ही किस प्रकार के उपाय किए जा सकते हैं?	बच्चों में चिन्तनशक्ति तथा पढ़ने लिखने और अन्य आधारभूत क्षमताओं को बढ़ावा देने के लिए बहु-इन्द्रिय उपागमों, संज्ञानात्मक प्रशिक्षण-विधियों, *प्रभावकारी अध्ययन-विधियों आदि का प्रयोग सहायक* सिद्ध हो सकता है।

अभ्यास

1. सीखने वाले से संबंधित ऐसे कौन-कौन से कारक हैं जो सीखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं?
2. विद्यालय तथा अध्यापक से संबंधित कौन-कौन से कारक सीखने के वातावरण को बनाते हैं?
3. बच्चों में अच्छी पठन-विधियों के विकास के लिए आप माता-पिता को किस प्रकार के सुझाव दे सकते हैं?
4. "शब्द अंधता" क्या होती है? सामान्य स्तर पर इस कठिनाई से ग्रस्त बच्चों के लिए कक्षा में किस प्रकार के उपाय किए जा सकते हैं?

10

हमारा व्यावसायिक जगत

शिक्षको, अब तक आप यह जान गए होंगे कि आप किस प्रकार विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनके सांवेगिक, वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास में भी सहायक हो सकते हैं। आपने यह भी देखा कि जीवन में सफलता और सुख-संतोष की प्राप्ति काफी सीमा तक उचित व्यावसायिक विकास पर निर्भर है और वास्तविक आत्म-संबोध, सही दिशा में विकसित योग्यताएँ और रुचियाँ, संबंधित विषयों में पर्याप्त शैक्षिक उपलब्धि आदि इसके प्रमुख अंश हैं। व्यावसायिक विकास व्यक्तित्व-विकास का एक महत्वपूर्ण अंश है, जीवन के प्रारंभिक स्तर पर ही इसकी नींव डालनी आवश्यक है जो विद्यार्थियों में व्यावसायिक जागरूकता लाकर ही संभव हो सकती है। आत्म बोध और कार्यजगत की जानकारी इसके महत्वपूर्ण पहलू हैं।

आगे के कुछ पृष्ठों में हमने कार्यजगत की बहुत सामान्य स्तर की जानकारी दी है। वास्तव में पूरे व्यावसायिक जगत में असंख्य व्यवसाय हैं पर यहाँ हम मोटे तौर पर उन्हीं व्यवसायों की चर्चा करने जा रहे हैं जिनकी जानकारी बालक एवं बालिकाओं को शिक्षा के इस स्तर पर दी जानी वांछनीय है। इस स्तर पर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को इस प्रकार की जानकारी देने का उद्देश्य केवल यह है कि वे न केवल अपने आस-पास के कुछ व्यवसायों के विषय में ही जानें वरन उन अनेक अन्य व्यवसायों के विषय में भी जानें जो कि महत्वपूर्ण हैं। हमारा एक और उद्देश्य यह भी है कि विद्यार्थी, अपनी क्षमताओं और रुचियों वाले कुछ व्यवसाय क्षेत्रों की पहचान कर पाएँ और दसवीं या बारहवीं कक्षा आने तक इनके विषय में और अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त करने का प्रयास कर सकें। यह सूचना कक्षा पाँच से आठ तक के विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगी। शिक्षक इस जानकारी को संबंधित पाठ्यविषय को पढ़ाते समय तथा कक्षा के बाहर की जाने वाली अन्य क्रियाओं के समय बातचीत द्वारा विद्यार्थियों तक पहुँचा सकते हैं।

प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षा के बच्चों में व्यावसायिक जागरूकता लाने हेतु कुछ सुझाव एवं क्रियाएँ दी गई हैं जिनका आयोजन सहपाठ्यक्रियाओं के अंतर्गत किया जा सकता है।

(1) पाँच से आठ वर्ष के बच्चों को उनके माता-पिता के व्यवसाय से अवगत कराया जाए जिसके लिए बच्चे अपने माता-पिता से उनके व्यवसाय की जानकारी लेकर कक्षा के दूसरे बच्चों को बताएँ।

(2) कुछ और बड़ी उम्र के बच्चे, माता-पिता के व्यवसाय के अतिरिक्त कुछ और जानकारी भी दें जैसे—घर में क्या-क्या काम किए जाते हैं? उन्हें कौन-कौन करता है? और कौन अच्छी तरह कर पाता है आदि। बच्चों को सगे संबंधियों और पड़ोस के व्यक्तियों के व्यवसायों के विषय में भी जानकारी एकत्र करने के लिए कहा जा सकता है। यह जानकारी वे लिखकर अथवा चार्ट पर चित्रों की सहायता से प्रस्तुत करें।

(3) 11-12 वर्ष के बच्चों को कुछ और अधिक जानकारी एकत्र करने के लिए कहा जाय। जैसे वे अपने घर के आसपास समुदाय में काम करने वाले व्यक्तियों के कार्य के विषय में सूचना एकत्र करें। इस सूचना को भी निबंध के रूप में लिखकर अथवा चार्ट या पोस्टर बनाकर आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया जाय। ये सभी चार्ट व पोस्टर कक्षा में या बाहर स्कूल के हॉल या लाइब्रेरी में लगाए जाएँ। विद्यार्थियों को अपनी पसंद के व्यवसायों में काम करने वालों का तथा कार्य परिस्थितियों से संबंधित चित्रों का एलबम बनाने के लिए कहा जाए।

(5) बच्चों को शहर के विभिन्न कार्यस्थलों जैसे पोस्ट ऑफिस, अस्पताल, बस-डिपो, रेलवे-स्टेशन, पुलिस-स्टेशन, दूध की डेरी, कोई फैक्टरी या कारखाना, सरकारी कार्यलय, आकाशवाणी भवन, होटल या रेस्तराँ दिखाने के लिए ले जाएँ। वहाँ काम करने वाले व्यक्ति बच्चों को अपने काम के विषय में जानकारी दें। प्रत्येक भ्रमण के बाद कक्षा में उसकी चर्चा की जाए।

(6) बच्चों को व्यवसाय संबंधी चलचित्र, औद्योगिक प्रदर्शनियाँ, विज्ञान-मेले आदि दिखाने का भी प्रबंध किया जाय, जिससे उन्हें व्यवसाय संबंधी अधिक जानकारी प्राप्त हो सकती है।

(7) विद्यालय के सांस्‌ .तेक कार्यक्रमों में बच्चों के लिए व्यावसा।येक वेशभूषा प्रतियोगिता तथा व्यवसाय संबंधी नाटक या अभिनय प्रतियोगिता का आयोजन किया जाय। माता-पिता विद्यालय में आकर बच्चों को अपने व्यवसाय के विषय में बताएँ।

(8) कहानियों, गीतों तथा नाटकों द्वारा सेवा संबंधी व्यवसायों की उपयोगिता को बताने का प्रयत्न किया जाय जिससे इस प्रकार के व्यवसायों के प्रति उचित प्रवृत्तियों का विकास हो। उदाहरण के लिए सेवा संबंधी व्यवसाय हैं—सफाई कर्मचारी, फलफूल, सब्जी, अनाज उत्पन्न करने तथा बेचने वाले, छोटे दुकानदार, शिल्पकार, घरों में काम करने वाले नौकर, आया, कारखानों में काम करने वाले मजदूर, तकनीकी एवं गैर-तकनीकी कारीगर व मेकेनिक, सुरक्षा कार्य करने वाले गार्ड व चौकीदार, निर्माण-स्थलों पर काम करने वाले मिस्त्री, राज, मजदूर, बिजली के यंत्रों को बनाने तथा मरम्मत करने वाले इलैक्ट्रीशियन, लाइनमैन, घरों में नल, पाइप आदि लगाने वाले प्लंबर, घरों और छोटी फर्नीचर की दुकानों पर काम करने वाले बढ़ई, साइकिल-रिक्शा, ट्रक-स्कूटर चलाने वाले, होटल व रेस्तरां में खाना पकाने वाले रसोइए या वेटर, रेलवे प्लेटफार्म व अन्य स्थानों पर बोझा ढोने तथा सड़क बनाने वाले मजदूर आदि। हमारे देश में बहुत बड़ी संख्या में व्यक्ति इन व्यवसायों द्वारा समाज में व्यवस्था, सुख शान्ति बनाए रखने तथा दूसरों की सेवा करने में सहायक हैं परंतु समाज में इन व्यवसायों और इनमें लगे व्यक्तियों को बहुत

सम्मान नहीं दिया जाता। बच्चों में यह जागरुकता लानी आवश्यक है कि ये सभी कार्यकर्ता समाज को आवश्यक सेवाएँ प्रदान करते हैं। इन आवश्यक सेवाओं के बिना हमारा जीवन अत्यंत कठिन हो सकता है तथा प्रत्येक नागरिक को अत्यधिक असुविधा का सामना करना पड़ सकता है। जैसा कि हम पहले भी कह चुके हैं, इन कार्यों के प्रति प्रवृत्तियों में बदलाव लाने के लिए तथा परिश्रम के प्रति सम्मान की भावना जगाने के लिए बच्चों से विद्यालय के सभी कार्यों में सहयोग लिया जाए जिससे वे हाथों से काम करने व मेहनत करने के महत्व को समझ पाएँ।

विद्यालय में "कार्यानुभव" तथा "व्यावसायिक शिक्षा" के अंतर्गत उपलब्ध विषयों तथा क्रियाओं की सहायता से भी विद्यार्थियों में कार्यसंबंधी मूल्यों, प्रवृत्तियों तथा कौशलों के विकास की जो संभावनाएँ एवं लाभ हैं उनकी चर्चा हम व्यावसायिक विकास प्रक्रिया के संदर्भ में कर चुके हैं। विद्यालयों में अन्य सहपाठ्य क्रियाओं जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों, शिविर सभाओं, हॉबी-क्लबों, सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों आदि का भी इन कार्य संबंधी व्यक्तित्व विशेषताओं के विकास में अत्यंत महत्व है। इसकी चर्चा भी पहले की जा चुकी है।

आगे के उप-अध्यायों में व्यावसायिक जगत के उन असंख्य व्यवसायों की जानकारी दी जा रही है जिन्हें आवश्यकताओं के आधार पर कुछ प्रमुख क्षेत्रों में बाँटा गया है।

कृषि, वानकी, खनन तथा उत्पादन के व्यवसाय



उद्देश्य

इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि

– कृषि, वानकी, खनन तथा उत्पादन के क्षेत्र में कौन-कौन से व्यवसाय हैं।

– इन व्यवसायों में व्यक्ति क्या-क्या कार्य करते हैं।

कृषि

भोजन हमारी आधारभूत आवश्यकता है। मनुष्य का जीवन इसी पर निर्भर है। भोजन की आवश्यकता कृषि संबंधित व्यवसायों द्वारा पूरी होती है। कृषि संबंधित व्यवसायों के विषय में यदि आपसे विचार करने को कहा जाय तो सर्वप्रथम आपका ध्यान कृषक की ओर जाएगा। आज भी हमारे देश में कृषक पुरानी तकनीकी से स्वयं हल जोतकर, बीज बोकर अनाज उगाता है। परंतु आजकल कृषक के अतिरिक्त इस क्षेत्र में अन्य कई व्यक्ति अच्छी किस्म तथा अधिक फसल उगाने में कृषक की सहायता करते हैं जैसे–कई व्यक्ति राजकीय कृषि विभाग में कृषि संबंधी अनुसंधान करते हैं, कृषि की उन्नति के लिए नए साधन निकालते हैं, खेती को नष्ट करने वाले कीटाणुओं से अनाज को बचाने की रीतियों का पता लगाते हैं। इस प्रकार के कार्य करने वालों को 'कृषि अनुसंधान अधिकारी' कहा जाता है। इनकी सहायता के लिए अनुसंधान सहायक भी रखे जाते हैं।

प्रत्येक जिले में एक कृषि अधिकारी तथा कृषि सहायक भी होता है। ये अनुसंधान-कर्ताओं द्वारा प्राप्त किए गए परिणामों को किसानों तक पहुँचाते हैं। ये किसानों को नए प्रयोग करके भी दिखाते हैं जिससे किसान कृषि की नई रीतियों को आसानी से जान सके।

अच्छी किस्म और अधिक फसल उपजाने के लिए मशीनों की आवश्यकता होती है। ये मशीनें बिजली, पानी अथवा पैट्रोल द्वारा चलाई जाती हैं। इस क्षेत्र में प्रगति होने के कारण कृषि इंजीनियर, ट्रैक्टर-ड्राइवर इत्यादि व्यवसायों का भी आविष्कार हुआ है।

कृषि में पशुओं का भी बहुत बड़ा महत्व है। कृषक के लिए गाय, भैंस, घोड़ा, बैल आदि पशु अति आवश्यक हैं। डेरी उद्योग के क्षेत्र में भी उन्नति होने के कारण पशुओं की देखभाल के लिए वेटरनरी डाक्टर की आवश्यकता है। आजकल पशुओं की अच्छी देखभाल तथा चिकित्सा के लिए अस्पताल भी काफी संख्या में खोले जा रहे हैं जहाँ पशुओं का इलाज किया जाता है।

वानकी

वनों के व्यवसाय हमें शहरों और नगरों से दूर वन प्रदेशों में ले जाते हैं। जिस प्रकार हरेक प्रदेश में एक कृषि विभाग होता है उसी प्रकार एक वन विभाग भी होता है। वनों में लकड़ी, कोयला तथा बहुमूल्य खनिज पदार्थ प्राप्त होते हैं। वनों की सुरक्षा और उन्नति के लिए सहायक अधीक्षक, वन अधिकारी तथा वन-पाल आदि पदों पर व्यक्ति कार्य करते हैं।

वन अधिकारी को कुछ क्षेत्रों के वन दे दिए जाते हैं। वे वन क्षेत्रों का निरीक्षण करते हैं तथा समय-समय पर उनकी कटाई, सफाई और नए पेड़-पौधे लगवाने का कार्य करते हैं। यदि पेड़-पौधे किसी बीमारी से नष्ट हो रहे हों तो वे उनकी रक्षा का भी प्रबंध करते हैं। आग लगने पर उसकी फौरन रिपोर्ट करते हैं और दावानल (वन में अग्नि) को रोकने का उपाय करते हैं।

वन संबंधी व्यवसायों में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय उद्यानविज्ञ का है। बदलते मौसम के अनुसार समय-समय पर नई-नई किस्म के फल-फूल के पौधे लगाना इनका कार्य होता है। नगर में सड़कों, इमारतों, भ्रमण के स्थानों पर योजनाबद्ध तरीके से बड़े-बड़े उद्यान और पार्क बनाने तथा उनमें फूल-पौधे लगाने का उत्तरदायित्व भी इन्हीं पर होता है। प्रायः यह समझा जाता है कि उनकी सुरक्षा तथा देखभाल केवल माली ही करते हैं परंतु बड़े-बड़े बागों, उद्यानों तथा फलों के बागानों की सुरक्षा एवं देखभाल उद्यानविज्ञ के ही द्वारा की जाती है। फूलों और फलों की किस्म को सुधारने और उनको अधिक मात्रा में उत्पन्न करने में वनस्पति विज्ञान वेत्ता भी अपना योग देते हैं। ये अधिकतर अनुसंधान कार्य करते हैं।

संवद्ध क्रिया कलाप

विद्यालय के आसपास किसी फार्म, उद्यान, वन, चिड़ियाघर अथवा अजायबघर में छात्रों को भ्रमण के लिए ले जाएँ जहाँ विद्यार्थियों को वहाँ काम करने वाले व्यक्तियों से बातचीत करने व उनके कार्य के विषय में जानकारी एकत्र करने के लिए प्रोत्साहित करें।

वन विभाग के अंतर्गत ही चिड़ियाघर तथा अजायबघर से संबंधित कार्य भी होते हैं। चिड़ियाघर

अथवा अजायबघर के अधीक्षक तथा जीवविज्ञान विशेषज्ञ बीमारियों को फैलाने वाले अथवा वस्तुओं को नष्ट करने वाले कीटाणुओं को नष्ट करने का कार्य करते हैं। ये विशेषज्ञ मलेरिया, फाइलेरिया जैसी बीमारियों को फैलने से भी रोकते हैं।

संबद्ध क्रियाकलाप

आपके क्षेत्र में यदि कोई दुग्ध केन्द्र, बेकरी अथवा कोई वस्त्र उत्पादन कारखाना या फैक्टरी हो तो छात्रों को वहाँ काम करने वालों के कार्य से परिचित कराने के लिए भ्रमण के लिए ले जाया जाए। इन कार्य-क्षेत्रों में रुचि रखने वाले थोड़ी बड़ी कक्षाओं के छात्रों को स्वयं वहाँ जाकर सूचना एकत्र करने के लिए प्रोत्साहित करें।

मत्स्य

मात्स्यकी के क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त कर जीवविज्ञान विशेषज्ञ मत्स्य विभाग में प्रशासकीय अधिकारी की तरह अनुसंधान करते हैं तथा इंजीनियर आदि के पद पर काम करते हैं।

डेरी

आजकल हमारे देश के विभिन्न प्रदेशों में सरकार द्वारा दुग्ध योजनाएँ बनाई गई हैं जिनसे मशीनों द्वारा, पैकेटों अथवा बोतलों में दूध जनता तक पहुँचाया जाता है। इस क्षेत्र में डेरी फार्म मैनेजर, सुपरवाइजर, डेरी केमिस्ट, डेरी फैक्टरी इंजीनियर आदि के व्यवसाय आते हैं।

खनन (खान)

उपरोक्त वर्णन से आपको केवल उन व्यवसायों के विषय में जानकारी हुई है जो पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले फलों, फूलों, अनाज तथा जीवजंतुओं से संबंधित हैं। परंतु पृथ्वी के अंदर पायी जाने वाली वस्तुओं से संबंधित व्यवसायों में भी अनेक व्यक्ति काम करते हैं। प्रतिदिन हमारे काम में आने वाली बहुत सी वस्तुएँ लोहा, ताँबा, पीतल, एल्यूमीनियम तथा अन्य वस्तुएँ धातुओं की बनी होती हैं। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से पदार्थ, विशेषकर जिन से हमें अग्नि तथा शक्ति मिलती है जैसे पत्थर का कोयला, मिट्टी का तेल आदि भी भूगर्भ से ही प्राप्त होते हैं। अब हम आपको भूगर्भ से प्राप्त होने वाली वस्तुओं से संबंधित व्यवसायों के विषय में बताएँगे। भूगर्भविज्ञानवेत्ता, खनिज पदार्थ एवं तेल निकालने के पूर्व उन स्थानों की खोज करते हैं जहाँ से ये पदार्थ प्राप्त किए जा सकें। उसके उपरान्त पृथ्वी को खोदकर खनिज पदार्थों को बाहर निकालने का काम शॉट फायरर, स्टोनकटर, लोहार, इलैक्ट्रीशियन, टिम्बरमैन तथा खान मजदूरों द्वारा किया जाता है। ये व्यक्ति खान इंजीनियरों, लोकोमॉटिव इंजीनियरों तथा खान निरीक्षकों के निर्देशन तथा सर्वेक्षण में काम करते हैं।

पृथ्वी से निकले हुए पदार्थ कच्ची धातु के रूप में होते हैं। उनको साफ करके परिष्कृत किया जाता है, जिससे हमारे काम में आने वाली वस्तुएँ बनती हैं। मिश्र धातु को बनाने का काम धातुकर्मविज्ञ (मैटलर्जिस्ट) के निर्देशन में होता है।

तेल तथा पैट्रोलियम आजकल के औद्योगिक विकास में एक महत्वपूर्ण खनिज है। इसकी सहायता से असंख्य वाहन जैसे–मोटरें, रेल इंजन और मशीनें

चलती हैं। घरों में स्टोव जलाने के लिए भी तेल की आवश्यकता होती है। तेल से ही गैस प्राप्त होती है जिसका प्रयोग आजकल खाना पकाने तथा कारखानों में भी होता है। तेल को निकालने के लिए—"तेल ड्रिलर" पृथ्वी में छेद करके तेल के कुएँ बनाते हैं। ऑयल टैक्नोलोजिस्ट तेल से विभिन्न अन्य पदार्थों को बनाने का कार्य करते हैं।

शक्ति का दूसरा स्रोत बिजली है। बिजली आधुनिक युग में मूलभूत आवश्यकता बन गई है। घरों में बल्ब, पंखे, रेडियो, रेफ्रिजरेटर, टेलीविजन आदि उपकरण/बिजली द्वारा ही चलते हैं। बिजली से संबंधित इंजीनियर, टैक्नोलोजिस्ट तथा इलैक्ट्रिशियन बिजली के संस्थानों में बिजली के चलाने तथा देखभाल एवं मरम्मत का काम करते हैं। वायरमैन स्विच बोर्ड और बिजली के तारों की स्थापना करते हैं। रेडियो, टेलीविजन तथा रेफ्रिजरेटर आदि के मेकेनिक इन सब यंत्रों की मरम्मत का कार्य करते हैं।

उत्पादन

अभी तक हमने आपको कच्चे रूप में पायी जाने वाली धातुओं तथा अन्य वस्तुओं से संबंधित व्यवसायों के विषय में कुछ जानकारी दी। उत्पादन के द्वारा सभी वस्तुएँ कच्चे रूप से उस रूप में परिवर्तित की जाती हैं जिससे हम उन्हें काम में लाते हैं। उत्पादन के द्वारा गेहूँ को आटे के रूप में और फिर डबल रोटी के रूप में परिवर्तित करके खाने के योग्य बनाया जाता है। इसी प्रकार भेड़ों से उतारी गई ऊन तथा खेतों से प्राप्त की गई रूई को मिलों में कपड़े के रूप में परिवर्तित किया जाता है, फिर इस कपड़े से वह वस्त्र बनाए जाते हैं जिनको हम पहनते हैं। इसी प्रकार कच्ची धातु को स्टील में परिवर्तित करके मशीनें बनाई जाती हैं।

सभी प्रकार के उद्योगों में उत्पादन कार्य इंजीनियरों के निर्देशन तथा निरीक्षण में किया जाता है। इंजीनियर विभिन्न प्रकार के होते हैं। "यांत्रिक इंजीनियर" मशीनों का डिजाइन बनाने, उनका निर्माण करने तथा कारखानों में उनकी स्थापना करने में निर्देशन करते हैं। मशीनों की देखभाल और उनकी मरम्मत का कार्य भी उनके द्वारा ही किया जाता है।

मोटर द्वारा चलने वाली गाड़ियों जैसे—मोटर कार, बस, ट्रक, मोटरसाइकिल, स्कूटर, आदि के इंजनों के उत्पादन, तथा मरम्मत का काम करने वाले व्यक्तियों को "ऑटोमोबाइल इंजीनियर" के नाम से पुकारा जाता है। हवा में उड़ने वाले यानों के उत्पादन और मरम्मत का कार्य "एरोनॉटिक इंजीनियर" करते हैं। "केमिकल इंजीनियर" रसायनों को बनाने वाले कारखानों में विभिन्न रसायनों का निर्माण करते हैं। "कैमिकल टैक्नोलोजिस्ट" रासायनिक तत्वों से पेन्ट वारनिश, प्लास्टिक की वस्तुएँ, खाद आदि के उत्पादन का कार्य करते हैं। इंजीनियर तथा टैक्नोलोजिस्ट के अतिरिक्त मशीनों के बनाने, चलाने और मरम्मत करने का कार्य बहुत से टैक्नीशियन्स द्वारा किया जाता है। टर्नर बोल्ट्स तथा नट आदि बनाने का काम करते हैं। फिटर यंत्रों के विभिन्न भागों को जोड़ने का कार्य करते हैं। मोल्डर पिघली हुई धातु को साँचे में डालकर मशीनों के पुर्जे बनाते हैं। मशीनिस्ट, खुरदरी धातु के टुकड़ों को विभिन्न मशीनों की सहायता से आकृति प्रदान करते हैं। इसी प्रकार वेल्डर, पेटर्नमेकर, लोहार, बढ़ई आदि बहुत से कारीगर धातु एवं लकड़ी की वस्तुएँ बनाने और मरम्मत का काम करते हैं।

अभ्यास

शिक्षक विद्यार्थियों को इस लेख में दी गई सूचना से परिचित कराने के बाद विचार-विमर्श द्वारा अथवा लिखित रूप में निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करें।

1. कृषि के क्षेत्र में कुछ प्रमुख व्यवसाय कौन-कौन से हैं?
2. वनों की सुरक्षा और उन्नति का उत्तरदायित्व किन-किन व्यक्तियों पर होता है?
3. पृथ्वी के अंदर पाए जाने वाले खनिज पदार्थों को बाहर निकालने का काम किन व्यक्तियों द्वारा किया जाता है?
4. बच्चों को अपने परिवार के या घर के आसपास के कार्यालय या फैक्टरी के इंजीनियर से मिलकर उनके कार्य के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए कहा जाय।

चिकित्सा, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा समाज-सेवा के व्यवसाय

उद्देश्य

इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि–

– चिकित्सा तथा स्वास्थ्य-सेवा के क्षेत्र में प्रमुख व्यवसाय कौन-कौन-से हैं?

– अध्यापक का क्या कार्य है तथा वे किन-किन स्तरों पर कार्य करते हैं?

– शिक्षा निदेशालय, पुस्तकालय तथा लेखन के क्षेत्रों में कौन-कौन-से व्यवसाय हैं?

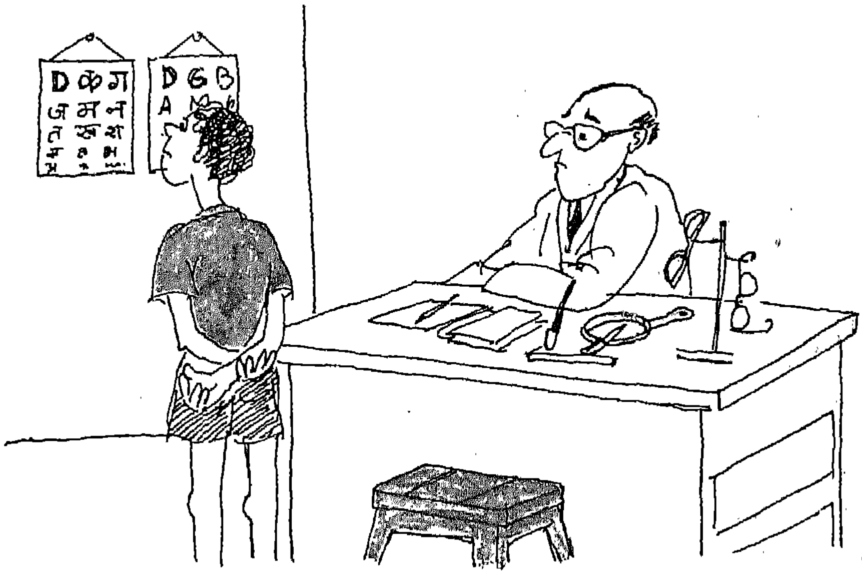
– समाज-सेवा के क्षेत्र में प्रमुख व्यवसाय क्या-क्या हैं?

चिकित्सा तथा स्वास्थ्य-सेवा

बीमार होने पर हम सभी चिकित्सक के पास जाते हैं। इसलिए आप डॉक्टर, कंपाउंडर तथा नर्स के नाम से तो परिचित ही होंगे। ये चिकित्सा तथा स्वास्थ्य-सेवा के क्षेत्र के तीन प्रमुख व्यक्ति हैं जबकि इस क्षेत्र में अनेक अन्य व्यक्ति भी कार्य करते हैं। प्रायः डॉक्टर छोटी-छोटी दिन-प्रतिदिन होने वाली बीमारियों (जैसे–खाँसी, जुकाम, बुखार आदि) का इलाज करते हैं परंतु जब कोई बड़ी बीमारी होती है तो रोगी को विशेषज्ञ से परामर्श करना पड़ता है। विशेषज्ञ विभिन्न प्रकार के परीक्षणों द्वारा रोग का पता लगाते हैं और उसके निदान के विषय में भविष्योक्ति भी करते हैं।

विभिन्न बीमारियों तथा विशेष अंगों के इलाज के लिए अलग-अलग विशेषज्ञ होते हैं। हृदय-विशेषज्ञ (कारडियोलोजिस्ट) हृदय की बीमारियों का इलाज करते हैं। चर्म-विशेषज्ञ (डर्मेटोलोजिस्ट) चर्म रोगों की चिकित्सा करते हैं। नाड़ी संबंधी रोगों की चिकित्सा करने वाले नाड़ी-विशेषज्ञ (न्यूरोलोजिस्ट) के नाम से जाने जाते हैं। मनोचिकित्सक (साइकोलोजिस्ट) मानसिक रोगों की चिकित्सा करते हैं। बच्चों की चिकित्सा करने वाले बाल-रोग-चिकित्सक (पीडियाट्रीशियन) कहलाते हैं। स्त्री-रोग-विशेषज्ञ (गाइनोकोलोजिस्ट) स्त्री रोगों की चिकित्सा करते हैं। इसी प्रकार नाक, कान तथा गले से संबंधित रोगों के विशेषज्ञ होते हैं। नेत्र-रोग-विशेषज्ञ (औप्थेलमॉलोजिस्ट) आँखों का निरीक्षण करके चश्मे की आवश्यकता का पता लगाते हैं और शीशे का नंबर देते हैं। कुछ अन्य प्रकार के चिकित्सक भी होते हैं जो शरीर के कुछ विशेष अंगों की चिकित्सा करते हैं जैसे–दंत-चिकित्सक (डेंटिस्ट) आदि।

कुछ चिकित्सक, रोगों का पता लगाने तथा ऑपरेशन करने में विशेषज्ञों की सहायता करते हैं। रोगविज्ञानी (पैथोलोजिस्ट) रक्त, मल-मूत्र, थूक आदि का परीक्षण कर रोग के निदान में सहायता करते हैं। इसी प्रकार रेडियोलोजिस्ट एक्स-रे द्वारा शरीर के भीतरी अंगों का चित्र खींचकर तथा उसकी सहायता से शरीर के भीतरी अंगों की दशा से विशेषज्ञ को परिचित कराते हैं।



शल्य विशेषज्ञ ऑपरेशन द्वारा रोगी का इलाज करते हैं। जिस प्रकार विभिन्न अंगों तथा रोगों के चिकित्सक होते हैं, उसी प्रकार शल्य-विशेषज्ञ भी होते हैं। कुछ हृदय के, कुछ आँख के और कुछ अन्य अंगों के भी शल्य-विशेषज्ञ होते हैं। शल्य-चिकित्सा में अनस्चेतक (अनस्थिसिस्ट) रोगी को ऑपरेशन के समय बेहोश करने का कार्य करते हैं।

चिकित्सा की तीन प्रमुख प्रणालियाँ हैं। आधुनिक वैज्ञानिक-रीति को "एलोपैथी" कहते हैं। इस प्रणाली के चिकित्सकों को "ऐलोपैथ" के नाम से जाना जाता है। हमारे देश की पुरानी चिकित्सा-प्रणाली आयुर्वेदिक प्रणाली है। इस विधि से चिकित्सा करने वालों को वैद्य कहते हैं। यूनानी रीति से इलाज करने वाले "हकीम" कहलाते हैं। आजकल होम्योपैथिक-प्रणाली भी प्रचलित हो रही है जिसमें रोग के लक्षणों के आधार पर न्यून मात्रा में दवा देकर इलाज किया जाता है। इस प्रणाली के चिकित्सक को 'होम्योपैथ' कहा जाता है। आयुर्वेदिक, यूनानी तथा होम्योपैथिक-चिकित्सा में शल्य-चिकित्सा नहीं के बराबर ही है।

रोगी की देखभाल के लिए, उसको समय-समय पर औषधि देने के लिए और उसकी दशा का ब्यौरा रखने के लिए स्वास्थ्य परिचारिका (नर्स) अस्पतालों, नर्सिंग घरों तथा चिकित्सालयों में काम करती है। नर्स भी कई श्रेणी की होती हैं जैसे– स्टाफ नर्स, वार्ड सिस्टर तथा सहायक मैट्रन। मैट्रन क्रमशः 10 से 12 की संख्या वाले एक वार्ड के रोगियों, अस्पताल की सभी नर्सों का निरीक्षण और पूरे अस्पताल का निर्देशन तथा निरीक्षण का कार्य करती है।

कंपाउंडर तथा फार्मेसिस्ट औषधि और नुस्खों को तैयार करने का कार्य करते हैं। किस औषधि को कब-कब और कितनी मात्रा में लेना है इस विषय में डाक्टर द्वारा दिए गए आदेशों को समझाने का कार्य भी वे करते हैं। कंपाउंडर के कार्य की सहायता के लिए प्रायः चिकित्सालयों तथा डिस्पेंसरीज में एक ड्रेसर भी होता है जो घावों व

चोट पर मरहम-पट्टी करता है, गले में दवा लगाता है, आँख, नाक, कान को साफ करके दवा डालता है। इसी प्रकार टीका (इंजेक्शन) लगाने का कार्य एक विशेष नर्स करती है। छोटे दवाखानों में पट्टी बाँधने और टीका लगाने का कार्य कंपाउंडर ही करते हैं।

भौतिक चिकित्सक इलाज करते हैं। भौतिक चिकित्सक अंग को पुनः सजीव करने के लिए व्यायामों द्वारा खेलकूद, शरीर-मर्दन, बिजली लगाकर तथा गरम पानी की टकोर द्वारा अंग का उपचार करते हैं।

अभी तक आपने स्वास्थ्य के क्षेत्र में उन



अस्पताल में अधिक समय तक रहने वाले रोगियों को उनकी रुचि और आवश्यकतानुसार क्रियाओं में व्यस्त रखकर उनके उपचार में डॉक्टर की सहायता करने वाले को व्यावसायिक-चिकित्सक कहते हैं। जब कभी औद्योगिक संस्थानों में काम करते समय दुर्घटना हो जाने से अथवा बीमारी व अन्य किसी कारणवश किसी व्यक्ति के शरीर के किसी अंग में चोट आ जाती है या कोई अंग कार्य करना बंद कर देता है तो इन रोगियों का

कर्मचारियों के विषय में जानकारी प्राप्त की जो व्यक्ति के बीमार हो जाने पर उसका उपचार करते हैं। बीमारियों से बचाने का प्रयत्न करने वाले अथवा बीमारी को फैलने से रोकने का प्रबंध करने वाले "स्वास्थ्य-कर्ता" कहलाते हैं। स्वास्थ्य अधिकारी अपने जिले में स्वच्छता रखने के लिए स्वास्थ्य संबंधी कार्यों का निरीक्षण और निर्देशन करते हैं। "सैनेटरी इंसपेक्टर" मकानों, दुकानों, गलियों, होटलों में सफाई रखने के लिए, निरीक्षण

जरा सोचिए

क्या आप कभी किसी अस्पताल या डिस्पेन्सरी में उपचार के लिए गए हैं? वहाँ किस-किस व्यक्ति ने आपकी उपचार संबंधी सहायता की? आपको इन व्यक्तियों का काम कैसा लगा? इस क्षेत्र से संबंधित व्यवसायों में योग्यता व रुचि रखने वाले विद्यार्थी अपने आसपास इन व्यवसायों में काम करने वाले व्यक्तियों से बातचीत द्वारा शिक्षा, प्रशिक्षण तथा कार्य संबंधी जानकारी प्राप्त करें।

करते हैं। "फूड इंसपेक्टर" होटलों में सफाई रखने के लिए निरीक्षण करते हैं। इसके अतिरिक्त वे होटलों में तथा हलवाइयों की दुकानों में खाने की वस्तुओं का निरीक्षण करते हैं और वहाँ से नमूने एकत्रित करते हैं जिससे यह पता लग जाता है कि भोज्य पदार्थ, शुद्ध सामान और स्वास्थ्यप्रद तरीकों से तैयार किया जा रहा है या नहीं। "पब्लिक हैल्थ इंसपैक्टर" दूध, घी, मक्खन, तेल, पानी आदि की स्वच्छता और शुद्धता को बनाए रखने के लिए निरीक्षण करते हैं। "महिला स्वास्थ्य निरीक्षिका" घरों में जाकर स्वास्थ्य तथा स्वच्छता के संबंध में शिक्षा देती है। "सहायक स्वास्थ्य परिचारिका" तथा "ग्राम सेविका" की सहायता से वह गर्भवती महिलाओं को बच्चों के पालन-पोषण के संबंध में अपने सुझाव देती है तथा उनकी देखभाल करती है।

बीमारियों से बचने का एक उपाय टीका लगवाना है। हमारे देश में बच्चों को टायफाइड, हैजा, तपेदिक, डिपथीरिया, काली खाँसी, टिटेनस, पोलियो जैसी बीमारियों से बचने के लिए टीका लगाया जाता है। यह कार्य "वैक्सीनेटर" करते हैं।

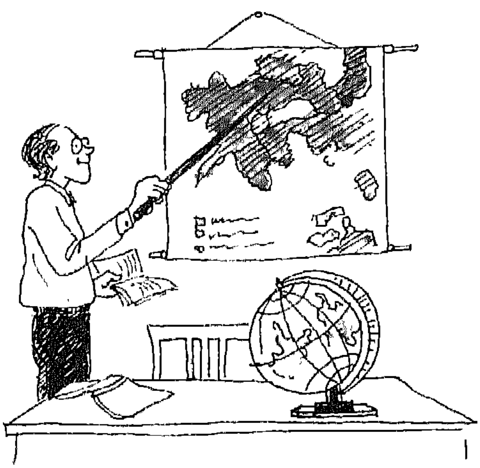
हमारे देश में मलेरिया द्वारा भी बहुत से लोग बीमार हो जाते हैं। मलेरिया मच्छरों द्वारा फैलता है। मलेरिया के उन्मूलन के लिए बहुत से निरीक्षक और चिकित्सक कार्य करते हैं।

शिक्षा

देश की उन्नति के लिए शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षित नागरिकों पर ही देश की आर्थिक और सामाजिक उन्नति निर्भर है। इसीलिए हमारे देश की सरकार प्रयत्नशील है कि प्रत्येक नागरिक शिक्षित हो। इसके लिए हमारे देश में स्कूल, कॉलेज, विद्यालयों की संख्या में वृद्धि हो रही है और गाँवों में भी विद्यालय खोले जा रहे हैं जिससे प्रत्येक बालक तथा बालिका को शिक्षा की सुविधा प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त नर्सरी स्कूल, रात्रि के स्कूल और अनपढ़ प्रौढ़ों को शिक्षित करने के लिए अनेक प्रकार की योजनाएँ प्रारंभ की जा रही हैं।

संबद्ध क्रिया-कलाप

अपने क्षेत्र के "स्वास्थ्य कर्ता" अथवा "स्वास्थ्य निरीक्षक" को छात्रों को कार्य संबंधी जानकारी देने के लिए विद्यालय में आमंत्रित करें।



तथा प्रोफेसर शिक्षा देते हैं और शिक्षा के क्षेत्र में शोधकार्य करते हैं।

पाठ्य विषयों के अनुसार भी शिक्षक कई प्रकार के होते हैं। जो भाषाएँ पढ़ाते हैं उन्हें भाषा-शिक्षक कहते हैं। इसी प्रकार गणित, विज्ञान, संस्कृति इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, शिल्प कला, ड्राइंग, व्यायाम, संगीत और अन्य विषयों के अलग अलग अध्यापक होते हैं। कुछ विद्यालयों में ऐसे अध्यापक भी होते हैं जो विद्यार्थियों को शिक्षा, प्रशिक्षण एवं व्यवसाय संबंधी सूचनाएँ प्रदान करते हैं और विषयों के चुनाव में उनकी सहायता करते हैं। ये व्यक्ति "कैरियर टीचर" के नाम से पुकारे जाते हैं। एक और व्यक्ति जिसे परामर्शदाता (काउंसलर) के नाम से जाना जाता है वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सामाजिक, भावात्मक एवं व्यवसाय संबंधी विकास एवं उनकी समस्याओं के समाधान में सहायता करता है। प्रत्येक विद्यालय में एक प्रधानाचार्य (प्रिंसीपल) होता है जो विद्यालय का निर्देशन करता है।

शिक्षा निदेशालय द्वारा विद्यालयों का समय-समय पर निरीक्षण भी किया जाता है। इसके लिए निदेशालय में सहायक शिक्षा अधिकारी, शिक्षा अधिकारी, सहायक शिक्षा निदेशक, उप शिक्षा निदेशक, निदेशक के पदों पर व्यक्ति कार्य करते हैं। उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के उपरांत जो विद्यार्थी आगे शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं वे कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में प्रवेश करते हैं। इनके शिक्षकों को लेक्चरर कहते हैं, पदोन्नति होने पर ये शिक्षक प्रवाचक या रीडर कहलाते हैं। उनसे भी ऊँचे स्तर के अधिक शिक्षा प्राप्त एवं अनुभवशील प्रोफेसर

जरा सोचिए

देश में प्रत्येक व्यक्ति को साक्षर बनाने के अभियान में आप किस-किस प्रकार के प्रयास कर सकते हैं?

शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वालों से तो शिक्षक तथा विद्यार्थी भली भाँति परिचित होंगे। इनमें अध्यापक का व्यवसाय प्रमुख है। अध्यापक स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को विभिन्न विषय पढ़ाते हैं, उनके ज्ञान में वृद्धि करते हैं, तथा उनमें अनुशासन एवं अच्छा चरित्र बनाने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार वे उनके व्यक्तित्व-विकास में व जीवन को संतोषमय और सफल बनाने में सहायक होते हैं।

अध्यापक कई स्तरों के होते हैं। शिशुशाला (नर्सरी) के शिक्षक तीन से पाँच या छः वर्ष तक की आयु के बच्चों को शिक्षा देते हैं। प्राइमरी शिक्षक छः से ग्यारह वर्ष तक के बच्चों को पढ़ाते हैं। माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में 'ट्रेन्ड ग्रेजुएट अध्यापक' तथा 'पोस्ट ग्रेजुएट अध्यापक' शिक्षा प्रदान करते हैं। कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में प्रवक्ता (लेक्चरर),प्रवाचक (रीडर)

कहलाते हैं। प्रत्येक विषय का अलग-अलग विभाग होता है जिसका अधीक्षक एक प्रोफेसर होता है। महाविद्यालयों में प्रधानाचार्य के निर्देशन और निरीक्षण में विद्यालय का कार्य चलता है। विश्वविद्यालयों में प्रधान को उपकुलपति तथा प्रशासन संबंधी कार्य के लिए नियुक्त प्रधान को कुल सचिव (रजिस्ट्रार) कहा जाता है।

प्रत्येक विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में पुस्तकालय भी होता है। इसी प्रकार अनुसंधान संस्थाओं में, औद्योगिक संस्थानों में, सरकारी कार्यालयों में तथा शहरों के विभिन्न भागों में पुस्तकालय होते हैं। इन पुस्तकालयों के कार्य को सुचारू रूप से चलाने वाले को पुस्तकाध्यक्ष (लाइब्रेरियन) कहा जाता है। पुस्तकालय में सहायक के पदों पर भी व्यक्ति कार्य करते हैं। उनका कार्य पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं को सुचारू रूप से रखना है जिससे वे आसानी से प्राप्त की जा सकें। वह उनका वर्गीकरण करके, वर्गीकरण अंक कार्डों पर लिखकर यथास्थान अलमारी में रखते हैं। अन्य कार्य जैसे पुस्तक लेने वालों के नाम पर पुस्तकों को जारी करना, वापिस की जा रही पुस्तकों की जाँच करके वापिस लेना आदि सहायकों द्वारा किए जाते हैं।

व्यवसाय से अवकाश के बाद पाठ्य विषयों से संबंधित पुस्तकों की रचना का कार्य करते हैं। आजकल राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एन.बी.टी.), प्रकाशन विभाग तथा राष्ट्रीय पुस्तक संस्थानों के शिक्षा अधिकारी भी पुस्तकें लिखने का कार्य करते हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में भी पुस्तकें तैयार की जाती हैं।

विद्यालयों के अतिरिक्त शिक्षा प्राप्त करने के और भी साधन हैं। इनमें रेडियो, टेलीविजन तथा पत्रिकाएँ आदि सम्मिलित हैं। इनसे संबंधित व्यवसायों में भी बहुत से व्यक्ति कार्य करते हैं। समाचार पत्र के कार्यालयों में "रिपोर्टर" तथा "संवाददाता" होते हैं जो समाचार को एकत्रित करते हैं। वे विभिन्न स्थानों का भ्रमण करते हैं, सामाजिक आयोजनों व संसद भवन जाते हैं, घटना स्थलों पर घटना के विषय में सूचना एकत्र करते हैं तथा प्रमुख व्यक्तियों से बातचीत करते हैं। इन समाचारों का संपादन करके संपादक उन्हें अखबारों में प्रकाशित करते हैं।

अब हम आपको उन व्यक्तियों के विषय में बताने जा रहे हैं जो कि रेडियो कार्यक्रमों द्वारा हमें शिक्षा एवं मनोरंजन प्रदान करते हैं। ये कार्यक्रम

जरा सोचिए

आपके विद्यालय में विभिन्न स्तरों व क्षेत्रों में शिक्षा देने तथा अन्य संबंधित कार्यों में कौन-कौन व्यक्ति लगे हुए हैं? **उनसे बातचीत करके उनके कार्य** व प्रशिक्षण संबंधित जानकारी प्राप्त करिए।

जो पुस्तकें हम पढ़ते हैं, उनको लिखने वाले "लेखक" कहलाते हैं। हमारे देश में कुछ ही लेखक ऐसे हैं जो केवल पुस्तकें अथवा लेख लिखने का कार्य करते हैं। अधिकांश लेखक अपने मुख्य कार्य से अवकाश पाने पर लेखन का कार्य करते हैं। कुछ अध्यापक ग्रीष्मावकाश में अथवा

आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित किए जाते हैं। यहाँ पर कई प्रकार के कलाकार एवं कर्मचारी होते हैं जैसे इंजीनियर, संगीतज्ञ, नाटककार, वादक, अभिज्ञापक (एनाउंसर), प्रोड्यूसर, संवाद लेखक, अभिनेता, प्रोग्राम एक्जीक्यूटिव इत्यादि। कुछ नाटक व संगीत के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, कई खेलकूद कार्यक्रमों

तथा किसी महत्वपूर्ण आयोजन का आँखों देखा हाल सुनाते हैं। इन्हें "कमेन्टेटर" कहा जाता है। कुछ रेडियो व दूरदर्शन पर समाचार पढ़ते हैं। आकाशवाणी केन्द्र के सभी कार्यक्रमों का निर्देशन तथा निरीक्षण "स्टेशन डायरेक्टर" के द्वारा किया जाता है और वह वहाँ का प्रधान होता है।

समाज-सेवा

कुछ व्यक्ति समाज तथा जनता की बिगड़ी हुई दशा को सुधारने का प्रयत्न करते हैं। ये कार्य सामाजिक व्यवसाय हैं। ये व्यक्ति परोपकार तथा दूसरों की भलाई के लिए कार्य करते हैं ताकि समाज का सुधार हो और प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से आगे बढ़े। समाज-सुधार करने के लिए समाज में वर्तमान परिस्थितियों का विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन किया जाता है इसलिए कुछ व्यक्ति इस क्षेत्र में अनुसंधान में लगे रहते हैं तथा कुछ जनता में जाकर उनका सुधार करते हैं।

अर्थशास्त्रज्ञ (इकोनोमिस्ट) समाज की आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन करते हैं। इसमें वे विभिन्न क्रियाओं का अध्ययन करता है अपितु वह व्यक्ति के विचारों, भावों, आकांक्षाओं, उद्देश्यों, प्रवृत्तियों तथा इच्छाओं का भी अध्ययन करता है।

समाजविज्ञ (सोशियोलोजिस्ट) सांप्रदायिक तथा सामाजिक अवस्था का अध्ययन करता है। पुरात्ववेत्ता (आरकिओलोजिस्ट) समाज की भौतिक विशेषताओं तथा धार्मिक तथा सांस्कृतिक रीतियों के विकास का अध्ययन करता है। जो व्यक्ति वास्तव में जनता की सेवा का कार्य करते हैं उनमें समाज सेवक, लेबर वेलफेयर ऑफिसर इत्यादि व्यवसाय प्रमुख हैं। समाज सेवक पिछड़े हुए, गरीब तथा अशिक्षित वर्गों में जाकर उन्हें स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा देते हैं, उन्हें पढ़ाते हैं तथा उन्हें रहने के लिए घर तथा वस्त्र इत्यादि सुविधाएं दिलवाने में सहायता करते हैं। समाज सेवक जन कल्याण केन्द्रों, अस्पतालों तथा औद्योगिक संस्थानों द्वारा भी नियुक्त किए जाते हैं। औद्योगिक संस्थानों में समाज सेवक, मजदूर कल्याण अधिकारी की तरह जाने जाते हैं।

समाज सेवक गाँवों में भी नियुक्त किए जाते हैं। इन्हें ग्राम सेवक अथवा ग्राम सेविका कहा जाता है। ग्राम सेविका, ग्रामीण व्यक्तियों को अच्छे

> **संबद्ध कार्य कलाप**
>
> आपके नगर या गाँव में समाज-कल्याण के क्षेत्र में कौन-कौन-सी संस्थाएं व व्यक्ति कार्य कर रहे हैं इनकी सूचना एकत्र करिए।

प्रकार की वस्तुओं के मूल्यों का भी अध्ययन करते हैं। इसके लिए इन्हें बहुत-सी सूचना एकत्रित करनी पड़ती है और विश्लेषण तथा व्याख्या करनी होती है ताकि जिन अधिकारियों द्वारा वे नियुक्त किये जाते हैं वे इन विषयों में महत्वपूर्ण निर्णय ले सकें।

मनौवैज्ञानिक व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है। इसमें वह न केवल व्यक्ति की बाह्य

साधनों द्वारा रहना व खाना-पीना सिखाती है तथा स्वच्छता से रहने और बीमारियों से बचने के उपायों को बताती है।

व्यवसाय संबंधी सहायता के लिए सरकार द्वारा सेवा नियोजन अधिकारी (एंप्लायमेंट ऑफीसर) रखे जाते हैं जो बेरोजगार व्यक्तियों को व्यवसाय ढूँढने में सहायता प्रदान करते हैं।

अभ्यास

शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के लिए

1. शरीर के विभिन्न अंगों का उपचार करने वाले कौन-कौन-से विशेषज्ञ हैं?
2. पैथोलोजिस्ट तथा रेडियोलोजिस्ट क्या कार्य करते हैं?
3. रेडियो तथा टेलीविजन पर जो कार्यक्रम आप सुनते व देखते हैं उनको बनाने व दिखाने में किन-किन व्यक्तियों का हाथ होता है?

विद्यार्थियों के लिए

विद्यालय के पुस्तकालय में जाकर पुस्तकाध्यक्ष से जानने का प्रयास करें कि उन्होंने इस व्यवसाय में किस प्रकार प्रवेश किया, साथ ही पुस्तकालय में पुस्तकें प्राप्त करने, वर्गीकरण करने, पाठकों को पुस्तकें देने व लेने से संबंधित जानकारी प्राप्त करें।

यातायात, संचार, व्यापार तथा वाणिज्य के व्यवसाय

उद्देश्य

इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि–

– यातायात, संचार, व्यापार तथा वाणिज्य के क्षेत्र में कौन-कौन से व्यवसाय हैं?

– इन व्यवसायों में व्यक्ति क्या-क्या काम करते हैं?

यातायात

आज के इस वैज्ञानिक युग में उन्नति के लिए प्रत्येक कार्य का शीघ्रतापूर्वक किया जाना अत्यंत आवश्यक है। जिस प्रकार वस्तुओं के शीघ्रता से उत्पादन के लिए मशीनों का प्रयोग किया जाता है उसी प्रकार तैयार की गई वस्तुओं को जनता तक शीघ्र पहुँचाने के लिए परिवहन के साधनों का आविष्कार हुआ। प्राचीन काल में एक स्थान से दूसरे स्थान तक वस्तुएँ या संदेश पहुँचाने के लिए सप्ताह और कभी-कभी माह भी लग जाते थे। परंतु आजकल परिवहन तथा संचार के साधनों के आविष्कार की सहायता से ये सभी कार्य बहुत शीघ्र हो जाते हैं। आजकल हमारे पास एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए बस, रेलगाड़ी, मोटर, जहाज, विमान इत्यादि सवारियाँ हैं जिनकी सहायता से एक साथ कई व्यक्ति शीघ्रता तथा सुविधापूर्वक आ जा सकते हैं। इससे समय की बचत होती है जिससे उस समय का उपयोग कई अन्य कार्यों के लिए किया जा सकता है।

यातायात की ही तरह संदेशों को आजकल सैकड़ों, हजारों मील तक कुछ ही घंटों में पहुँचाने वाले डाक, तार, टेलीफोन के साधन भी उपलब्ध हैं। ये सभी हमारे आवागमन तथा संचार के साधन हैं। इन सभी आवागमन के साधनों को बनाने, चलाने तथा उनकी देखभाल करने के लिए अनेक व्यक्ति नियुक्त किए जाते हैं जिनके कार्य के विषय में अब हम यहाँ चर्चा करेंगे।

यातायात से संबंधित कुछ व्यवसायों से आप सभी परिचित हैं। इस क्षेत्र के व्यवसायों में कुछ व्यवसाय जैसे–बस ड्राइवर, रेल चालक, विमान चालक आदि व्यवसाय जाने-पहचाने हैं। बस में ड्राइवर के अतिरिक्त एक कंडक्टर भी होता है जो यात्रियों को टिकट बाँटता है। लंबी यात्रा वाली बसों में टिकट बाँटने का काम टिकट घर से होता है। बस में ड्राइवर और कंडक्टर की सहायता के लिए 'क्लीनर' होता है। मार्ग में "टिकट चैकर" यात्रियों के टिकट चैक करते हैं और यात्रियों की संख्या की भी गणना करते हैं। राजकीय रोडवेज में बहुत से और व्यक्ति भी काम करते हैं जैसे–महाप्रबंधक, यातायात प्रबंधक, सहायक यातायात प्रबंधक तथा सुपरवाइजर्स आदि जो विभिन्न स्तरों पर यातायात की व्यवस्था, निरीक्षण तथा निर्देशन करते हैं।

आप सभी कभी-न-कभी रेल यात्रा भी अवश्य कर चुके होंगे। रेल को चलने का आदेश गार्ड द्वारा दिया जाता है। यात्रा के समय टिकट चैकर यात्रियों के टिकटों का निरीक्षण करते हैं। यात्रा

समाप्त होने पर स्टेशन पर "टिकट कलेक्टर्स" टिकट वापिस लेते हैं। स्टेशन की व्यवस्था स्टेशन मास्टर के अधीन होती है, इसके अतिरिक्त वहाँ पर सहायक स्टेशन मास्टर, टिकट बाबू तथा सिगनल मैन और लाइन मैन भी होते हैं। सिगनल मैन और लाइन मैन रेलगाड़ी के आने और जाने की सूचना देने और सुरक्षित रूप से चलने की व्यवस्था करते हैं।

इसके अतिरिक्त रेल लाइन का समय-समय पर निरीक्षण करने और लाइन की मरम्मत के कार्य का निरीक्षण करने के लिए इंसपैक्टर होते हैं। रेलवे की व्यवस्था के लिए बहुत से व्यक्ति जैसे महाप्रबंधक, उप महाप्रबंधक, डिवीजनल अधीक्षक तथा रेलवे इंजीनियर्स आदि पदों पर व्यक्ति कार्य करते हैं।

पोत परिवहन (शिपिंग) से संबंधित भी कई व्यवसाय हैं। प्रमुख अधिकारी को "कैप्टन" कहा जाता है जिसके निर्देशन में जहाज के सभी कार्य होते हैं। "मैरीन इंजीनियर" की देखभाल में जहाजों की मशीनों को बनाने तथा उनका निरीक्षण करने

वायुयान के चालक को "पायलट" कहा जाता है। पायलट, इंजीनियर व चालकों के साथ ही वायुयान में बैठते हैं एवं इंजन, मशीनों और अन्य यंत्रों की देखभाल करते हैं। वायुयान संचालक "एयरक्राफ्ट नैवीगेटर" से मौसम संबंधी बातों की जानकारी रखता है और चालक को दिशा संबंधी सुझाव देता है। विमान परिचारिकाएँ (एयर होस्टैस) यात्रियों की सुविधा और आराम का ध्यान रखती हैं। यात्रियों को भोजन देना, पढ़ने के लिए पत्रिकाएँ पहुँचाना, यात्री के अस्वस्थ हो जाने पर प्राथमिक चिकित्सा करना आदि विमान परिचारिकाओं का कार्य है। विमानों के हवाई अड्डों से उड़ने तथा उतरने में "एयरसर्विस ट्रैफिक कंट्रोलर" पायलट की सहायता करते हैं। ये उड़ते हुए विमान से संबंध स्थापित करते हैं और विमान का दिशा निर्देशन करते हैं। हवाई अड्डों पर बुकिंग क्लर्क, रिसेप्शनिस्ट आदि पदों पर भी कई व्यक्ति काम करते हैं। विमानों का निर्माण भी एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य है जिसे "एरोनोटिकल इंजीनियर" करते हैं।

जरा सोचिए

आपने कभी बस, रेल तथा हवाई जहाज की यात्रा की होगी। आप इन व्यवसायों से संबंधित किन-किन व्यक्तियों के संपर्क में आए? अपने अनुभव के आधार पर आप छात्रों को इस क्षेत्र के व्यवसायों के बारे में और किस किस प्रकार की सूचना दे सकते हैं?

का कार्य होता है। पोताधिकारी जहाज का एकाउंटेंट होता है तथा यात्रियों के मनोरंजन के कार्यों का भी प्रबंध करता है। डेक पर कार्य करने वाले नाविक जहाज को स्वच्छ रखते हैं। जहाज बंदरगाहों पर आकर रुकते हैं। बंदरगाह का कार्य "बंदरगाह अधिकारी" के निर्देशन और निरीक्षण में होता है।

संचार

डाकिये से कौन परिचित नहीं होगा। संचार के क्षेत्र में डाकिये का व्यवसाय अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह तो प्रतिदिन हमारे लिए पत्र, मनीआर्डर आदि लाता है। डाक घर से भी हम सभी परिचित हैं जहाँ से कार्ड, लिफाफे, टिकट आदि खरीदे जाते

हैं और वहीं से पार्सल, मनीआर्डर, रजिस्ट्री, खत भी भेजे जाते हैं। प्रत्येक कार्य के लिए अलग-अलग काउन्टर होते हैं जहाँ पर एक व्यक्ति बैठा होता है। डाकघर का सारा कार्य पोस्ट मास्टर के निर्देशन तथा निरीक्षण में चलता है। तार भेजने का कार्य भी पोस्ट ऑफिस से ही होता है। एक काउन्टर पर तार भेजे जाते हैं तथा बाहर से आया हुआ संदेश प्राप्त भी किया जाता है। टेलीफोन ऑपरेटर्स विभिन्न प्रकार की पूछताछ और शहर से बाहर की जाने वाली टेलीफोन से बातचीत का प्रबंध करते हैं। टेलीफोन एक्सचेन्ज तथा टेलीफोन लाइन्स का तथा टेलीफोन उपकरण को स्थापित करने का कार्य "टेलीकम्यूनीकेशन इंजीनियर" की देख रेख में होता है। टेलीफोन, बेतार से संबंधित यंत्रों, मशीनों के बनाने का कार्य भी "टेलीकम्यूनीकेशन इंजीनियर" (दूर संचार अभियंता) ही करते हैं।

संबद्ध क्रियाकलाप

विद्यार्थियों से बातचीत द्वारा यह जानने का प्रयास करें कि यातायात अथवा संचार के क्षेत्र में जाने के इच्छुक विद्यार्थियों को इन व्यवसायों की कितनी जानकारी है? उनकी उपलब्धियों व रुचियों को देखते हुए क्या उनका व्यावसायिक चयन उपयुक्त है?

व्यापार तथा वाणिज्य

हम अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ जैसे कलम, कॉपी, साबुन, तेल, गेहूँ आदि बाजार में दुकानों से खरीद लेते हैं। ये वस्तुएँ कारखानों तथा उत्पादन के स्थानों से प्राप्त होती हैं परंतु इनको सीधे उत्पादन के स्थान से नहीं प्राप्त किया जाता और न ऐसा संभव ही है क्योंकि उत्पादन के स्थान विभिन्न होने के कारण अलग-अलग स्थानों पर जाना कठिन होगा, जबकि एक दुकान पर कितनी ही वस्तुएँ एक साथ मिल सकती हैं। इसके अतिरिक्त हो सकता है कि उत्पादन के स्थान, किसी दूसरे शहर अथवा किसी अन्य प्रदेश में हों। दुकान से सामान खरीदने से हमारे समय में बहुत भारी बचत होती है। इन छोटी-छोटी दुकानों को रिटेल की दुकानें या परचून की दुकानें कहते हैं। रिटेल दुकानदार (अल्पशः विक्रेता) भी सीधे कारखानों तथा उत्पादन के स्थानों से सामान नहीं खरीदते। वे थोक व्यापारियों से सामान खरीदते हैं। उदाहरण के लिए देहली का सदर बाजार थोक व्यापारियों का बाजार है।

अल्पशः तथा थोक व्यापार में अनेक व्यवसाय आते हैं। सबसे पहले इसमें थोक व्यापारी का कार्य आता है। थोक विक्रेता कारखानों, औद्योगिक संस्थानों से अधिक संख्या में माल को लेकर अल्पशः विक्रेता को बेचते हैं और अल्पशः विक्रेता इस माल को दुकानों में लाकर ग्राहकों को देते हैं। विक्रेता अपनी वस्तुओं की अच्छी बिक्री के लिए ग्राहकों की पसंद को समझकर, उसी प्रकार की वस्तुएँ दिखाने का प्रयत्न करता है जिसमें उनकी रुचि हो। इसके साथ-साथ वह उनसे अच्छी तरह बातचीत भी करता है। ग्राहकों को दुकान की ओर आकर्षित करने के लिए वह अच्छी-अच्छी वस्तुओं को आकर्षक ढंग से शो-विन्डोस में सजाता है। ये विक्रेता औद्योगिक संस्थानों के लिए भी कार्य करते हैं। इन विक्रेताओं को अपने माल को

बेचने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमना पड़ता है, इन्हें "ट्रैवलिंग सेल्समैन" कहा जाता है। ये बड़ी औद्योगिक संस्थाओं, उत्पादन संस्थाओं द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। इन्हें किसी एक क्षेत्र में स्थित स्थानों का भ्रमण करने के लिए कहा जाता है। और वे उन स्थानों की दुकानों, छोटी औद्योगिक संस्थाओं के मैनेजरों या प्रधानों से मिलते हैं व उनके पास अपने उत्पादन के नमूनों को छोड़ जाते हैं ताकि वे उनकी वस्तुओं का प्रयोग करके यह जान सकें कि वस्तु वास्तव में अच्छी है या नहीं। इस प्रकार के विक्रेता कई प्रकार के होते हैं। जैसे दवाइयों को बेचने के लिए जो विक्रेता अस्पतालों, नर्सिंग घरों, दवा बेचने वाली दुकानों तथा डाक्टरों के पास जाते हैं उन्हें "मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव" कहा जाता है। ये प्रतिनिधि अपनी कंपनी की दवाइयों के नमूनों को डाक्टरों को दे देते हैं तथा उन्हें अपना उत्पाद खरीदने के लिए कहते हैं।

जिस प्रकार पेन, कॉपी, दवा इत्यादि दुकान से खरीदी जाती है उसी प्रकार उन वस्तुओं को जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं ले जाई जा सकतीं जैसे मकान, जमीन, बाग इत्यादि उन्हें खरीदने के लिए प्रायः व्यक्ति दलाल के पास जाते हैं। घर, फ्लैट इत्यादि खरीदने के लिए "हाउस ब्रोकर" होते हैं तथा जमीन खरीदने के लिए "एस्टेट ब्रोकर" होते हैं। इन दलालों को घर तथा जमीन के विक्रेता वस्तु को बिक जाने के बाद कुछ कमीशन दे देते हैं।

इन सब व्यवसायों के अतिरिक्त वाणिज्य के क्षेत्र में कुछ और भी व्यवसाय हैं जैसे जीवन बीमा एजेन्ट (लाइफ इन्श्योरेन्स एजेन्ट)। जिस प्रकार व्यक्ति के जीवन का बीमा (इन्श्योरेन्स) किया जाता है उसी प्रकार घर, कार, दुकानों तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुओं की भी इन्श्योरेन्स की जाती है। विद्यार्थियों को बताने के लिए कि इन्श्योरेन्स का क्या अर्थ है तथा इन्श्योरेन्स क्यों की जाती है, यह कहा जा सकता है कि इन्श्योरेन्स कंपनियाँ कुछ कीमत पर मकान, दुकान इत्यादि को सुरक्षित करती हैं। किसी दुर्घटना अर्थात घर में आग लग जाने पर इन्श्योरेन्स एजेन्ट जितना भी नुकसान हुआ हो उसके अनुसार क्षतिपूर्ण करने के लिए उतनी ही कीमत दे देते हैं। कोई भी इन्श्योरेन्स पॉलिसी खरीदने के लिए एक साथ कीमत नहीं देनी पड़ती। जैसे मान लो राम ने 20,000 रुपए का जीवन बीमा किया है तो उसे प्रत्येक माह कुछ रुपये देने पड़ते हैं। यदि बीमे के रुपए पूरे होने के पहले ही राम की मृत्यु हो जाती है तो पॉलिसी के सारे 20,000 रुपये उसके घर वालों को मिल जाएँगे। इसी प्रकार घर, दुकान तथा अन्य वस्तुओं का बीमा भी किया जाता है। बीमा एजेन्ट घर-घर जाकर प्रत्येक व्यक्ति को बीमा के लाभों को बताता है और पॉलिसी के खरीद लिए जाने के बाद जब भी कभी कोई दुर्घटना होती है तो वह ग्राहक को रुपये दिलाने में सहायता करता है।

वाणिज्य के क्षेत्र में एक और व्यवसाय है विज्ञापन कर्ता का। विज्ञापन का किसी भी उत्पाद

संबद्ध क्रियाकलाप

आप प्रायः दुकानों पर सामान खरीदने जाते हैं। कुछ दुकानदारों से बातचीत द्वारा जानने का प्रयत्न कीजिए कि वे अपनी दुकान का माल किस प्रकार तथा किन-किन व्यापारियों से प्राप्त करते हैं?

की बिक्री पर काफी प्रभाव पड़ता है। प्रायः आपने बाजार में आते-जाते दुकानों में, सड़कों पर बोर्ड पर लगे हुए तथा पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, कैलेन्डरों में तरह-तरह की वस्तुओं के विज्ञापन देखे होंगे। इनमें से कुछ विज्ञापन अत्यंत आकर्षक होते हैं। विज्ञापन व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करने के लिए किए जाते हैं ताकि देखने वाला व्यक्ति उसे पढ़ने को उत्सुक हो जाए और फिर वह जिस वस्तु का विज्ञापन है उसे खरीदने को इच्छुक हो जाए।

विज्ञापन कभी-कभी औद्योगिक एवं उत्पादन संस्थाओं द्वारा तैयार किए जाते हैं, परंतु प्रायः ये संस्थाएँ विज्ञापन का कार्य, विज्ञापन एजेंसियों को दे देती हैं, तथा विज्ञापनकर्ता कमर्शियल कलाकार, डिजाइनर इत्यादि मिलकर विज्ञापन तैयार करते हैं। ये एजेंसियाँ न केवल पत्र-पत्रिकाओं द्वारा. प्रचार करती हैं वरन सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन द्वारा भी अपने उत्पाद का प्रचार करती हैं।

किसी भी वस्तु को खरीदने के लिए रुपये की आवश्यकता होती है। अर्थात व्यापार में, वस्तु के आदान-प्रदान में, प्रतिदिन फल, सब्जी, अनाज, वस्त्र आदि खरीदने के लिए रुपये की आवश्यकता होती है। रुपये का आदान-प्रदान बहुत प्रकार से किया जाता है। बहुमूल्य वस्तुओं जैसे कार, जेवर, घर इत्यादि खरीदने के लिए प्रायः चेक दिए जाते हैं परंतु इसके लिए बैंक में एकाउंट होना आवश्यक है इससे जब भी हम किसी दूसरे शहर में किसी मित्र या संबंधी को रुपया भेजना चाहते हैं तो चेक द्वारा भेज सकते हैं। आजकल प्रायः सभी व्यक्ति अपनी आय का थोड़ा-सा भाग बैंक में जका करवा देते हैं जिससे कि उस पैसे पर उन्हें ब्याज मिल सके और आवश्यकता पड़ने पर वह उसे इस्तेमाल कर सकें। इसी प्रकार कुछ बैंक किसी व्यापार को प्रारंभ करने के लिए तथा किसी बहुमूल्य वस्तु को खरीदने के लिए रुपया उधार भी दे देते हैं। बैंक में ऊपर लिखे इन सभी कार्यों को करने के लिए बहुत से व्यक्ति

जरा सोचिए

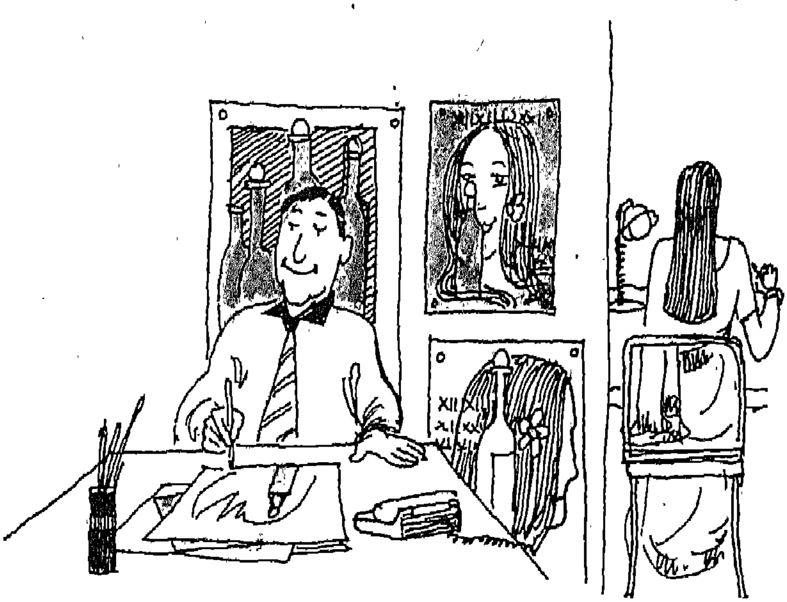
रेडियो व टेलीविजन पर आप सब बहुत से उत्पादों के विज्ञापन सुनते व देखते हैं। किस प्रकार के विज्ञापन आपका ध्यान अपनी ओर अधिक आकर्षित करते हैं? कौन-कौन सी बातें विज्ञापन को अधिक प्रभावकारी बनाती हैं?

संबद्ध क्रियाकलाप

विज्ञापन के क्षेत्र में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को कुछ आकर्षक लगने वाले विज्ञापनों के चित्र एकत्र करने के लिए कहें। प्रत्येक विज्ञापन के साथ कौन-कौन सी बातें उस विज्ञापन को प्रभावकारी बनाती हैं ये भी लिखने के लिए कहें।

कार्य करते हैं जिनमें सबसे प्रमुख काम "मैनेजर" का है। मैनेजर के निर्देशन और जानकारी के बिना बैंक की कोई भी कार्रवाई नहीं की जा सकती। इसके अतिरिक्त बैंक में कैशियर, एकाउंटेंट तथा अन्य क्लर्क होते हैं। जो रुपये-पैसे का लेखा रखते हैं, तथा रुपये के आदान-प्रदान में सहायता करते हैं। एकाउंटेंट का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह जो भी रुपया बैंक से बाहर जाता है तथा जमा कराया जाता है उनका लेखा करता है। एकाउंटेंट न केवल बैंकों द्वारा रखे जाते हैं अपितु बड़ी व्यापारिक, औद्योगिक संस्थाओं द्वारा भी रखे जाते हैं। बैंकों तथा औद्योगिक संस्थाओं के हिसाब-किताब का निरीक्षण करने वाले भी होते हैं जिन्हें ऑडीटर कहा जाता है। ये लेन-देन का कार्य ठीक हो रहा है या नहीं, यह देखने के लिए समय-समय पर हिसाब के रजिस्टरों का निरीक्षण करते हैं।

औद्योगिक उन्नति के लिए ये सभी व्यवसाय महत्वपूर्ण हैं। इन सभी व्यवसायों में लगे हुए व्यक्ति अपने सहयोग से वाणिज्य तथा व्यापार के क्षेत्र में अभिवृद्धि तथा विकास कर रहे हैं।



अभ्यास

शिक्षकों के लिए

1. उत्पादन तथा विक्रय से संबंधित कौन-कौन से व्यवसाय हैं?
2. "इन्श्योरेन्स" क्या है और क्यों की जाती है?
3. विज्ञापन क्यों तैयार किए जाते हैं?

विद्यार्थियों के लिए

1. अपने घर के पास के बैंक में जाकर वहाँ काम करने वाले विभिन्न व्यक्तियों के साथ बातचीत द्वारा उनके कार्य की जानकारी एकत्रित करिए।
2. बस, रेल, वायुयान, पोत आदि परिवहनों से संबंधित व्यवसायों के चित्र एकत्रित कर चार्ट बनाइए।

निर्माण-कार्य, व्यक्तिगत सेवा तथा मनोरंजन के व्यवसाय

उद्देश्य

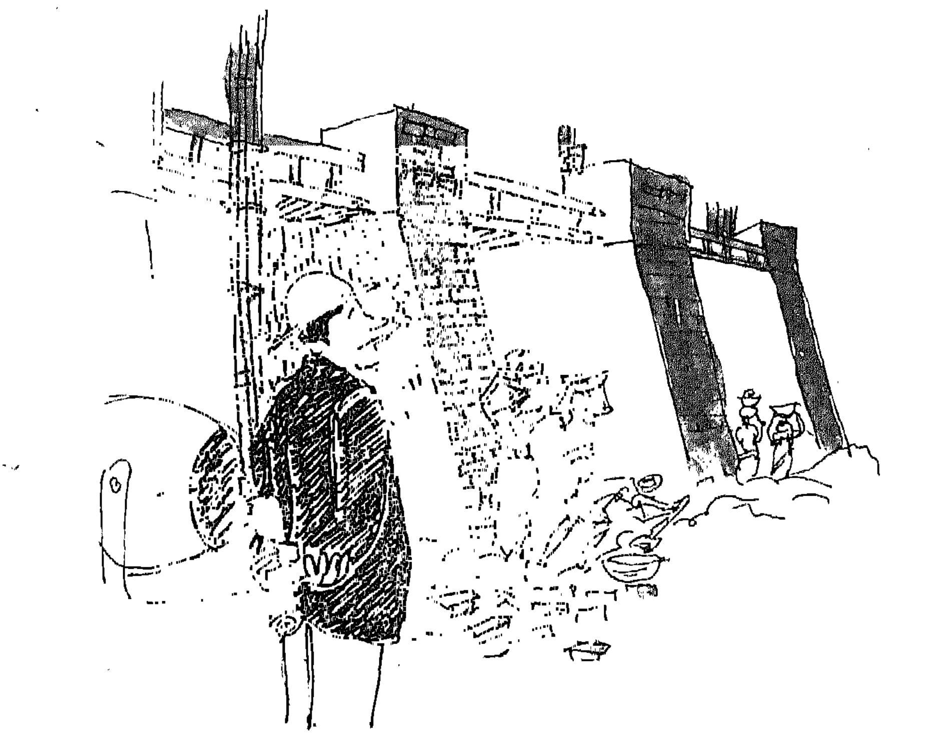
इस लेख को पढ़कर आप जान सकेंगे कि–

- निर्माण के क्षेत्र में कौन-कौन-से व्यवसाय हैं तथा विभिन्न वस्तुओं के निर्माण में कौन-कौन-से व्यक्ति कार्य करते हैं।
- व्यक्तिगत सेवा में लगे व्यक्ति किन कार्यों द्वारा हमारी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।
- मनोरंजन के क्षेत्र में कौन-कौन-से व्यवसाय हैं।

निर्माण-कार्य

प्रतिदिन ही आप किसी घर, इमारत अथवा भवन का निर्माण होते हुए देखते होंगे। आजकल तो बड़े-बड़े शहरों में ऊँची-ऊँची कई मंजिलों वाली इमारतें बनाई जा रही हैं। इन्हें देखकर प्राय: आश्चर्य होता है कि भला ये इतनी बड़ी-बड़ी इमारतें कैसे बनती हैं? हम इन भवनों के सामने कुछ देर रुककर वहाँ पर कार्य करने वालों की कुशलता पर आश्चर्य भी करते हैं। ये व्यक्ति निर्माण उद्‌योग से संबंधित व्यवसायों में कार्य करते हैं। इस उद्‌योग में न केवल व्यक्ति घरों व इमारतों का निर्माण करते हैं अपितु सड़कों, रेलवे लाइनों, पुलों तथा सुरंगों, टेलीफोन तथा टेलीग्राफ के खंभों की स्थापना का कार्य भी करते हैं। इसके अतिरिक्त नहरों, जलाशयों, बाँधों एवं कुओं का निर्माण भी इन्हीं के द्वारा किया जाता है। आपने भाखड़ा बाँध के विषय में सुना होगा। ये सभी व्यक्ति मुख्य इंजीनियर से लेकर मजदूर तक जिन्होंने इसके निर्माण में सहयोग दिया है वे सभी निर्माण उद्‌योग के अंतर्गत आते हैं।

इस उद्‌योग में सबसे महत्वपूर्ण व्यवसाय "सिविल इंजीनियर" का है। वही इन सभी निर्माण संबंधी कार्यों की योजना बनाता है, अन्य कारीगरों का निर्देशन करता है, तथा निरीक्षण भी करता है। भवन-निर्माण संबंधी कार्य प्रारंभ करने से पहले वह उस स्थान का निरीक्षण करता है, जहाँ पर निर्माण-कार्य होना है, उसके पश्चात् इमारत के रेखाचित्र का अध्ययन करता है, व्यय का हिसाब लगाता है, तथा इमारत में किस प्रकार की सामग्री की आवश्यकता होगी, यह भी देखता है। इसके पश्चात् जब निर्माण-कार्य हो रहा हो उस स्थान पर समय-समय पर जाकर कार्य-निरीक्षण करता है कि कार्य योजना के अनुसार हो रहा है या नहीं। वह ठेकेदार को विस्तार में आदेश समझाता रहता है। इस कार्य में ठेकेदार का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ठेकेदार ने यदि एक से अधिक इमारतों के निर्माण का कार्य ले रखा हो, तो वह इतने अधिक कार्य का अकेले निर्देशन नहीं कर पाता इसलिए वह अपनी सहायता के लिए "ओवरसियर" को रखता है। ओवरसियर के अधीनस्थ अन्य कई कारीगर होते हैं, जैसे "राजमिस्त्री" जो दीवारों, स्तंभों तथा इमारत के अन्य भागों को बनाता है।



ईंट रखने वाला सीमेंट और गारे से ईंट जोड़ता जाता है। "बढ़ई" मकानों के दरवाजे, खिड़कियाँ तथा अन्य लकड़ी का काम करता है। "नलकार" मकान में पानी के नल पाइप इत्यादि को फिट करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सिविल इंजीनियर, ठेकेदार, ओवरसियर तथा अन्य कई कारीगर वास्तविक निर्माण का कार्य करते हैं।

इन भवनों, इमारतों, पुलों इत्यादि के निर्माण के पहले उनके रेखाचित्र, डिजाइन तैयार किए जाते हैं। इन्हें बनाने वाले "वास्तुविद" (आर्किटेक्ट) तथा "ड्राफ्ट्समैन" कहलाते हैं। वास्तुविद सौन्दर्य, उपयोगिता तथा लागत को ध्यान में रखते हुए मकान का डिजाइन बनाता है। वह अपना कार्य ड्राफ्ट्समैन को समझा देता है, और ड्राफ्ट्समैन, वास्तुविद के निर्देशन में कार्य करता है।

जिस प्रकार भवनों व इमारतों के निर्माण के लिए वास्तुविद डिजाइन तैयार करते हैं, उसी प्रकार आधुनिक युग में शहर तथा नगरों के भी मानचित्र

संबद्ध क्रिया कलाप

विद्यालय के आसपास किसी नई बन रही इमारत के निर्माण-स्थल पर विद्यार्थियों को ले जाएँ जहाँ विद्यार्थी इमारत के विभिन्न पक्षों के निर्माण-कार्य में लगे हुए ठेकेदार, मिस्त्री, बढ़ई, मजदूर आदि के कार्य का अवलोकन करके तथा बातचीत द्वारा कार्य संबंधी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करें।

बनाए जाते हैं, ताकि मकान, सड़कें इत्यादि खुले हों। उदाहरण के लिए नए मोहल्ले और पुराने मोहल्ले में तुलना कीजिए। किसी भी नए नगर के बनने के पहले उसका मानचित्र तैयार किया जाता है जैसे कि चंडीगढ़ शहर का निर्माण मानचित्र तैयार करने के पश्चात् ही हुआ। इस कार्य को करने वाले को "टाउन प्लानर" कहा जाता है। अधिकतर शहर जो बहुत पुराने बने हुए हैं, वहाँ आपने देखा होगा कि कुछ स्थानों में बहुत घनी आबादी हो गई है, तथा असंख्य मकानों के निर्माण हो जाने के कारण सड़कें बहुत तंग हो गई हैं जिससे कि आवागमन में असुविधा हो गई है। घनता के कारण अस्वच्छता

टाउन तथा कंट्री प्लानर अपने कार्य को अच्छी तरह करने के लिए "सर्वेक्षक" तथा "ड्राफ्ट्समैन" की सहायता लेते हैं। सर्वेक्षक जिस स्थान पर निर्माण-कार्य करना हो, वहाँ की भूमि के आकार, बनावट इत्यादि का सर्वेक्षण करते हैं।

व्यक्तिगत सेवा

कुछ व्यक्ति ऐसे व्यवसायों में लगे होते हैं जिनमें वह अन्य व्यक्तियों की सेवा द्वारा व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। "रसोइया" भोजन बनाकर देता है, "धोबी" वस्त्रों की धुलाई करते हैं, "बैरा" होटल व रेस्तरां में सेवा-कार्य करता है।

संबद्ध क्रिया कलाप

रेखाचित्र बनाने में कुशल विद्यार्थी विद्यालय का मानचित्र बनाएँ। इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले विद्यार्थी किसी वास्तुविद ड्राफ्ट्समैन अथवा सिविल इंजीनियर से बातचीत द्वारा इन व्यवसायों की कार्य व प्रशिक्षण संबंधी जानकारी प्राप्त करें।

भी बढ़ती जा रही है तथा पार्क एवं खुले स्थान जो कि स्वच्छ वायु के लिए आवश्यक हैं बहुत कम रह गए हैं। इसलिए अब जहाँ कहीं भी नगरों में निर्माण-कार्य हो रहा है उसके लिए टाउन प्लानर की सहायता ली जाती है। जिस प्रकार शहरों के विस्तरण के लिए टाउन प्लानर होते हैं उसी प्रकार गाँवों के विस्तरण तथा विकास के लिए "कंट्री प्लानर" होतें हैं। प्रायः टाउन प्लानर तथा कंट्री प्लानर एक दूसरे की सहायता से कार्य करते हैं।



बाल काटने और सजाने वाले "हेयर ड्रेसर" और नाई तथा घर में अन्य कार्य करने वाले "नौकर और आया" आदि भी होते हैं। हमारे देश में ये सभी कार्यकर्ता कम शिक्षा प्राप्त होते हैं इसलिए ये प्रारम्भ में कम वेतन पर इन व्यवसायों द्वारा अपनी जीविका चलाते हैं। आजकल बहुत से युवक/युवतियाँ इन क्षेत्रों में दसवीं या बारहवीं कक्षा के बाद विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं और कई अपना खुद का व्यवसाय खोल लेते हैं। कार्य में कुशल और अनुभवी व्यक्ति इन व्यवसायों में भी बहुत अधिक धन और प्रतिष्ठा कमा लेते हैं जैसे बड़े होटलों में भोजन पकाने वाले, ड्राईक्लीनर की दुकान वाले, अपना होटल व रेस्तरां चलाने वाले व्यक्ति तथा बालों व रूप-सज्जा का कार्य करने वाली "ब्यूटीशियन" भी शादियों, पार्टियों तथा अन्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों में रूप-सज्जा का कार्य करती हैं।

व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुछ अन्य व्यवसाय भी हैं जिनमें शिक्षा एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। विमान परिचारिका विमान में बैठे हुए यात्रियों के आराम और सुविधा का ख्याल रखती है। वे उन्हें भोजन देने, पत्र-पत्रिकाएँ देने तथा प्राथमिक चिकित्सा देने का कार्य भी करती हैं। जब ये सभी कार्य किसी पुरुष के द्वारा किए जाते हैं तो उसे परिचारक (स्टीवर्ड) कहा जाता है। इसी प्रकार छात्रावास में रहने वाले व्यक्तियों की देखभाल के लिए एक "वार्डन" या सुपरिन्टेंडेंट होता है। बड़े होटलों तथा यात्री निवासों में "हाऊस कीपर" मेहमानों की सुख-सुविधा, आराम और स्वच्छता का निरीक्षण करते हैं।

मनोरंजन

दिनभर कार्य करने के पश्चात् मनोरंजन की आवश्यकता होती है। मनोरंजन से संबंधित अनेकों क्षेत्रों में बहुत से व्यक्ति कार्य करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के लिए मनोरंजन का अर्थ भिन्न होता है। कोई खेलकूद द्वारा मनोरंजन करता है, कोई संगीत द्वारा, कोई नाटक द्वारा तथा कोई पुस्तक को पढ़कर मनोरंजन करता है। बहुत से व्यक्ति मनोरंजन के कार्यों में दक्षता प्राप्त कर उसके प्रदर्शन को अपना व्यवसाय बना लेते हैं।

खेलकूद के क्षेत्र में खिलाड़ी होते हैं, जो किसी एक खेल में विशेष योग्यता और प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी कला का प्रदर्शन कर दूसरों का मनोरंजन करते हैं। इनके अतिरिक्त खेलों के प्रशिक्षक और खेल में दोनों टीमों के खिलाड़ियों की जीत हार का निर्णय करने वाले निर्णायक (एम्पायर) अथवा रेफ्री होते हैं जो यह देखते हैं कि खेल नियम के अनुसार हो रहा है या नहीं।

सिनेमा, टेलीविजन, रेडियो के क्षेत्र में संगीतज्ञ, नर्तक, वादक, अभिनेता, नाटककार, कहानी लेखक, एवं नृत्य-शिक्षक होते हैं तथा इन कार्यों के निर्देशक भी होते हैं जैसे फिल्म अथवा नाटक के निर्देशक तथा अभिनेता/अभिनेत्री के अभिनय का निर्देशन

जरा सोचिए

आपके घर व विद्यालय में व्यक्तिगत सेवा कार्यों में कौन-कौन व्यक्ति लगे हुए हैं? इन व्यवसायों में कार्य-परिस्थिति में सुधार के लिए आप क्या-क्या सुझाव दे सकते हैं?

करने वाले। एक कैमरामैन होता है जो फोटोग्राफ खींचता है और फिल्म की रील तैयार करता है। सिनेमाघरों तथा नाटकघरों में टिकट देने वाले तथा गेट कीपर भी होते हैं, जो दर्शकों को उनके स्थान तक ले जाते हैं।

सर्कस आदि खेलों में पशुओं का प्रशिक्षण करने वाले होते हैं। वे शेर, भालू चीते, हाथी जैसे पशुओं को प्रशिक्षित कर उन्हें तरह-तरह की क्रीड़ाएँ करना सिखाते हैं। यहाँ पर रस्सी पर चलने वाले, आग में कूदने वाले, जोकर आदि कई व्यक्ति होते हैं जो अपने कारनामों द्वारा जनता को चकित कर देते हैं। इसी प्रकार बाजीगर तथा जादूगर भी होते हैं जो किसी समुदाय के सम्मुख चातुर्य और कौशल दिखाकर उन्हें आश्चर्यचकित करते हैं।

कठपुतली का नृत्य दिखाने वाले रंग बिरंगी कठपुतलियाँ बनाकर गीतों के साथ उनका खेल दिखाकर दर्शकों का मनोरंजन करते हैं।

इन सभी व्यवसायों में कार्य करने वाले अपनी कला और योग्यता से जनता के मनोरंजन में अपना योग देते हैं।

संबद्ध क्रियाकलाप

क्या तुम नृत्य, संगीत, कहानी लेखन, अथवा अभिनय में अत्यधिक रुचि रखते हो? इनमें से किसी भी क्षेत्र में दूसरे व्यक्ति क्या तुम्हारी उपलब्धियों की अत्यधिक प्रशंसा करते हैं? इस क्षेत्र में किसी व्यवसाय को अपनाने के इच्छुक छात्र किसी परिचित व्यक्ति से शिक्षा व प्रशिक्षण संबंधी जानकारी प्राप्त करें।

अभ्यास

1. निर्माण-कार्य में लगे व्यक्ति घरों व इमारतों के साथ-साथ और किस प्रकार का निर्माण-कार्य करते हैं? इस क्षेत्र के प्रमुख व्यवसाय क्या-क्या हैं?
2. व्यक्तिगत सेवा में लगे व्यक्ति किस प्रकार के कार्य करते हैं?
3. मनोरंजन से संबंधित अनेक क्षेत्रों में व्यक्ति क्या-क्या कार्य करते हैं?

परिशिष्ट

विद्यार्थी सूचना प्रश्नावली

इस प्रपत्र का उद्देश्य आपके बारे में जानकारी प्राप्त करना है ताकि हम आपकी, अपने को समझने, अपनी समस्याओं का हल ढूँढने तथा शैक्षिक व व्यावसायिक योजना बनाने में, अच्छी प्रकार सहायता कर सकें।

नाम .... लिंग ....

कक्षा .... रोल नंबर ....

विद्यालय .... वर्ग ....

जन्म-तिथि ....

वर्तमान विद्यालय में प्रवेश की तिथि ....

जन्म-स्थान ....

पिता का नाम ....

क्या आप अपने माता-पिता के साथ रह रहे हैं? ....

यदि नहीं तो अपने अभिभावक का नाम तथा उनसे अपना संबंध लिखिए :

....

....

आपके माता-पिता/अभिभावक का क्या व्यवसाय है? ....

आपके कितने भाई/बहन हैं? ....

इस समय आप किन विषयों का अध्ययन कर रहे हैं? ....

किन्हीं एक या दो विषयों के नाम लिखिए जिन्हें आप सबसे अधिक पसंद करते हैं

....

आप किन सह-पाठ्य कार्यकलापों जैसे खेलकूद, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि में भाग लेते हैं

....

अवकाश के समय आप क्या करते हैं (कोई रुचियाँ यदि हों तो लिखें)

....

यदि आपको अपनी रुचि के क्रियाकलापों में भाग लेने में कोई कठिनाई होती हो तो नीचे लिखें

....

आपने अपने भविष्य के लिए किस प्रकार की शैक्षिक योजना बनाई है?

....

....

....

....

पढ़ाई के बाद आप किस व्यवसाय में प्रवेश करना चाहते हैं? अपनी पसन्द के अनुसार किन्हीं तीन व्यवसायों के नाम लिखिए।

....

....

....

....

....

परिवार संबंधी सूचना प्रश्नावली

विद्यार्थी का नाम...

कक्षा.. वर्ग ....

घर का पता...

पिता का नाम...जीवित/अजीवित.................................

अभिभावक का नाम..विद्यार्थी से संबंध.............................

पिता के बारे में

– शिक्षा और प्रशिक्षण

– व्यवसाय और पद

– संस्थान जहाँ वह कार्य करते हैं/थे

– वेतन (मय भत्ता) प्रतिमास

– कार्यालय का पता

– टेलीफोन नंबर

माता के बारे में

– शिक्षा और प्रशिक्षण

– व्यवसाय और पद

– संस्था जहाँ वह कार्य करती हैं/थीं

– वेतन (मय भत्ता) प्रतिमास

परिवार की कुल मासिक आय

आश्रितों की संख्या

विद्यार्थी के भाई और बहनें

	आयु	लिंग	शिक्षा	व्यवसाय	क्या परिवार के साथ रह रहे हैं
1.					
2.					
3.					
4.					

और कोई संबंधी जो स्थायी रूप से परिवार के साथ रह रहा हो (कृपया हरेक का विद्यार्थी से संबंध लिखें, जैसे दादा, चाचा आदि)

विद्यार्थी के स्वास्थ्य से संबंधित कोई समस्या

अवकाश के समय विद्यार्थी के क्रिया-कलाप

प्रायः कितने घंटे विद्यार्थी घर में पढ़ता है

विद्यार्थी का घर में कोई विशेष उल्लेखनीय व्यवहार

विद्यार्थी द्वारा किसी विशेष योग्यता, गुण अथवा रुचि का प्रदर्शन

विद्यार्थी से संबंधित कोई और सूचना

माता-पिता/अभिभावक की विद्यार्थी के भविष्य से संबंधित शैक्षिक एवं व्यावसायिक योजना

यदि आवश्यकता पड़े तो क्या माता-पिता/अभिभावक स्वयं भेंट के लिये आ सकते हैं?

हाँ/ नहीं

उस व्यक्ति के हस्ताक्षर जिसने यह फार्म भरा ....

व्यक्ति का नाम ....

विद्यार्थी से संबंध ....

पता ....

....

....

दिनांक ....

संचयी अभिलेख पत्र

(प्रतिरूप)

विद्यालय का नाम एवं पता ....

....

नाम ....

पता ....

कक्षा .... वर्ग ....

(1) वैयक्तिक दित्ता

नाम .... पिता का नाम ....

जन्म-तिथि .... आयु ....

वर्तमान पता ....

....

घर में बोली जाने वाली भाषा .... धर्म ....

अन्य ज्ञात भाषाएँ ....

(2) पिछले विद्यालय में उपस्थिति

विद्यालय का नाम	वर्ग से .... तक	वर्ष से .... तक	परिवर्तन के कारण
1.			
2.			
3.			

(3) पारिवारिक पृष्ठभूमि

परिवार का आकार .... परिवार में स्थिति ....

आवास किराये का .... निजी ....

कमरों की संख्या ....

पैतृक पर्यवेक्षण .... घर में अध्ययन के लिए सुविधाएँ ....

माता-पिता का विवरण

छात्र के साथ संबंध नाम एवं पता उम्र शैक्षिक प्रशिक्षण व्यवसाय आयु

पिता..

माता..

अभिभावक..

बहनें..

उनकी वैवाहिक स्थिति विवाहित/अविवाहित...

भाई...

भाइयों की वैवाहिक स्थिति विवाहित/अविवाहित..

परिवार में अन्य सदस्यों के नाम (जो साथ रह रहे हों)

1.

2.

(4) शैक्षिक उपलब्धियाँ

क्रम	वर्ष	वर्ग	विषय (केवल ऐच्छिक)	उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण/ प्रोन्नति	स्थान यदि कोई हो
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					
6.					
7.					
8.					

(5) स्वास्थ्य एवं शारीरिक गठन

1. कद
2. वजन
3. छाती सामान्य फुलाने पर
4. आँखें दायीं बायीं
5. कान, नाक एवं गला
6. फेफड़ा
7. विगत वर्षों में कोई घातक बीमारी
8. कोई रोग
9. कोई विकलांगता
   अस्थायी या स्थायी
   कोई अन्य समस्या

(6) व्यक्तिगत मापन

1. अंतर्मुखी/ उभयमुखी/ बहिर्मुखी
2. माता-पिता के साथ व्यवहार : आक्रामक/ विनम्र/ पसंद
3. मित्र समूहों के साथ व्यवहार : नेतृत्व/ सहयोगी/ अनुगामी
4. शिक्षकों के साथ व्यवहार : सुझाव ग्राह्यता/ तर्कपूर्ण/ विचार विमर्श करने वाला/ निष्क्रिय
5. व्यक्तित्व : व्यवहार कुशल/अल्प संतुलित/ सांवेगिक
6. उपस्थिति : अति नियमित/ प्रायः नियमित/अनियमित
7. आज्ञापालन : सर्वदा आज्ञाकारी/ कभी-कभी आज्ञाकारी/धृष्ट
8. जिम्मेदारी : अति जिम्मेदार/ अल्प जिम्मेदार/गैर जिम्मेदार
9. परिश्रम : अति परिश्रमी/ सामान्य/ लापरवाह
10. गृह-कार्य : नियमित/ अनियमित/ गृह कार्य न करने वाला
11. आत्मविश्वास : सर्वदा/ प्रायः/ कदापि नहीं/ अति-विश्वासी
12. सहयोग : हमेशा/ बहुधा/ कभी-कभी/ कभी नहीं

(7) मनोवैज्ञानिक परीक्षण दित्ता

क्रम संख्या	वर्ष	वर्ग	परीक्षणों का नाम	प्राप्तांक एवं श्रेणी
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				
6.				

(8) पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ

क्रम संख्या	नाम	वर्ष एवं वर्ग	अभ्युक्ति
1.	खेलकूद		
2.	नाटकीय		
3.	साहित्यिक		
4.	समाजसेवा		
5.	व्यायाम		
6.	एन.सी.सी.		
7.	और कोई क्रिया-कलाप		

(9) विद्यालय के बाहर के क्रिया-कलाप

1. कार्यानुभव
2. रुचियाँ

(10) भविष्य की योजना

1. शैक्षिक
2. व्यावसायिक

परामर्शदाता तिथि प्रधानाध्यापक

कार्यदल विशेषज्ञों की सूची

1. डॉ. मोहम्मद हुसैन
   डिप्टी डायरेक्टर
   राजकीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
   सहेली मार्ग
   उदयपुर (राज.)
2. कु. प्रितपाल कौर बैदवान,
   गाइडेंस काउंसलर
   राजकीय शैक्षिक संस्थान
   सैक्टर-32
   चंडीगढ़
3. डॉ.आर.पी. श्रीवास्तव
   प्रवाचक (शिक्षा)
   जामिया मिलिया इस्लामिया
   बी-147, अमर कालोनी
   लाजपत नगर
   नई दिल्ली
4. डॉ. श्रीमती सी.एम. मल्होत्रा
   समाजसेविका
   एयरफोर्स गोल्डन जुबली इन्स्टीट्यूट
   सुब्रतो पार्क
   दिल्ली कैन्ट
5. श्री.सी.जे. दोशी
   वोकेशनल गाइडेंस ऑफिसर (अँवकाश प्राप्त)
   इन्स्टीट्यूट ऑफ वोकेश्नल गाइडेंस
   नारायण पार्क
   अहमदाबाद
6. श्रीमती नलिनी जुनेजा
   रिसर्च एसोसियेट
   राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान
   नई दिल्ली

क्रम र
1.
2.
3.
4.
5.
6.
7.

1. क
2. र्ग

1. शै
2. व्य

परामर्श

7. कु. नीलम
असिस्टैंट (गाइडैंस)
राजकीय शिक्षा संस्थान
चंडीगढ़

8. प्रो. के.जी. देसाई
रिटायर्ड प्रोफेसर, गुजरात युनिवर्सिटी
3, हिन्दू कॉलोनी
अहमदाबाद
गुजरात

9. डॉ. कुलदीप कुमार
योजना, प्रोग्रामिंग अनुवीक्षण एवं मूल्यांकन प्रभाग
नई दिल्ली

10. डा. श्रीमती आशा भटनागर
शैक्षिक मनोविज्ञान निर्देशन एवं परामर्श विभाग
नई दिल्ली